आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 मई, 2023
डाक प्रेषण तिथि 10 मई, 2023

वर्ष : 81 अंक : 05
ज्येष्ठ, 2080 मूल्य : ₹ 10
पृष्ठ संख्या 104

डाक पंजीयन संख्या Jaipur City/413/2021-23
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

मई, 2023

Website : www.jinwani.in

धर्मपत्नी उसे कहते हैं, जो घर को स्वर्ग बनाने वाली होती है,
धर्म में सहायक होती है, पति को धर्म से जोड़ने वाली होती है ।

– आचार्यश्री हीरा

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित कथा साहित्य

ज्ञातासूत्र की कथाएँ, मूल्य 20/-, सम्पादक : श्री दीपचन्द संचेती

पुस्तक में ज्ञाताधर्मकथासूत्र की आगमिक एवं प्रेरणादायी कथाओं का संकलन है। सूत्र की 19 कथाओं का सम्पादन करके सरल भाषा में प्रस्तुत कर उपसंहार में कथा से प्राप्त होने वाली शिक्षाओं का दिग्दर्शन कराया गया है।

कुलक कथाएँ, मूल्य 50/-, आचार्यश्री हस्ती

दान, शील, तप और भाव से सम्बन्धित प्राकृत गाथाओं का संकलन कुलक संग्रह में किया गया है। इन गाथाओं में निर्दिष्ट 48 कथानकों का हिन्दी में प्रस्तुतीकरण आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. द्वारा हुआ है। इन कथाओं के माध्यम से दान, शील, तप और भाव का महत्त्व सहज ही हृदयंगम हो जाता है।

प्रेरक कथाएँ, मूल्य 25/-, संकलन : श्री गौतमचन्द जैन

पुस्तक में 64 लघु कहानियाँ सन्दर्भित गाथा/श्लोक तथा मुक्तक के साथ प्रकशित की गई हैं। प्रत्येक कहानी के अन्त में कहानी से प्राप्त होने वाली शिक्षा का दिग्दर्शन कराया गया है।

बोधकथाएँ, मूल्य 40/- संकलन : श्री सम्पतराज चौधरी

पुस्तक में सभी के लिए अत्यन्त उपयोगी एवं जीवन-निर्माण करने वाली 101 लघु कथाओं का संकलन है। जीवन से जुड़ी हुई ये कहानियाँ मानव जीवन में नैतिकता, प्रामाणिकता, परोपकार, क्षमाशीलता, सहनशीलता, करुणा, श्रमशीलता, भूल-सुधार आदि जीवन मूल्यों का सञ्चार करती हैं।

हमारे जीवन की नई कहानियाँ, मूल्य 40/- लेखिका श्रीमती कमला हनवन्तमल सुराणा

पुस्तक में वर्तमान परिप्रेक्ष्य में युवापीढ़ी को दिशाबोध प्रदान कर जीवन-शैली में परिवर्तन हेतु प्रेरित करने वाली 18 कहानियाँ समावेशित हैं। ये कहानियाँ लेखिका द्वारा अपने अध्ययन, दीर्घकालिक अनुभव एवं नई पीढ़ी को निरीक्षण कर उन्हें नयी दृष्टि प्रदान करने हेतु रची गई है।

धर्म-कथा गीत, मूल्य 50/- रचयिता : आचार्यश्री हस्ती, सम्पादन : श्री सम्पतराज चौधरी

इसमें गुरु हस्ती विरचित आठ कथा गीत हैं, जिनका विस्तृत विवेचन चौधरी साहब द्वारा किया गया है। आगमिक ग्रन्थों से नमि राजर्षि, हरिकेशबल मुनि, भृगु-पुरोहित, राजर्षि संयति, जयघोष, आर्यप्रभव आदि कुछ अमर गाथाओं को लेकर उनका आज की भाषा-शैली में काव्य मय रूपान्तरण किया गया है।

वीर गुण गौरव गाथा, मूल्य 75/-, रचयिता आचार्यश्री हस्ती, सम्पादन श्री सम्पतराज चौधरी

पुस्तक में भगवान महावीर के जीवन की काव्यमय प्रस्तुति पाँच सर्गों में हुई है, जिनमें पूर्व भव, बाल्यकाल एवं गृहस्थ जीवन, साधना काल, कैवल्य काल तथा परिनिर्वाण सम्मिलित हैं। इस कृति के अध्ययन से पाठक भगवान महावीर के जीवन एवं उनके प्रमुख उपदेशों से परिचित हो सकेंगे।

महामुनि स्थूलभद्र, मूल्य 50/-, रचयिता आचार्यश्री हस्ती, सम्पादन श्री सम्पतराज चौधरी

आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. ने आर्य स्थूलभद्र के चरित्र की परम्परागत कथा सूत्र के आधार पर प्राचीन ढालों में रचना की है। इसमें कथाकाव्य के साथ-साथ श्री सम्पतराजजी चौधरी ने सुन्दर, सुबोध एवं सहज भाषा में विवेचन प्रस्तुत किया है जो पाठकों में निरन्तर जिज्ञासा और आद्योपान्त पठन की रुचि बनाए रखती है।

अंक सौजन्य

श्री महावीराय नमः
श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः

॥ जय गुरु हीरा॥ ॥ जय गुरु महेन्द्र॥ ॥ जय गुरु मान॥

जिस धन और साधन से जीवन सुधरे, वास्तव में वही धन और साधन उत्तम है।
–आचार्यश्री हस्ती

ज्ञान के बगीचे में स्वाध्याय के माध्यम से, सत्संग के माध्यम से, मन में दया-दान के भाव उपजाने चाहिए, जिससे जीवन ऊँचा उठे। **–आचार्यश्री हीरा**

जिस भावना से आपने पूर्व में दिया है, वैसा ही आज आपको मिला है। जैसा आप आज देंगें, वैसा ही आपको आने वाले भविष्य में मिलेगा। **–भावी आचार्यश्री महेन्द्र**

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा., उपाध्याय पण्डितरत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का पावन गुण-स्मरण। पूज्य आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा., भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. एवं समस्त सन्त-सती मण्डल के श्री चरणों में हमारे परिवार का कोटि-कोटि वन्दन-नमन।

सभी जिनवाणी पाठकों को जय जिनेन्द्र!

स्व. श्री घीसुलालजी बाघमार

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

स्व. श्रीमती उगमाबाईजी बाघमार

:: नमनकर्त्ता ::

गणपतराज-स्व. श्रीमती प्रमिला देवी बाघमार
हेमन्त कुमार-शिल्पा बाघमार, उपेन्द्र कुमार-सलोनी बाघमार
यतन, खुशी, विहाना एवं त्रिशला बाघमार

घीसुलाल बाघमार एण्ड सन्स, चेन्नई
U. K. B. Marketing, Coimbatore

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

ISSN 2249 - 2011 हिन्दी–मासिक

जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

卐 संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
प्लॉट नं. 2, नेहरुपार्क, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763
E-mail : absjrhssangh@gmail.com

卐 संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक
अशोककुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182, के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, 2705088
जिनवाणी वेबसाइट- www.jinwani.in

卐 प्रधान सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

卐 सह–सम्पादक
नौरतनमल मेहता, जोधपुर
त्रिलोकचन्द जैन, जयपुर
मनोज कुमार जैन, जयपुर

卐 सम्पादकीय कार्यालय
ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.)
फोन : 0141-2705088
E-mail : editorjinwani@gmail.com / editorjinvani@gmail.com

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2021-23
WPP Licence No. JaipurCity-WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

अह पन्नरसहिं ठाणेहिं,
सुविणीए त्ति वुच्चइ।
नीयावत्ती अचवले,
अमाई अकुऊहले।।

-उत्तराध्ययनसूत्र, 11.10

पन्द्रह सद्गुण के धारण से,
सुविनीत मनुज कहलाता है।
जो नम्र अचञ्चल कपटी न,
मन में न कुतूहल लाता है।।

मई 2023
वीर निर्वाण सम्वत्, 2549
ज्येष्ठ, 2080

वर्ष 81 अंक 5

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.	संरक्षक सदस्यता : 11000/-
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 8000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/सहयोग राशि ``JINWANI'' बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 IFSC No. SBIN 0031843 में NEFT/RTGS से जमा कराकर जमापर्ची के साथ पेन नं. भी (काउन्टर-प्रति) श्री अनिलजी जैन के व्हाट्स एप्प नं. 9314635755 पर भेजें।

जिनवाणी में प्रदत्त सहयोग राशि पर आयकर में 80G की छूट उपलब्ध है।

मुद्रक : डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-4043938

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	जीवन-निर्माणकारी संस्थाएँ	–डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	–डॉ. धर्मचन्द जैन	11
विचार-वारिधि-	सद्गुणवर्धक विचार	–आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	13
प्रवचन-	शील-पालन की महिमा	–आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	14
	मेरे जीवन के सर्वस्व गुरु हीरा	–भावीआचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.	18
	साता-सुख की आकांक्षा रखना भोग है	–तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	21
	भक्ति में होती है शक्ति	–श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.	26
	अन्त:प्रेरणा जगाएँ	–श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.	29
शोधालेख-	संस्कृत साहित्य के अध्ययन में प्राकृत भाषा के प्रशिक्षण की प्रासङ्गिकता	–डॉ. सुषमा सिंघवी	33
मन्थन-	ब्रह्मचर्य व्रत के अतिचार : एक विमर्श	–डॉ. दिलीप धींग	37
English-section	**Impressions of Anupreksha in Jaina Didactic Stories**	–*Dr. Priyadarshana Jain*	43
आचार्यपद दिवस-	आचार्यश्री हीरा के प्रवचनों में निहित बोधपरक सुभाषित	–श्री त्रिलोकचन्द जैन	50
49वाँ दीक्षा दिवस-	गुणनिधि भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.	–श्रीमती अंशु संजय सुराणा	53
चिन्तन-	कुछ विचारणीय बिन्दु	–डॉ. अनिल कुमार जैन	58
अध्यात्म-	क्षणभंगुर जीवन में अचाह बनें	–डॉ. एन. के. खींचा	61
काव्य-	इस जीवन का विश्वास कहाँ	–श्री तरुण बोहरा 'तीरथ'	63
तत्त्व-चर्चा-	आओ मिलकर कर्मों को समझें (27)	–श्री धर्मचन्द जैन	64
संस्मरण-	गुरुदेव की कृपापूर्ण मांगलिक	–श्रीमती विजया मल्हारा	67
गीत/कविता-	मम मनोरथ	–श्री महावीर एम. गुलेच्छा	17
	होनहार एवं विश्वास	–श्री गणपत लाल जैन	20
	गुरुवर के आचार का हो गान	–श्री धीरज जैन	25
	अक्षय तृतीया	–श्री मनमोहन बाफना	28
	जब से गुरु चरणों में आया	–श्रीमती शिपिका जैन	52
	नहीं हो गर विनय घट में	–श्री मोहन कोठारी 'विनर'	52
	प्रमुदित मन से संसार-सागर पार करें	–श्री देवेन्द्रनाथ मोदी	57
	प्रार्थना के स्वर	–डॉ. रमेश 'मयंक'	60
	नवकार प्रार्थना	–श्री लक्ष्य जैन	66
	पञ्चमहाव्रत	–श्रीमती सुशीला भण्डारी	68
	महामन्दिर रा जाया जनमिया	–श्री हस्तीमल गोलेच्छा	68
विचार/चिन्तन-	यूँ ही चला चल राही	–श्री जयदीप ढड्ढा	12
	लोभ को रोकें	–श्री हीरालाल ओसवाल (जैन)	40
	धर्म से जुड़ाव कैसे हो?	–श्री विजेन्द्र जैन	49
	क्या हमें आत्मविश्वास है	–श्री श्रेयांस कर्णावट	71
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	–श्री गौत्तमचन्द जैन	70
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	72
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	90
बाल-जिनवाणी -	विभिन्न आलेख/रचनाएँ	–विभिन्न लेखक	91

10 मई 2023
जिनवाणी 7
ISSN 2249-2011

सम्पादकीय

जीवन-निर्माणकारी संस्थाएँ

डॉ. धर्मचन्द जैन

अध्यात्म योगी, युगमनीषी, वचनसिद्ध, दृष्टिसम्पन्न पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. सर्वहितचिन्तक एवं महान् साधक सन्त थे। आत्म-साधना में अप्रमत्त रहने के साथ संघ, समाज एवं मानव जाति का विकास किस प्रकार हो, इसका भी सत्चिन्तन उनके पावन चित्त में चलता रहता था। इस वर्ष वैशाख शुक्ला अष्टमी, 28 अप्रेल को उनकी 32वीं पुण्य तिथि पर उनका पावन-स्मरण मन को मुदित करता है। उनके उपकारों के प्रति हमें कृतज्ञ होना चाहिए।

पूज्यश्री ने सामायिक और स्वाध्याय से सहस्रों नर-नारियों को जोड़ा तथा उनके भीतर ज्ञान का प्रकाश प्रदीप्त किया, ताकि वे स्वयं स्वाध्याय करके अपने जीवन को भावी दिशा प्रदान कर सकें। उन्होंने जन-जन के अशान्त चित्त को शान्त बनाने के लिए उन्हें सामायिक की साधना में प्रवृत्त किया। मन को शान्त, एकाग्र एवं शुभ भाव की ओर मोड़ने में सामायिक-साधना अमोघ उपाय के रूप में प्रतिष्ठित हुई। हिंसा, झूठ, चोरी आदि पापों से रहित होकर किस प्रकार एक मुहूर्त्त तक अपने चित्त को आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान से धर्मध्यान में प्रवृत्त किया जा सकता है, इसके लिए सामायिक साधना का स्वरूप समझाया। स्वाध्याय और सामायिक के सम्बन्ध में अनेक गीतों की रचना की। उन्होंने फरमाया कि जीवन को बेहतर बनाना है, कषायों के मालिन्य से रहित करना है, आत्मशक्ति में अभिवृद्धि करनी है, समता के रस का पान करना है तथा व्यवहार में भेदभाव की नीति को छोड़कर सबके प्रति आत्मीयता का विस्तार करना है तो सामायिक-साधना आवश्यक है। सामायिक में हिंसा आदि समस्त पापों से विरति होती है। क्रोधादि कषायों पर भी विजय प्राप्त करने का यह साधन है। स्वाध्याय से विचार की शुद्धि होती है। गुरुदेव ने फरमाया-

अज्ञान हृदय को धोकर के उज्ज्वल हो जायेंगे।
हम करके नित स्वाध्याय ज्ञान की ज्योति जगायेंगे।

स्वाध्याय से अन्तर्हृदय में ज्ञान प्रकाशित होता है जिससे विचारों की शुद्धि होती है। व्यर्थ-चिन्तन एवं व्यर्थ-चर्चा से मुक्ति मिलती है। पूज्य आचार्यप्रवर ने जैन-अजैन लाखों लोगों को व्यसनमुक्त बनाया। जुआ, शराब, बीड़ी, सिगरेट, जर्दा, तम्बाकू, मांस-सेवन आदि के त्याग कराए। इससे उनके स्वास्थ्य की रक्षा हुई और धन की भी। परिवारजनों के प्रति व्यवहार में परिवर्तन भी हुआ तथा जीवन में समृद्धि और सुख का सञ्चार हुआ।

गुरुदेव ने अनेक न्यायाधीशों, अधिकारियों, शिक्षकों, व्यापारियों, युवकों, महिलाओं का जीवन बनाया। उन्होंने सद्शिक्षा देकर उन्हें चिन्ता एवं भयमुक्त बनाया। उनके आत्मसामर्थ्य का विकास किया। आत्मीयता और वात्सल्यपूर्वक अल्प शब्दों में उनकी वाणी बड़ी प्रभावकारी होती थी। क्योंकि उनमें निर्दोष साधना, तप एवं त्याग की ऊर्जा थी। उनका श्रुतज्ञान निर्मल था। नेत्रों से दूरस्थ घटनाओं एवं व्यक्तियों का भी उन्हें बोध हो जाता था। इससे उनमें किञ्चित् अवधिज्ञान होने का संकेत प्राप्त होता है। भावी घटनाओं को भी वे भाँप लेते थे। निर्मल ज्ञान से उन्होंने अपने जीवन को तो उन्नत किया ही, समाज को भी सुधारात्मक दृष्टि प्रदान की। वे एक आदर्श एवं उन्नत समाज देखना चाहते थे।

पूज्यप्रवर के निर्मल चित्त में अनेक प्रेरणाएँ उद्भूत हुई, जिन्होंने समाज एवं जिनशासन का हित किया। आचार्य विनयचन्द ज्ञान भण्डार, आचार्य

शोभाचन्द्र ज्ञान भण्डार आदि भण्डारों के साथ अनेक ग्राम-नगरों में वर्धमान पाठशालाएँ प्रारम्भ हुईं। ग्रीष्मकाल में धार्मिक शिविर आयोजित हुए, जिनसे हजारों बालकों को धर्म के प्रति रुचि जाग्रत हुई।

गुरुदेव ने यह अनुभव किया कि समाज में जैनविद्या के योग्य विद्वानों की कमी है। उन्होंने प्रवचन में भावना व्यक्त की और फलस्वरूप सुज्ञ श्रावकों के माध्यम से जयपुर में 16 नवम्बर, 1973 को '**श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान**' का सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अन्तर्गत शुभारम्भ हुआ। पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने प्रवचन में फरमाया-''संस्थान द्वारा शिक्षा, दीक्षा एवं संस्कार के समुचित प्रयासों से आदर्श मानव व्यक्तित्व का निर्माण किया जाना है।'' गुरुदेव के चित्त में संस्कृत, प्राकृत एवं जैन विद्या के विद्वान् तैयार करने के साथ भावना रही कि उन विद्वानों का नैतिक जीवन भी उन्नत हो तथा वे बोध और शोध की दृष्टि को अपनाकर जैन विद्या को सही रूप में प्रस्तुत कर सकें।

पूज्य आचार्यप्रवर के इस चिन्तन को मूर्त्तरूप प्रदान करने में श्रावकरत्न श्री नथमलजी हीरावत, श्री इन्दरचन्दजी हीरावत और श्री श्रीचन्दजी गोलेच्छा का विशेष योगदान रहा। सुयोग्य अधिष्ठाता गुरुवर्य श्री कन्हैयालालजी लोढ़ा की नियुक्ति हुई, जिन्होंने पूर्ण समर्पण भाव से प्रत्येक बालक के जीवन को संस्कारित करने के साथ जैन विद्या का स्वयं अध्यापन किया एवं छात्रों को संस्कृत-प्राकृत पढ़ाने के लिए समय-समय पर विशेषज्ञ पण्डितों का सुयोग बिठाया। अल्प सुविधाओं के साथ गुरुजी लोढ़ा साहब की जीवन-निर्माणकारी शिक्षाएँ भीतर से व्यक्तित्व का निर्माण कर रही थी। उन्होंने अनेक अन्ध मान्यताओं का निराकरण किया तथा विज्ञान एवं अध्यात्म विज्ञान के आलोक में ज्ञान प्रदान किया। वे प्राय: कहा करते थे-''सुख कामनापूर्ति में नहीं, कामना के अभाव में है। कामना की पूर्ति के पश्चात् वही अवस्था हो जाती है जो कामना की उत्पत्ति के पूर्व थी।'' उन्होंने विश्वविद्यालय में वाद-विवाद प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता आदि में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। छात्रों ने श्री तिलोकरत्न जैन धार्मिक शिक्षण बोर्ड पाथर्डी से सञ्चालित जैन सिद्धान्त विशारद, जैन सिद्धान्त भास्कर, जैन सिद्धान्त शास्त्री, जैन सिद्धान्त आचार्य आदि की परीक्षाएँ दी। 'संस्कृत भारती' मासिक पत्रिका के सम्पादक पण्डित दीनानाथजी त्रिवेदी 'मधुप' ने रचनानुवाद कौमुदी का छात्रों को निष्ठापूर्वक अध्यापन किया। एक माह अजमेर के पण्डित शान्तिलालजी ने 'प्राकृत विज्ञान पाठमाला' के माध्यम से प्राकृत का अभ्यास कराया। पण्डित श्री दयाशंकरजी त्रिपाठी के श्रीमुख से हेमचन्द्राचार्य की प्राकृत व्याकरण के कुछ सूत्र पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। श्रावकरत्न श्री मोहनलालजी मूथा से कर्मग्रन्थ सीखे। बाद में श्रावकरत्न श्री केवलमलजी लोढ़ा ने कर्मग्रन्थ आदि सिखाए। इस प्रकार विभिन्न ग्रन्थों के अभ्यास से संस्कृत, प्राकृत एवं जैन विद्या का अच्छा ज्ञानार्जन हुआ।

प्राय: विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय में संस्कृत विषय लेना अनिवार्य रखा गया था। इसलिये सभी छात्रों को संस्कृत भाषा एवं साहित्य का सहज ही अभ्यास बढ़ता गया। जैनागम प्राकृत भाषा में तथा अधिकांश व्याख्या साहित्य संस्कृत भाषा में निबद्ध है। इसलिये वास्तविक अभिप्राय समझने के लिए इन भाषाओं का ज्ञान होना आवश्यक समझा गया। छात्रों को समय-समय पर अनेक विद्वानों, विचारकों का भी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। प्रतिवर्ष पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के सान्निध्य में सभी 7-10 विद्यार्थियों को 5-7 दिनों के लिए ले जाया जाता था। जहाँ पर छात्रों को जैन विद्या के साथ चरित्रनिर्माण के सूत्र भी प्राप्त होते थे। इस संस्था से शताधिक योग्य विद्यार्थियों ने अध्ययन करके जीवन बनाया, जिनमें डॉ. धर्मचन्द जैन (पूर्व प्रोफेसर एवं जिनवाणी सम्पादक), श्री गौत्तमचन्द जैन (पूर्व संयुक्त खाद्य आयुक्त), श्री धर्मेन्द्र कुमार जैन (प्राचार्य), श्री जम्बू कुमार जैन (मुख्य लेखाधिकारी), श्री अशोक कुमार जैन-निजी सचिव (हरसाना वाले) ने अध्ययन करके संघ समाज में अपना

उल्लेखनीय योगदान किया है। श्री विमल कुमार जैन (प्रबन्धक, आई.ओ.सी.), श्री पवन कुमार जैन (अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक), श्री रतीश जैन (प्रशासनिक अधिकारी, जी.एस.टी.), श्री लोकेश जैन (आई.आर.एस.), श्री अशोक कुमार जैन (पूर्व सहायक, श्रम आयुक्त) प्रशासनिक पदों को सुशोभित कर रहे हैं। श्री पारसमल जैन (उपाध्यक्ष, वेलस्पन कम्पनी), श्री सुभाष बोरदिया, श्री राजकुमार धूपिया, श्री पवन कुमार जैन (देई), श्री बालचन्द भलावत (उद्योगपति) मुम्बई, श्री अमरचन्द बाफणा-मुम्बई आदि सी.ए. करके विभिन्न कम्पनियों में उच्च पदों पर आसीन हैं। श्री नरेन्द्र कुमार जैन (सहायक लेखाधिकारी), श्री अनुपम जैन (बैंक अधिकारी), श्री हेमन्त कुमार जैन (राजनीतिक सेवा) आदि अपने अपने क्षेत्रों में उल्लेखनीय सेवाएँ दे रहे हैं। श्री श्रीपाल देशलहरा हैदराबाद, श्री मनोज कुमार जैन-जोधपुर, श्री सुरेश कांकरिया-जोधपुर आदि प्रतिष्ठित व्यवसायी होने के साथ संघसेवा में भी अपना समय नियोजित करते हैं। श्री गौतमचन्द जैन-आलनपुर, श्री माँगीलाल हिरण (प्रतिष्ठित व्यवसायी), श्री अशोक लोढ़ा आदि बैंकॉक में आजीविका का अर्जन करते हुए धर्मनिष्ठा एवं संघसेवा में मनोयोग से सन्नद्ध हैं। श्री सुशील कुमार जैन (व्याख्याता), श्री मनोज कुमार जैन पाटोली (व्याख्याता), श्री नरेश कुमार जैन (प्रधानाचार्य), श्री अरविन्द कुमार जैन (प्रधानाचार्य) दिल्ली, श्री प्रकाश पारख (व्याख्याता), श्री महावीर प्रसाद जैन (व्याख्याता), श्री रवीन्द्र कुमार जैन (प्रधानाचार्य) आदि शिक्षकों के रूप में सेवानिष्ठ रहकर संघसेवा कर रहे हैं। इस प्रकार संस्थान में अधीत सभी छात्र योग्य पदों एवं कार्य स्थलों में नियोजित होकर संघ एवं समाज को योगदान कर रहे हैं। उनका व्यक्तिगत जीवन भी नैतिक मूल्यों से संवलित है। छात्रों ने श्री डी. आर. मेहता एवं उनकी माताजी, श्री टीकमचन्दजी हीरावत, डॉ. नरेन्द्रजी भानावत एवं श्रीमती शान्ताजी मोदी आदि का भी समय-समय पर वात्सल्य एवं मार्गदर्शन प्राप्त किया।

संस्थान जिन उद्देश्यों को लेकर प्रारम्भ हुआ था, उनकी पूर्ति कुछ अंशों में हुई, क्योंकि संस्थान से निकले छात्र राजकीय सेवा एवं अन्य आजीविका-साधनों को प्राथमिकता दे रहे थे तथा जो कोई समाज में रहकर सेवा देते, उन्हें पूर्णकालिक रूप से संघ-समाज अपने यहाँ नियुक्त नहीं कर पाया। समाज के प्रबुद्धजनों की यह सोच भी रही कि संस्थान से निकले छात्र आजीविकोपार्जन कहीं भी करें, उनका जीवन नैतिक एवं प्रामाणिक बनना चाहिए। अत: सम्प्रति यहाँ से अध्ययन कर निकले छात्र अपने कार्यों के उपरान्त जो समय शेष रहता है उसमें पर्युषण में स्वाध्याय-सेवा, नियमित सामायिक-साधना एवं सन्त-सतियों की यथा शक्ति सेवा करने का मानस रखते हैं।

जब संस्कृत-प्राकृत के अध्यापन हेतु कला विषय में अध्ययन के लिए छात्र कम आने लगे तब सुज्ञ श्रावकवृन्द ने यह निर्णय लिया कि संस्थान में छात्रों के नैतिक एवं धार्मिक उन्नयन के साथ उच्च अध्ययन के सभी आयाम खुले रखे जायें ताकि छात्रों को आजीविका का अच्छा साधन भी सुलभ हो। इस उद्देश्य को मूर्त्तरूप प्रदान करने में विचारशील श्रावकरत्न एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री कैलाशचन्दजी हीरावत, संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत-मुम्बई, तत्कालीन संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंहजी बोथरा, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के तत्कालीन अध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा आदि का चिन्तन रहा कि इस संस्थान से अधिकाधिक छात्र लाभान्वित हों। अत: श्रावकरत्न श्री लाभचन्दजी लोढ़ा से प्राप्त पूर्व भवन की भूमि पर बहुमञ्ज़िला नया भवन निर्मित हुआ, जिसका भव्य उद्घाटन 22 जनवरी 2012 को हुआ। चार मञ्ज़िले इस भवन में सन् 2011-12 से छात्रों की संख्या में अभिवृद्धि हुई। वर्तमान में लगभग 40 छात्र विज्ञान, वाणिज्य, इञ्जीनियरिंग आदि विविध शिक्षा क्षेत्रों में अध्ययनरत हैं साथ ही धार्मिक शिक्षा भी प्राप्त कर रहे हैं। कम्प्यूटर शिक्षा एवं सामान्य ज्ञान के संवर्धन की

सुविधा भी संस्थान प्रदान करता है। अब वृहद् स्तर पर छात्रों के जीवन-निर्माण का सुनहरा अवसर उपलब्ध है। सम्प्रति देश के विभिन्न राज्यों से यहाँ विद्याध्ययन के लिए छात्र आते हैं। गजेन्द्र चेरिटेबल ट्रस्ट के द्वारा सञ्चालित इस संस्थान के निरन्तर विकास एवं संवर्धन के लिए श्री कैलाशचन्दजी हीरावत, डॉ. प्रेमसिंहजी लोढ़ा, श्राविकारत्न श्रीमती सुमनजी कोठारी आदि अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। श्री दिलीपजी जैन इस संस्थान के छात्रों का अधिष्ठाता के रूप में मार्गदर्शन कर रहे हैं। जयपुर जैसे सुन्दर शहर में अनेक शिक्षा संस्थान हैं। यहाँ नि:शुल्क आवास एवं भोजन की सुविधा के साथ छात्र उन शिक्षण संस्थानों का लाभ लेकर अपने जीवन का निर्माण कर सकते हैं। इस संस्थान का नाम सन् 2011-12 से **'आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान'** हो गया है।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मानसरोवर स्थित भूभाग पर बालिकाओं के लिए इस प्रकार की एक नि:शुल्क आवास एवं भोजन की व्यवस्था के साथ संस्थान निर्मित हुआ है, जिसका नाम है **'श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान।'** बालिकाओं के लिए संस्थान की योजना मण्डल के अध्यक्ष श्री कैलाशमलजी दुगड के कार्यकाल में बनी तथा अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के तत्कालीन अध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पारसचन्दजी हीरावत एवं मन्त्री श्री विनयचन्दजी डागा के कार्यकाल में समस्त सुविधाओं के साथ यह भवन निर्मित हुआ। 11 मार्च, 2018 को इस भवन का लोकार्पण हुआ। संस्थान में अभी लगभग 30 छात्राएँ अध्ययनरत हैं। छात्रों की भाँति छात्राओं के सर्वांगीण विकास के साथ धार्मिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का भी बीजारोपण एवं संवर्धन किया जाता है। श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के द्वारा आयोजित परीक्षाओं में छात्रों की तरह छात्राएँ भी भाग लेकर अपने ज्ञान में उत्तरोत्तर वृद्धि कर रही हैं तथा पर्युषण में स्वाध्यायी-सेवा प्रदान करती हैं। भोजन में जमींकद एवं रात्रि भोजन का दोनों संस्थाओं में निषेध है। छात्राएँ भी विज्ञान, वाणिज्य, कला आदि विभिन्न शिक्षा क्षेत्रों में अध्ययनरत हैं। कुछ छात्राएँ व्यावसायिक पाठ्यक्रम भी कर रही हैं।

पूज्य आचार्यप्रवर की सत्प्रेरणा से महाराष्ट्र के जलगाँव में श्री सुरेशदादा एवं श्री रतनलाल सी. बाफणा के संरक्षण में **श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ** की स्थापना हुई थी; जहाँ पर प्राचार्य श्री प्रकाशचन्दजी जैन के सान्निध्य में जैन विद्या का अध्ययन कर अनेक छात्रों ने अपने जीवन का निर्माण किया है। उनमें से श्री त्रिलोकचन्द जैन-जयपुर, श्री जिनेन्द्र कुमार जैन-जयपुर, श्री प्रकाशचन्द सालेचा-जोधपुर, श्री मनोज संचेती-जलगाँव, श्री विनोद कुमार जैन-चेन्नई, श्री दिलीप जैन-जयपुर, श्री धर्मेन्द्र कुमार जैन-चित्तौड़गढ़ वाले-जयपुर, श्री मनीष कुमार जैन-चेन्नई आदि अनेक विद्वच्छात्र संघ को सक्रिय सेवा प्रदान कर रहे हैं। डॉ. सुन्दरलाल जैन आदि कतिपय छात्रों ने शिक्षा क्षेत्र में सेवा प्रदान की है तथा अनेक छात्र निजी व्यवसाय करते हुए स्थानीय पाठशालाओं को सम्भाल रहे हैं। किन्तु विगत 10 वर्षों से यह संस्थान छात्राभाव में क्रियाशील नहीं है।

इस प्रकार पूज्य आचार्यप्रवर के द्वारा की गई प्रेरणाओं को ग्रहण कर सुज्ञ श्रावकों ने विभिन्न संस्थाओं की स्थापना करके अनेक छात्रों के जीवन को सुन्दर बनाया है तथा उनको सम्यक् आजीविका प्राप्ति के योग्य बनने हेतु सुअवसर प्रदान किया है जो प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है। सम्प्रति इन संस्थाओं के निरन्तर पोषण एवं विकास की आवश्यकता है। अनेक उदारमना महानुभाव समय-समय पर अपना सहयोग प्रदान कर रहे हैं। 'आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान पूर्व छात्र परिषद्' का भी दस वर्ष पूर्व गठन हुआ है, जो इस संस्था के हित के लिए तत्पर है। इन संस्थाओं में वह नैतिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त होता है, जो महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों की शिक्षा से भी प्राप्त नहीं होता है। समाज में संस्कारशील विद्वान् तैयार करने के प्रति सजगता की आज भी आवश्यकता है एवं आगे भी रहेगी। ◆

10 मई 2023
जिनवाणी 11
ISSN 2249-2011

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

डॉ. धर्मचन्द जैन

सव्वं सुचिण्णं सफलं नराणं,
कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि।
अत्थेहिं कामेहिं य उत्तमेहिं,
आया ममं पुण्ण-फलोववेए।।

-उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 13, गाथा 10

अर्थ-मनुष्यों के द्वारा अच्छे किये हुए सभी सत्कर्म सफल होते हैं। किये हुए कर्म व्यर्थ नहीं जाते हैं अत: मेरी आत्मा भी उत्तम अर्थों और कामों द्वारा पुण्यरूप फलों से युक्त रही है।

विवेचन-जैनदर्शन में कर्म सिद्धान्त का विशिष्ट स्थान है। जैसा कर्म किया है, उसके अनुसार फल की प्राप्ति होती है। शुभ कर्मों का फल अनुकूलता के रूप में तथा अशुभ कर्मों का फल प्रतिकूलता के रूप में प्राप्त होता है। तप, त्याग आदि की साधना करने के साथ अन्न पुण्य आदि नौ प्रकार के पुण्यों का आचरण भी पुण्यार्जन का कारण बनता है। पुण्यार्जन में विशेषत: शुभ भावों का महत्त्व होता है। शुभ भाव में की गई साधना निर्जरा का भी कारण बनती है तो साथ ही पुण्यार्जन का भी कारण बनती है। सम्यग्दृष्टि जीव जब पापों से विरत होता है तथा जागरूकता के साथ क्षमा आदि धर्मों का ज्ञानपूर्वक आचरण करता है तो वह पूर्वबद्ध कर्मों की तीव्रता से निर्जरा करता है। सम्यग्दर्शन से युक्त जीव कभी अपनी संयममय प्रवृत्तियों के फल का निदान कर लेता है तो उसके कर्मों की निर्जरा न होकर चिन्तित सांसारिक फल की प्राप्ति होती है।

उदाहरण के लिए ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती ने पूर्व भव में संयम-साधना करते हुए जो निदान किया, उसके परिणामस्वरूप वह चक्रवर्ती सम्राट् बन गया। इसमें धर्म-साधना का फल सांसारिक भोगों की पूर्ति में परिणत हो गया। ज्ञानियों के अनुसार यह निदान मुक्ति में बाधक है तथा पुन: वैसी जागरूकता होना आवश्यक नहीं है। ऐसी स्थिति में संसार परिभ्रमण का काल बढ़ जाता है। ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती अपनी इस राज्य-प्राप्ति को पूर्वभव में किए गए सत्य, शौच आदि कर्मों का फल स्वीकार करता है। चित्त मुनि भी कहते हैं कि पूर्व में किए गए सदाचरण का फल प्राप्त होता है। किए हुए कर्म अपना फल प्रदान करते ही हैं। इसलिये मेरा जीव भी उत्तम अर्थ और कामों से युक्त कुल में उत्पन्न हुआ है। पुण्यरूप फलों से मेरा जीव भी उपेत रहा है। चित्त मुनि का अपने पूर्व जन्म के भ्राता के प्रति कथन है कि हे सम्भूत! मैंने भी आपकी भाँति महान् ऋद्धि प्राप्त की है। किन्तु भिक्षु के द्वारा गायी गई एक गाथा को सुनकर मैं पुन: इस जीवन में भी श्रमण बन गया हूँ।

यहाँ ध्यातव्य है कि निदान न करने पर भी पुण्य के फल की प्राप्ति तो होती ही है, अत: निदान करके मोक्ष का पथ अवरुद्ध करना कदापि उचित नहीं। इस गाथा से यह भी विदित होता है कि धर्म-साधना से कर्मनिर्जरा होने के साथ पुण्य का सञ्चय भी होता है। उस पुण्य के कारण ही इन दोनों जीवों को मनुष्य गति एवं पञ्चेन्द्रिय जाति प्राप्त हुई। इसके साथ ही नामकर्म की अनेक शुभ प्रकृतियाँ, साता वेदनीय, मनुष्यायु और उच्च गोत्र की प्राप्ति हुई। कर्म प्रकृतियों में कहीं भी धन-सम्पदा आदि के मिलने का सीधा उल्लेख नहीं हैं। किन्तु उत्तराध्ययनसूत्र की इस गाथा एवं इसके साथ जुड़ी अन्य गाथाओं में यह स्पष्ट होता है कि पुण्य का फल बाह्य सुख-सुविधाओं के रूप में भी प्राप्त होता है। इनके प्राप्त होने पर भी जो साधक आत्मा होती है, वह इन सुख-सुविधाओं को सर्वस्व नहीं समझती तथा आत्मा का कल्याण करने के लिए इनका त्याग कर प्रव्रज्या के मार्ग पर चल पड़ती है।

चित्त मुनि इसी प्रकार अपनी धन-सम्पदा का

त्याग करके मुनि बन गए और ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती आत्म-कल्याण की अपेक्षा काम-भोगों के सेवन को श्रेष्ठ समझने लगे। इसका तात्पर्य यह है कि पुण्य से मिली सुख-सामग्री मानव को भटकाने वाली भी हो सकती है, यदि दृष्टि सम्यक् नहीं है और त्याग की प्रवृत्ति नहीं है।

कृत कर्मों का फल भोगे बिना मोक्ष नहीं होता, इसका तात्पर्य यह है कि प्रदेशोदय की अपेक्षा उन कर्मों का फल भोग अवश्य होता है। कर्मों के विपाकोदय में अपकर्षण होने के कारण कमी आ सकती है और कदाचित् संक्रमण होने के कारण उनके फल में परिवर्तन भी हो सकता है। किए हुए कर्म (सत्कर्म) व्यर्थ नहीं जाते हैं, इसका तात्पर्य है कि या तो उनका सीधा फल प्राप्त होता है, या फिर उनसे पूर्वबद्ध कर्मों की निर्जरा होती है।

यूँ ही चला चल राही

श्री जयदीप ढड्ढा

''यूँ ही चला चल राही, कितनी हसीन है ये दुनिया। भूल सारे झमेले, देख फूलों के मेले, बड़ी रंगीन है ये दुनिया।'' ये पंक्तियाँ हैं गीतकार जावेद अख्तर की। इस गीत में उन्होंने जीवन का आनन्द लेते हुए जीने की प्रेरणा दी है। उसके हर पल का आनन्द लेते हुए परिवार, संगी-साथी, प्रकृति, इन सबके साथ सन्तुलन बनाते हुए जीना है। जैसे साइकिल पर पैडल देते हुए सवारी करना होता है। पर जिस तरह कभी-कभी साइकिल का सन्तुलन बिगड़ जाता है, उसी तरह कभी-कभी ज़िन्दगी भी लड़खड़ा जाती है। जीवन है तो मुश्किलें भी आएँगी, चुनौतियों का सामना भी करना पड़ सकता है। उनसे टूटना, अवसाद में आना भी स्वाभाविक है। लेकिन मजेदारी इसमें है कि हम इन स्थितियों से खुद को कितना जल्दी बाहर निकाल लेते हैं, आगे बढ़ते रहने की कोशिशें जारी रखते हैं और जीवन का आनन्द लेते हैं।

कुछ लोग कन्धा झटक कर अगले ही पल उठ खड़े होते हैं, तो कुछ जीवन भर दुःखों में पिसते रहते हैं। कुछ लोग जीवन का आनन्द नहीं ले पाते हैं। उनका जीवन ठहरे पानी-सा हो जाता है। ठहरे पानी में कुछ समय बाद बदबू आने लगती है। इसी तरह रुका हुआ इंसान किसी काम का नहीं रहता। पर यदि वह जीवन के उतार-चढ़ाव और पथरीले रास्तों के बावजूद नदी की तरह गतिशील रहेगा, तो अपने लक्ष्य पर पहुँच ही जाएगा। जिस तरह बहती नदी का पानी मीठा होता है, उसी तरह मुश्किलों का सामना करते हुए जो चलता रहता है, उसका जीवन भी नदी के पानी की तरह निर्मल होता है। इसलिए इस खूबसूरत दुनिया का आनन्द लेना है तो थमें नहीं, चलते रहें। हर परिस्थिति में बढ़ते रहें, कोशिश करते रहें। एक दिन समय खुद अनुकूल बन जाएगा और किस्मत आपके पक्ष में फैसला लेगी।

हमारे जीवन को कोई सकारात्मक दिशा दे सकता है, तो वह हम स्वयं हैं। हमारी अपनी जड़ता हमें नाकामयाबी की ओर ले जाती है। जैसा कि प्रसिद्ध उद्योगपति रतन टाटा कहते हैं-लोहे को कोई भी नष्ट नहीं कर सकता सिवाय उसके अपने जंग के। उसी तरह इंसान को कोई और नहीं बल्कि उसकी अपनी मानसिकता नष्ट करती है। वह यदि समस्याओं से बचते हुए निष्क्रिय रहना चुनता है, तो सफलता का स्वाद नहीं चख सकता। कहते हैं कि जीवन समस्या को हल करने की यात्रा है, सीखने के लिए सबक है, लेकिन सही अर्थ में समझा जाए तो जीवन आनन्द से शान्तिपूर्वक जीने के लिए मिला है। जिस किसी भी मोड़ से गुजरते हुए जब हम उसका भरपूर लुत्फ उठाऐंगे, तब महसूस करेंगे कि ज़िन्दगी जहाँ रोने की यदि सौ वजह देती है, तो मुस्कुराने की हजार वजह भी देती है। हमारी सोच, हमारा दृष्टिकोण ऐसा ही बना रहेगा, तो जीवन यात्रा सुखद और मंगलमय बनी रहेगी।

-ढड्ढा मार्केट, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)

10 मई 2023
जिनवाणी 13
ISSN 2249-2011

विचार-वारिधि

सद्गुणवर्धक विचार

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

- श्रद्धा, विवेक और करणी का मेल हो, वही श्रावक है।
- ज्ञानी की देव, गुरु एवं धर्म पर श्रद्धा होती है और अज्ञानी की जड़-सम्पदा पर।
- मनुष्य को भगवान की अपेक्षा माया से अधिक प्रेम होता है। इसका प्रमुख कारण अज्ञान है।
- आत्मार्थी को पाप से बचने के लिए प्रमाद और कषाय घटाने चाहिए।
- गृहस्थ, संसार में रहते हुए सम्पूर्ण हिंसा आदि का त्याग नहीं कर सकता, फिर भी उसका विचार शुद्ध हो सकता है। वह पाप को पाप और षट्कायिक जीवों को अपने समान समझता है।
- ज्ञान के बिना कषाय का जोर नहीं हटता।
- आप स्वाध्यायशील रहें तो आचार की त्रुटियाँ सहज ही दूर हो सकती हैं।
- दुःखमय संसार में प्राणियों की रति देखकर शास्त्रकार भी आश्चर्य करते हैं।
- श्रावकपन किसी जाति या देश में सीमित नहीं होता।
- कोई भी विवेकशील मनुष्य श्रावक हो सकता है।
- सुज्ञ पुरुष चढ़ते परिणामों में साधना एवं व्रत आदि कर लेते हैं।
- साधक, श्रद्धा-प्रतीति होने पर भी रुचि के अभाव में चारित्र ग्रहण नहीं करता।
- जिसके संग से कुमति दूर हो, भजन की रुचि बढ़े, राग-द्वेष घटे, सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति हो, वही सत्संग है।
- दिल के साफ आइने में ही परमात्मा के दर्शन होते हैं।
- धर्म, सत्य की भूमि पर पैदा होता है और दया-दान से बढ़ता है।
- चाहे माला जपें, सामायिक करें या अन्य कुछ करें, सत्य-सदाचार और प्राणिदया को जीवन में उतारना न भूलें। व्यवहार में प्रामाणिक होना मूल गुण होना चाहिए।
- विनीत शिष्य और जातिमान वृषभ एक बार रास्ते लगने के पश्चात् बिना प्रेरित किये ही चलते रहते हैं।
- सद्विचारों से कुविचार की गन्दगी मन से निकल जाती है।
- मनुष्य का जीवन मिट्टी के पिण्ड के समान है। उसको जैसा संग और शिक्षा मिले, वह वैसे रूप में ढल जाता है।
- ब्रह्मचर्य मानव-जीवन का पानी है। जिसका पानी उतर गया, वह हीरा मूल्यहीन हो जाता है।
- यदि आज का मानव महावीर के शासन को ध्यान में लेकर चले तो वर्ग-संघर्ष का नाम ही न हो।
- समदृष्टि का जीवन धर्मप्रधान होता है, अर्थप्रधान नहीं।
- चतुर किसान जल को नाली में न डालकर बाड़ी में बहाता है। इसी प्रकार 18 पापों से सञ्चित द्रव्य को आरम्भ-परिग्रह की नाली में न बहाकर ज्ञान-दान, अभय-दान, शासनसेवा, स्वधर्मिसहायक, उपकरण-दान आदि में लगाने से उसका सदुपयोग हो सकता है।
- द्रव्य, क्षेत्र, काल एवं भाव की अनुकूलता में पुरुषार्थ किया जाय तो कार्य सिद्धि हो सकती है।
- आज के श्रावक व्यावहारिक जगत् में पैतृक सम्पदा की तरह गुरु से दी गई धर्म-सम्पदा को बढ़ाकर सच्चे सपूत बनें तो विश्व का कल्याण हो सकता है।

-'अमृत-वाक्' पुस्तक से गृहीत

10 मई 2023
जिनवाणी 14
ISSN 2249-2011

प्रवचन

शील-पालन की महिमा

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा जयपुर में प्रदत्त प्रवचन का आशुलेखन श्री अशोककुमारजी जैन 'हरसाना', जयपुर द्वारा किया गया है। सम्पादन में सह सम्पादक श्री त्रिलोकचन्दजी जैन, जयपुर का सहकार रहा है।

-सम्पादक

असार संसार से आत्म-विकास का सार ग्रहण करने वाले अनन्त ज्ञान के धारक तीर्थंकर भगवन्त तथा धर्मपथ पर जीवन समर्पित करने वाले, तिण्णाणं तारयाणं का बिगुल बजाने वाले पंच परमेष्ठी के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन!

तीर्थंकर भगवान की आदेय अनुपम अन्तिम वाणी उत्तराध्ययनसूत्र के आठवें अध्ययन के माध्यम से पाप के बाप लोभ को हटाने वाले कपिल केवली का आख्यान कर रही है। लोक-व्यवहार को शुद्ध रखने के लिए जिन नियमों का, जिन मर्यादाओं का शास्त्रकारों ने कथन किया है, वे मर्यादाएँ हमारे आत्मगुणों और धर्मरत्न को सुरक्षित रखने में बाड़ और कपाट की तरह काम करती हैं। जैसे धन की सुरक्षा के लिए मकान के दरवाजे बनाये जाते हैं, धान की सुरक्षा के लिए खेत में बाड़ बनाई जाती है, कंटीले तार लगाये जाते हैं। ये दरवाजे और कंटीले तार वेदना देने के लिए नहीं, बल्कि धन-धान्य की सुरक्षा के लिए होते हैं। वैसे ही शक्ति का संचय कराने वाले, आत्म-विकास के पथ पर आगे बढ़ाने वाले ब्रह्मचर्य व्रत को सुरक्षित रखने के लिए शास्त्रकारों ने बाड़ें बताई हैं। उनमें एक है विजातीय के साथ एकान्त में बैठना और सम्भाषण नहीं करना। जिन्हें ब्रह्मचर्य का पालन करना है, जिन्हें अपना धर्म सुरक्षित रखना है उन्हें ऐसी बाड़ों का पालन करना अनिवार्य है, अन्यथा उसी भव में मोक्ष जाने वाले चरम शरीरी भी कभी विपरीत निमित्त मिलने पर डगमगा जाते हैं। शास्त्र में दृष्टान्त आता है कि जिस घर में बिल्ली रहती है उस घर में चूहा नहीं घूमता है, जहाँ शेर की गुफा है उसके आसपास हिरण नहीं रहते हैं। उसी तरह ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने वाले साधक वासना को भड़काने वाले, मन को कामुक करने वाले स्थानों से दूरी बनाकर रखते हैं। चाहे पत्नी की मर्यादा रूप चौथा व्रत ग्रहण करने वाले गृहस्थ हों या पाँच महाव्रतों का पालन करने वाले साधु हों, उन्हें भी ब्रह्मचर्य विघातक स्थानों पर नहीं जाकर मर्यादा के साथ चलना चाहिए। संस्कृत साहित्य में भी कहा है-

विषस्य विषयाणां हि दृश्यते महदन्तरम्।
उपभुक्तं विषं हन्ति विषया: स्मरणादपि।।

अर्थात् विष और विषय, इन दोनों के बीच बहुत बड़ा अन्तर है। विष तो खाने पर ही मृत्यु प्रदान करता है, लेकिन विषय तो स्मरण मात्र से ही मृत्यु प्रदान कर देते हैं। ज़हर खाने से व्यक्ति मरता है, किन्तु विषय-वासना का तो ऐसा ज़हर है जो दृश्य देखने के साथ नशा चढ़ा देता है, स्मरण करने मात्र से शरीर की शक्ति तोड़ देता है। वासना यदि मन में आ जाये तो मन को कमजोर कर देती है और यदि स्पर्श में आ जाये तो शक्ति का भी नाश करने वाली होती है। ज़हर की टिकिया है, उसको कपड़े में बाँधकर घर में एक जगह रख दो, तो वह सेवन किये बिना कुछ भी बुरा नहीं करेगा। किन्तु वासना का ज़हर तो पास में किसी के नहीं होने पर भी, चिन्तन कर लेने मात्र से, रात की बात जाने दीजिए, दिन में भी शक्ति क्षीण कर देता है। चाणक्य नीति में कहा है-

दिवा पश्यति नोलूक:, काको नक्तं न पश्यति।
अपूर्व: कोऽपि कामान्धो, दिवा नक्तं न पश्यति।।

अर्थात् उल्लू को दिन में दिखाई नहीं देता है और कौए को रात्रि में दिखाई नहीं देता है, परन्तु कामान्ध व्यक्ति विचित्र होता है जिसे न दिन में दिखाई देता है

और न ही रात्रि में। कामी पुरुष के लिए न दिन बाधा वाला है और न ही रात बाधा वाली है, वह प्रत्येक समय उसी उधेड़बुन में रहता है। कामी कामना के वशीभूत रहकर प्रति समय कर्मों का बन्ध करता है और अपने आपको अध:तल में पहुँचाता है। कपिल केवली ने अपने उद्‌बोधन में कहा–

दुपरिच्चया इमे कामा, नो सुजहा अधीरपुरिसेहिं।
अह संति सुव्वया साहू, जो तरंति अतरं वणिया व।।

इन कामभोगों का त्याग दुष्कर है, अधीर पुरुषों से इनका त्याग होना सरल नहीं है। किन्तु जो निष्कलंक व्रतधारी साधु हैं वे इन दुस्तर कामभोगों को उसी तरह पार कर जाते हैं जिस तरह व्यापारी पानी के जहाज से सागर को पार करके अन्य प्रदेश में चले जाते हैं। कामभोग को छोड़ने की इच्छा रखने वाले, इनसे अनेकानेक दु:ख पाने वाले भी इन कामभोगों में फँसकर सब कुछ स्वाह कर लेते हैं।

व्यक्ति दयालु है, करुणाशील है, एकेन्द्रिय से लेकर पञ्चेन्द्रिय तक के जीवों की दया पालकर चलने वाला है, उसे दुनिया से डर नहीं, पर झूठ बोलने से डर लगता है। कैसी भी संकट की घड़ी आ जाये तब भी झूठ का सहारा नहीं लेता है, अपना सो अपना और पराया सो पराया की भावना रखता है, अपनी मेहनत से जो रूखा-सूखा मिला, उसे प्रसन्नता से खाकर यही विचार रखता है कि मेहनत के भूंगड़े भी हलवा के बराबर है। चोरी का हलवा मीठा नहीं होता और ताकत देने वाला भी नहीं होता है, क्योंकि सौ दिन चोरी से खाने वाला एक दिन जरूर पकड़ा जाता है। किसी में सद्‌गुण होते हुए भी यदि विषय-लम्पट है, कामना पर काबू करने वाला नहीं है, तो उसके सभी गुण बेकार हो जाते हैं। मकान का नवीन-निर्माण हुआ है। कमरे का फर्श इम्पोर्टेड मारबल का बना हुआ है, फर्नीचर भी आकर्षक है, घर में एक-एक चीज महँगी से महँगी लगी हुई है, टीवी, एसी, फोन आदि सभी प्रकार की सुविधाओं से समृद्ध है, परन्तु उस मकान में किंवाड़ नहीं है तो घर को सुरक्षित नहीं कहा जा सकता है। उसी प्रकार बहुत सारे सद्‌गुण होते हुए भी यदि कामना पर विजय नहीं है तो वे सद्‌गुण भी किसी काम के नहीं हैं।

कपिल केवली संसार के प्राणियों को सन्देश देते हुए कह रहे हैं कि जिनके एक नहीं, बल्कि 16,000 रानियाँ थीं, देव भी जिनकी सेवा में रहते थे, वे भी अपने एक काम-वासना के दुर्गुण के कारण बरबाद हो गये। आज उनके वंश में कोई नाम लेने वाला भी नहीं रहा। जिन पुरुषों ने धैर्य धर्म को धारण नहीं किया, अपने मन-वचन-काया पर काबू नहीं किया, वे ब्रह्मचर्य व्रत को स्वीकार करने के योग्य नहीं हैं। वे मैथुन-सेवन का त्याग नहीं कर सकते और उनके लिए अब्रह्म का त्याग करना बहुत मुश्किल है।

ऐतिहासिक घटना है। जयपुर नरेश महाराजा रामसिंहजी थे, जिनका सम्बन्ध जोधपुर नरेश जसवन्तसिंहजी की बहिन के साथ हुआ। जयपुर नरेश की रानी स्त्री के लक्षणों से युक्त सुन्दर, सुशील एवं सर्वगुण सम्पन्न थी। एक दिन उसने झरोखे से देखा कि महाराजा रामसिंहजी पीहर पक्ष द्वारा दी हुई दासी के साथ मखौल कर रहे हैं, हँसी-मजाक कर रहे हैं। यह दृश्य आँखों से देखा और महाराजा के प्रति मन बदल गया। महाराजा महल में आये, रानी की ओर मुड़े, परन्तु रानी ने मुँह मोड़ लिया। जब पूछा गया कि कारण क्या है तब रानी ने जबाब दिया-''शेर शेरनी को छोड़कर जब गधेड़ी से बात करता है, तब शेर शेरनी के लायक नहीं है।'' यह कहकर रानी ने महाराजा से बोलना छोड़ दिया। कई दिनों तक रानी के नहीं बोलने के कारण महाराजा ने रानी के महल में जाना छोड़ दिया। वह रानी 'रूठा रानी' के नाम से कहलाने लगी। रानी ने जीवनभर तक शील का पालन किया। रानी को समझाने की दृष्टि से मन्त्री, पुराहित, अन्य रानियाँ आदि गईं लेकिन रानी अपने निश्चय पर दृढ़ थी। एक बार एक कामदार अपनी कामुक दृष्टि लिए रानी को समझाने गया। उसके बोलने में मिठास है, सरलता है, सम्मान है, परन्तु विकारी दृष्टि है। विकारी दृष्टि वाले कामदार से रानी ने कहा-''तेरी

नजर कामुक हो तो तेरी आँख में आग लगे।'' उस शीलवती रानी के वचनों का ऐसा प्रभाव हुआ कि कामदार 24 घण्टे के भीतर अन्धा हो गया। जो लोग शीलवती का शील हरण करने जाते हैं, कहना चाहिए कि वे शेर की माँद में प्रवेश करना चाहते हैं अथवा साँप के मस्तक पर रही मणि उतारना चाहते हैं।

ग्रन्थों में तीन प्रकार के पुरुष और तीन प्रकार की नारियों को धन्य कहा है। प्रथम प्रकार की नारी का वर्णन करते हुए कहा गया कि वह नारी धन्य है जो सती-साध्वी है, बाल-ब्रह्मचारिणी है, ब्रह्मचर्य महाव्रत का प्राणप्रण से पालन करने वाली है। चन्दनबाला, ब्राह्मी और सुन्दरी की तरह जीवनभर शीलधर्म की आराधना कर सती-साध्वी के रूप में संयम को स्वीकार कर चलती है। वह पूजनीय है, वन्दनीय है, प्रातःस्मरणीय है। जिनका दर्शन मात्र ही पाप का नाश करने वाला है। दूसरी प्रकार की वे नारियाँ धन्य हैं, जो ब्रह्मचारिणी हैं। घर में रहकर भी ब्रह्मचर्य का पालन करती हैं। पुत्र-पुत्री का प्रसव नहीं करती हैं, सन्तान को जन्म नहीं देती हैं और अपने शीलधर्म के आराधन में सजग रहती हैं। ऐसी ही नारी के विषय में शील की प्रेरक लावणी में भी कहा है-

श्री विजयकुँवर और विजयाकुँवरी नारी।
भर यौवन में पाल्यो शील, कि ममता मारी।।

पति विजयकुँवर के शुक्लपक्ष में कुशील-सेवन का त्याग तो पत्नी विजयाकुँवरी के कृष्णपक्ष में कुशील-सेवन का त्याग था। जब सुहागरात पर दोनों ने आपस में अपने त्याग की बात की तो दोनों अपने आपको धन्य मानने लगे कि सहज ही हमको ब्रह्मचर्य व्रत की आराधना करने का अवसर प्राप्त हो गया। ऐसी विजयाकुँवरी जैसी नारियाँ पुण्यवती, धन्यवती, शीलवती होती हैं।

तीसरे प्रकार की वे नारियाँ धन्य हैं जो पतिव्रता हैं। जो पतिव्रत धर्म को स्वीकार करके चलती हैं। ये पतिव्रता नारियाँ भी पूज्य हैं, धरती के धर्म को बदलने वाली हैं। साँप किसका बाप और आग किसकी माँ? नीति का कथन है कि जो साँप को छेड़ता है, साँप उसे डस लेता है, यहाँ तक कि साँप अपने पालने वाले सपेरे को भी डस लेता है। आग भी किसी की माँ नहीं है। आग में बच्चा हो या बूढ़ा, अबोध हो या ज्ञानी, स्त्री हो या पुरुष, कोई भी हाथ डाले वह उसको भस्म कर देती है। लेकिन पतिव्रता नारियों ने उस आग को भी जल का सरोवर बना दिया। पतिव्रता नारी ने गरम-गरम तवे पर पीपल के पत्ते के साथ अपना हाथ रखा। हाथ जलने की बात तो दूर पीपल का पत्ता भी नहीं जला। पुराने जमाने में ऐसे दण्ड दिये जाते थे, लेकिन शील का बल है तो दण्ड भी आशीर्वाद बन जाते थे। साक्षी देने में झूठ-सच हो सकता है और इस कारण कभी हत्यारा भी साहूकार बनकर निकल सकता है, पर प्रकृति का धर्म बदलने वाला नहीं है। प्रकृति का धर्म शीलवती नारी ही बदल सकती है। मीरा के द्वारा पिया गया ज़हर का प्याला अमृत हो गया। आज भी हो सकता है, जहाँ धर्म है वहाँ धरती का स्वभाव बदल सकता है। धर्म ने तो बहते पानी को रोक दिया है। एक पतिव्रता शीलवती पत्नी नर्मदा नदी के इस पार है और उसका पति नदी के उस पार है। नर्मदा में पानी का बहाव बहुत तेज है, साथ ही वह विस्तार क्षेत्रफल वाली है। वह शीलवती पत्नी कहती है-''तेरे उस छोर पर मेरा पति है, तू रुक जा।'' नर्मदा का पानी बर्फ की तरह सिला की तरह ठोस बन गया। ऐसे आश्चर्य पहले भी हुए हैं, आज भी होते हैं और भविष्य में भी होंगे।

आज मनुष्य शील की मर्यादाओं को छोड़कर चल रहा है। इसलिए कपिल केवली कहते हैं कि वासना प्रेमियों का संग मत करो, बल्कि शीलपालकों का संग करो। शीलवती नारियाँ स्वयं भी धर्म को धारण करती हैं और दूसरों को भी करवाती हैं। मैं कई बार सुनता हूँ कि फलाना की धर्मपत्नी ने घर को स्वर्ग बना दिया है। धर्मपत्नी उसे ही कहते हैं जो घर को स्वर्ग बनाने वाली होती है, धर्म में सहायक बनने वाली होती है, पति को धर्म से जोड़ने वाली होती है। जमीकन्द खिलाने वाली,

रात को भोजन खिलाने वाली, होटलों में ले जाने वाली, भोगों में लगाने वाली धर्मपत्नी नहीं कही जा सकती है, वह तो खुद भी डूबने वाली है और पति को डूबाने वाली है। पिकनिक पर आबू पर्वत जाना हो तो डर नहीं लगता है, पर सामायिक-पौषध करने से डर लगता है, ऐसी धर्मपत्नी नहीं होती है। सती मदनरेखा ने अपने पति युगबाहु की मरणासन्न स्थिति में जिस प्रकार सहायता करके उसकी गति सुधारी, ऐसा सहयोग करने वाली पत्नी ही धर्मपत्नी होती है। पत्नियाँ धर्मपत्नी बनकर श्राविका बनें और पुरुष श्रावक बनें। जो शील का पालन करेंगे वे खुद भी तिरेंगे और दूसरों को भी तिरायेंगे तथा जन्म-मरण के बन्धनों को काटकर सिद्धगति को प्राप्त करेंगे।

■

मम मनोरथ

श्री महावीर एम. गुलेच्छा 'अन्तर्मुखी'

(तर्ज :: तुझे सूरज कहूँ या चन्दा....)

जब अन्त समय हो मेरा, मृत्यु शय्या पर डेरा।
प्रभु एक ही ध्यान हो तेरा, मिट जाय भव-भव फेरा।।तर्ज।।

प्रथम मनोरथ : परिग्रह त्याग (अनासक्ति)

मैं फँसा हूँ जग दल-दल में,
मोह-माया का यहाँ बसेरा।
सब झूठे हैं रिश्ते-नाते,
यहाँ तेरा, न कोई मेरा।
जिस तन पर मैं इतराया,
उसका भी न मिला सहारा।
प्रभु एक ही ध्यान हो तेरा,
मिट जाय भव-भव फेरा।।1।।

दूसरा मनोरथ : संयम भावना (विरति)

इस जग के चक्रव्यूह से,
मैं कब मुक्ति पाऊँगा?
संयम के पथ पर बढ़कर,
निज आतम हित चाहूँगा।
अति शुभ कर्मों के उदय से,
पाया जिनशासन प्यारा।
प्रभु एक ही ध्यान हो तेरा,
मिट जाय भव-भव फेरा।।2।।

तीसरा मनोरथ : संलेखना-संथारा (समाधिमरण)

अन्तिम घड़ी, अन्तिम इच्छा,
जिनवाणी नाद हो घट में,
गुरु मुख से करूँ संथारा,
समाधिमरण हो प्रगट में।
बन भेद-विज्ञान अभ्यासी,
तन माटी, है चेतन मेरा।
प्रभु एक ही ध्यान हो तेरा,
मिट जाय भव-भव फेरा।।3।।

अन्तर-जागरण (अप्रमत्तता)

मैं कुछ नहीं, कुछ नहीं मेरा,
मैं पापी, तू नया सवेरा।
अज्ञान तिमिर में डूबा,
अब तो करो दूर अन्धेरा।
भटका बहु भव-सागर में,
अब तुम ही एक किनारा।
प्रभु एक ही ध्यान हो तेरा,
मिट जाय भव-भव फेरा।।4।।

शाश्वत सुख : मोक्षाभिलाषा

सिद्ध-बुद्ध हुए तुम प्रभुवर,
शाश्वत सुख-मुक्ति निवासी।
चलकर तव पथ पर मैं भी,
बनूँ एक दिन मोक्ष का वासी।
'अन्तर्मुखी' दास हूँ तेरा, हो पूर्ण मनोरथ मेरा।
प्रभु एक ही ध्यान हो तेरा, मिट जाय भव-भव फेरा।।2।।

-बेंगलोर (कर्नाटक)

10 मई 2023
जिनवाणी 18
ISSN 2249-2011

प्रवचन

मेरे जीवन के सर्वस्व गुरु हीरा

भावी आचार्य श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.

भावी आचार्य, महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. द्वारा आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 85वें जन्मदिवस चैत्र कृष्णा अष्टमी विक्रम सम्वत् 2079 दिनाङ्क 15 मार्च, 2023 को पावटा स्थानक, जोधपुर में फरमाए गए इस प्रवचन का संकलन श्री सुमतिचन्दजी मेहता, पीपाड़सिटी ने किया है। **-सम्पादक**

बन्धुओं!

जोधपुरवासियों के लिए कैसा सुखद और सुन्दर संयोग है कि भगवान आदिनाथ के जन्मकल्याणक के अवसर पर हमारे आराध्य गुरुदेव का जन्मदिवस मनाने का अवसर प्राप्त हो रहा है। भगवान ऋषभदेव धर्म के आदिकर्त्ता हैं, उन्होंने साधना-आराधना करके चौरासी के चक्कर से मुक्ति पायी थी और हमारे आराध्यदेव ने अपने जीवन के 84 वर्ष पूर्ण करके 84 के भवभ्रमण को सीमित किया है। एक बार भी सच्ची आराधना हो जाये तो भवभ्रमण सीमित हो जाता है, तब फिर 60 वर्षों से लगातार साधना-आराधना करने और कराने वालों का भवभ्रमण सीमित हो जाये, इसमें कोई आश्चर्य नहीं है।

आज का दिवस गुरुदेव का परिचय देने का है। इन महापुरुषों ने जैसा जीवन जीया और जी रहे हैं उसे व्यक्त करना हमारे सामर्थ्य से बाहर है, मेरे तो ये जीवन-दाता हैं। मेरी आन-बान और शान हैं। मेरे जीवन के प्राण हैं। इनका क्या परिचय दूँ? मेरे तो सर्वस्व ये ही हैं। मेरे ज्ञान के ज्ञानेश्वर, दर्शन के दर्शनेश्वर, चारित्र के चक्रेश्वर और तप के तपेश्वर तथा जीवन के सर्वेश्वर गुरुदेव ही हैं। गुरुदेव के लिए जितना कहा जाए उतना कम है, फिर जब दूसरों के लिए बोलने के समय की मर्यादा है, तब स्वयं मेरे लिए भी है, पर आज का दिन ऐसा है कि बोले बिना रहा नहीं जाता।

प्रसङ्ग रखूँ विक्रम सम्वत् 2026 का आचार्य भगवन्त (उस समय के पण्डित रत्न हीरामुनिजी) का अनन्त उपकारी पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री हस्ती के साथ चातुर्मास नागौर में था। नागौर के लिए कहा जाता है- नगीणा नित का भला। नगीने नगर नागौर में पूज्यश्री विराज रहे थे। पूर्व की पुण्यवानी कहूँ, परिवार के संस्कार कहूँ, गुरुदेव के दर्शन पाने का मुझे सौभाग्य मिला। उस समय गुरुदेव से प्रथम बार मिलाने वाले, प्रथम-परिचय कराने वाले, प्रथम बार गुरु से जोड़ने वाले आराध्य देव (गुरु हीरा) ही थे। परिवार के साथ नागौर दर्शन के लिए गये और आराध्यदेव ने मुझ बालक को गुरु हस्ती के पास ले जाकर मेरा विशेष परिचय करवाया कि-"ये जोधपुर के लोढ़ा परिवार से है, भावना बहुत अच्छी है। वर्तमान में जोधपुर में विराजित पण्डित श्री लक्ष्मीचन्दजी म.सा. के पास ज्ञानार्जन और सेवा सन्निधि में लगे हुए हैं।" इस प्रकार मेरा परिचय कराकर गुरु से जोड़ने वाले ये ही हैं।

ये ज्ञान के ज्ञानेश्वर हैं। मुझे ज्ञान से जोड़ने वाले, ज्ञान में आगे बढ़ाने वाले हैं। ज्ञान पञ्चमी का प्रसङ्ग था और गुरु हीरा ने गुरु हस्ती से निवेदन किया कि भगवन्! इन्हें दशवैकालिक शुरू करवाओ और गुरुदेव की कृपा से वैराग्य का पहला पाठ यहीं से पढ़ा। लोग पूछते हैं आपको वैराग्य कैसे आया और क्या कारण बना? मुझे नहीं मालूम, देने वाले जाने, दिलाने वाले जाने, एक दृष्टि से राग कहो तो गलत नहीं। प्राथमिक स्तर पर गुरु पर अनुराग बुरा नहीं है, क्योंकि यही वीतराग मार्ग पर आगे बढ़ाने वाला बन जाता है।

इस तरह मुझ पर उपकार करके ज्ञान में आगे बढ़ाने का उत्साह जगाया, चारित्र में आरूढ़ करवाने में भी, गुरु हस्ती की कृपा तो थी ही, परन्तु वर्तमान आचार्यप्रवर का सहयोग और सम्बल भी कोई कम नहीं था। मेरे जीवन में

गुरु के प्रति, श्रमण धर्म के प्रति श्रद्धा भरने, देव, गुरु, धर्म के प्रति विश्वास जगाने में भी आराध्यदेव का अनन्त पुरुषार्थ रहा है।

दीक्षा के समय का प्रसङ्ग है। घरवालों का प्रगाढ़ मोह था, जैसा कि सामान्यतया होता ही है। घरवाले जल्दी से आज्ञा देने को तैयार नहीं होते, पर गुरु के एक वचन से माता-पिता दोनों तैयार हो गये। पर भाइयों का मोह अधिक था। भाईसाहब राजा सा रोने लग गये। ऐसा रोये कि मौहल्ले वाले इकट्ठे हो गये। तू दीक्षा लेगा तो मैं भी घर छोड़कर चला जाऊँगा, कमजोर दिल वाला ऐसे समय में पीछे हट जाये। सबसे बड़ा प्रश्न था कि फिर माता-पिता की सेवा कौन करेगा? गुरुदेव उस समय पावटा-पोलो विराज रहे थे, मैं गुरुदेव के पास पहुँचा और सारी बात बतायी, तब पण्डित रत्न हीरामुनिजी (वर्तमान आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.) ने कहा- ''कोई घबराने की जरूरत नहीं है, यह तो भाइयों का मोह है, तुम्हारी परीक्षा है, देख लेना जब समय आयेगा तब सेवा भी यही मोह वाला भाई करेगा।'' हमारे आराध्य भगवन्त श्रद्धाभक्ति के साथ-साथ शक्ति भी जगाने वाले हैं। कैंसर की बीमारी में भी परिवार वालों ने माँ की जो सेवा की, वह एक आदर्श है। माँ के जाने के बाद 14 साल तक लोढ़ा सा रहे, अपने सभी आवश्यक कार्यों को भी गौणकर उनकी पूरी देखभाल एवं सभी तरह की सेवा करके परिवार ने गुरुदेव के वचनों को सही करके दिखा दिया। इस प्रकार गुरु हीरा दर्शन के दानेश्वर हैं।

चारित्र के पर्याय कैसे उज्ज्वल रहे-ऐसी विशिष्ट सजगता गुरुदेव सभी के लिए रखते रहे हैं। दीक्षा के दो-चार वर्ष के पश्चात् गुरुदेव का महामन्दिर विराजना हुआ। परिवार वालों का मोह था, सन्त भगवन्तों की सेवा में दोपहर को समय के पहले बहनें आ गई। गुरुदेव ने कहा-''कोई भी हो, चाहे खास परिवार वाले ही हों बिना समय के बहनें यहाँ सन्तों के पास नहीं बैठ सकतीं।'' वे ही संस्कार आज भी जीवित हैं। मर्यादा से जीवन का रक्षण होता है। हमारे आराध्य देव ने हमारे चारित्र को सँवारा है, सजाया है, चमकाया है और महकाया है। चारित्र निर्मल रहना चाहिये, भले ही व्याख्यान देना आये या नहीं आये। आने वाले भक्तों को रिझाना आये या नहीं आये। यह सब तो चल जाएगा, पर चारित्र की कमजोरी कतई बर्दाश्त नहीं होगी। आराध्य देव ने गुरु हस्ती से शिक्षा प्राप्त की है, लोग कहते हैं- ''महाराज साहब! आपके भक्त यहाँ जाते हैं, वहाँ जाते हैं।'' गुरुदेव कहते हैं कि यदि मेरी इस संयमी चादर में कोई दाग नहीं है तो कोई कहीं भी चला जाये, पर सब मेरे ही अपने हैं। इस संसार से तिराने वाला चारित्र है।

आराध्य देव सन्त-सतियों के चारित्र का भी पूरा ध्यान रखते हैं। चारित्र पालन में सहायक स्वयं के शरीर के अस्वस्थ होने पर भी साध्वीप्रमुखा महासती श्री तेजकँवरजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि वृद्ध या अस्वस्थ सतियों की सार-सम्भाल करते रहते हैं। किसी के अस्वस्थ होने की खबर सुन भी लें तो इस अवस्था में भी गिर्राजजी को देखते ही पूछते हैं, महासतीजी अब समाधि में हैं? उनका स्वास्थ्य अब कैसा है? इस प्रकार का गुरुदेव का वात्सल्य का भाव सभी के प्रति है। उनकी सोच है-मैं सबका और सब मेरे। आराध्य देव सभी के चारित्र को सम्भालते रहते हैं तो साथ ही संघ को भी सम्भालते रहते हैं।

आचार्य देव तप के तपेश्वर हैं। इन महापुरुषों में कितनी महानता है कि सरल भावों से फरमा देते हैं कि भाई! मेरे से तप नहीं होता, पर यूँ देखो तो सबसे बड़ी तपस्या ही गुरुदेव की है और सन्त-सती भी जो तप कर पाते हैं, वे आपकी कृपा का ही प्रभाव है। इस मामले में गुरुदेव पॉवर हाउस सरीखे हैं। मेरे जीवन में मासखमण हुआ तो भी आपके कृपातिशय से ही हुआ। तप बड़ों के आशीर्वाद और सहयोगी सन्तों के सहयोग से होता है। बीजापुर में मासखमण के समय योगेशमुनिजी म.सा., मनीषमुनिजी म.सा. ने जो सार-सम्भाल की वह

काबिले तारीफ़ थी। निर्दोषता का भी पूरा खयाल रखा, कोई जरूरत की चीज यदि दोपहर में चार घर घूमकर भी लानी है तो भी सदैव तत्पर रहते थे। आहार की गवेषणा एवं निर्दोषता का पूरा ध्यान रखते। यह सब गुरुदेव के दिये संस्कार हैं, जो सभी को हर पल, हर क्षण तप-साधना में आगे बढ़ने-बढ़ाने को प्रेरित करते रहते हैं।

गुरुदेव हेतु जितना कहा जाए उतना कम है। सभी संघ चातुर्मासों की विनति कर रहे हैं। जोधपुर वाले भी चातुर्मास घोषणा की प्रतीक्षा कर रहे हैं। कई लोगों को अनुमान है कि आज चातुर्मास खुलेंगे, पर जब भी चातुर्मास खोलने होंगे, खुल जाएँगे, हमें अपनी आराधना उत्साहपूर्वक बढ़ानी है। गुरुदेव के विहार की स्थिति न होने से आप लोगों को लाभ मिल ही रहा है। जो भी संघ विनति करना चाहता है, उसे विनति के लिए आने की जरूरत नहीं है, न ही चातुर्मास घोषणा के लिए आने की जरूरत है, चातुर्मास खुलने के समाचार संघ स्वयं आप तक पहुँचाने वाला है।

जोधपुर वालों के लिए तो बारह माह चातुर्मास है। जोधपुर वालों की भक्ति-सेवा की क्या बात कही जाए। जोधपुर का इतिहास कभी अलग से बताने के भाव हैं। सामान्य सन्त-सती हों या आचार्य महाराज, सभी की तल्लीनता से सेवा करने का जोधपुर का आदर्श उदाहरण है।

गुरुदेव फरमाते रहे हैं कि पिछले 100 सालों से कभी रत्नसंघ के सन्त-सतियों से जोधपुर खाली नहीं रहा। आपकी सेवा-भक्ति अनुमोदनीय है। आज गुरुदेव का जन्मदिवस है, गुरुदेव के जीवन से अनेक प्रेरणाएँ प्राप्त होती हैं। वृद्धावस्था में भी गुरुदेव का पुरुषार्थ अनुकरणीय है, साथ में सन्तों की सेवा एवं तत्परता भी प्रशंसनीय है। ■

होनहार एवं विश्वास

श्री गणपत लाल जैन

मक्खन जैसा मन कठोर इस्पात हो जाता है,
बलिदान देने वाला भी विषधर नाग हो जाता है।
ज़िन्दगी में बुरा वक्त जब आता है, तब
उजालों भरा दिन भी अमावस की रात हो जाता है।।

कर्मों की गुत्थी कभी-कभी सुलझती नहीं है।
कर्मों के आगे किसी की चलती नहीं है।
सात समन्दर पार भी चले जाओ,
होनहार कभी टलती नहीं है।।

बोलो उतना ही कि सुनने वाला ऊबे नहीं,
गाओ उतना ही कि स्वर तुम्हारे टूटें नहीं।
साध लो अपने आपको इतना कि,
कभी कोई भी तुमसे रूठे नहीं।।

जहाँ बेईमानी का अन्त नहीं है,
उस जीवन में बसन्त नहीं है।
मुस्कान भी वहाँ होगी गम भरी,
क्योंकि उसकी बोली सौ टंच नहीं है।।

जहाँ भाई-भाई में विश्वास नहीं है,
वहाँ सुख की सुवास नहीं है।
स्वार्थ की दीवारें यदि खड़ी हो गई है तो,
उस घर का फिर विकास नहीं है।।

बिना मतलब के आज भाई भाई से बात नहीं करता।
बिना मतलब के आज कोई किसी के साथ नहीं चलता।
राजनीति आ गई है आज रिश्तों में भी,
इसलिए आज कोई किसी पर विश्वास नहीं करता।।

-51, जवाहर नगर, गुलाब बाग, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)

10 मई 2023
जिनवाणी 21
ISSN 2249-2011

प्रवचन

साता-सुख की आकांक्षा रखना भोग है

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा सुराणा कटला, महामन्दिर, जोधपुर में 11 नवम्बर, 2017 को फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है। -सम्पादक

बन्धुओं!

जहाँ चक्की में मिर्ची पीसी जा रही है, उसके पास से निकलना हो जाय अथवा कहीं किसी दुकान पर मिर्ची को बोरियों में भर रहे हों, उसके पास से जाना हो तो कुछ-न-कुछ श्वास में विपरीतता आती ही है। लाल भवन जयपुर में अनुभव किया कि चारों तरफ पैट्रोल से निकलने वाला धुआँ श्वास लेने में परेशानी करता है। शुक्ल पक्ष की दूज-तीज को चारों तरफ भयंकर धुन्ध है, आकाश में बादल नहीं होते हुए भी धुन्ध के कारण चन्द्रमा दिखाई नहीं देता है। प्रदूषण के कारण से द्वितीया का चन्द्रमा भी देखा नहीं जाता है। इस प्रदूषण ने नागरिकों की जीवनशैली को प्रभावित किया है। किसी ने बताया कि पचास सिगरेट पीने से जैसा अनुभव होता है, वैसा ही अनुभव दिल्ली शहर में श्वास लेने पर होता है।

हमारे भीतर में एक प्रश्न उठा कि हम प्रदूषण बढ़ाने की दौड़ में शामिल तो नहीं हो रहे हैं? आचार्य भगवन्त (पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा.) का विहार गाँवों में चल रहा है। हम एक बार मूलजी विश्नोई की ढाणी में गए थे। मूलजी कहते थे कि हमारे दादाजी आपके धर्म की पालना करते थे। आचार्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. की प्रेरणा से उन्होंने अठाई की तपस्या की, रात्रिभोजन का त्याग किया। आचार्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. ने वहाँ किसी जैन भाई को चौविहार के प्रत्याख्यान करवाये तो वे बोले-''वाह बाबजी! आपके भक्तों को तो चौविहार नियम बता रखा है, यह हमको क्यों नहीं बताया।'' उन्होंने चौविहार का नियम लिया। यह बात आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा. के व्याख्यान में आई हुई है। मूलजी के पड़पोते को नवकार मन्त्र आज भी याद है। अब तो वह ढाणी बुचेटी के पास एक गाँव बन चुका है। हम तो जब रामचौकी की तरफ जा रहे थे, तब वहाँ ठहरने का काम पड़ा। विश्नोई परिवार ने खूब भावना से आहार-पानी बहराया।

आज जैन समाज गाँव छोड़ रहा है। जैन समाज की लड़की की सगाई गाँव में प्राय: कोई करना नहीं चाहता। आज समाज के लोगों की क्या स्थिति है, आप जानते हैं। शहरीकरण के कारण हर कोई गाँव छोड़कर शहर आना चाहता है, यह भोग के प्रति आसक्ति है। भोग का वातावरण दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। शहर में प्रदूषण के कारण भले ही बीमार पड़ते जायेंगे, पर गाँव में रहना उन्हें मुश्किल लगता है। यह पाँचवाँ आरा है, खराब आरा है, नीचे गिरने का आरा है। इसमें भोगी की भोग-वृत्ति मिट नहीं रही है।

भोग क्या है? दूसरों से सुख चाहना भोग है। जड़ में सुख की आकांक्षा रखना भोग है। शास्त्र कहता है-**भोगी भमइ संसारे।** यहाँ सुबह-सुबह प्रार्थना होती है। प्रार्थना के शब्दों में 'भोगी योगी बन जाते हैं', यह सुना है। हमें तो शब्द सुनाई पड़ते हैं, लेकिन आप स्वयं के बारे में चिन्तन करना। अधिकांश लोग सामायिक करके बैठे हैं। यहाँ कोई पाप नहीं कर रहा है।

जहाँ भोग की इच्छा है, वहाँ पाप होगा ही। वीतराग वाणी सचोट प्रेरणा कर रही है। सुखविपाकसूत्र आप चार महीने से सुनते आ रहे हैं। त्यागी को देखकर त्याग की भावना आती है। त्याग की भावना आने पर

भोगी भी योगी बनने की सोचता है और रागी भी वैरागी बनना चाहता है। जिसके भीतर में मुमुक्षु भाव प्रस्फुटित हो रहे हैं, वह शुभ से शुभ्रता की ओर बढ़ने की सोचता है।

आपने इतिहास का अवलोकन किया हो तो उसमें पृथ्वीराज चौहान का नाम सुना होगा। वे मुहम्मद गौरी से 16 बार जीत गए, लेकिन 17वीं बार छल के कारण युद्ध में हारकर बन्दी बना लिये गये। चौहान को भयंकर यातनाएँ दी गई और इस कारण उनकी आँखों की रोशनी भी चली गई। मुहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज से अन्तिम इच्छा पूछी। पृथ्वीराज चौहान ने अन्तिम इच्छा के रूप में अपने मित्र चंदबरदाई के शब्दों पर शब्दभेदी बाण का उपयोग करने को कहा। सुल्तान गौरी ने स्वीकृति दे दी। चौहान शब्द-बाण की कला जानते थे। शब्द बाण क्या है? शब्दों के माध्यम से चिन्तन कर लक्ष्य पर निशाना साधना शब्द बाण कला है। उसके मित्र चंदबरदाई को बुलाया गया और उसने पृथ्वीराज चौहान से कहा-

चार बाँस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण।
ता ऊपर सुल्तान है, मत चूके चौहान।।

मित्र के शब्दों के अनुसार आकलन कर चौहान ने बाण चलाया। बाण वहीं लगा जहाँ सुल्तान बैठा था। चौहान द्वारा शब्द बाण से मुहम्मद गौरी सुल्तान को मार दिया गया। यहाँ हिंसा की अनुमोदना नहीं की जा रही है, यह तो भाव समझने के लिए दृष्टान्त है। मेरे जीव को उस हिंसा से कुछ लेना-देना नहीं है, पर मुझको यह भव सार्थक करना है और पृथ्वीराज की तरह ही मेरा भी अचूक निशाना मोक्ष का है। अनन्त भवों में पहले से चूक हो रही है, इस कारण यहाँ बैठे हुए हैं। जब तक भोगों की रुचि है, लक्ष्य साधा नहीं जा सकता है। संवत्सरी के दिन खीचड़ा खाते-खाते मोहनीय कर्म को चकनाचूर करने वाले सन्त हुए, यह आप सुन चुके हैं। एक है जो रोटी खाते हुए चारित्र का कोयला कर सकता है और दूसरा है जो केवलज्ञान पा सकता है। एक पहले गुणस्थान में जाकर दुर्गति का अधिकारी बन सकता है तो दूसरा गुणस्थानातीत बन सकता है। हम सोचते हैं- अमुक कितना त्यागी है, वैरागी है। पर हुआ क्या? भोगों की लालसा ने त्यागी को भी भोगी बना दिया। एक जीव जन्म से समकित का गुणस्थान प्राप्त कर सकता है तो दूसरा जीव समकित को खोकर मिथ्यात्व में जा सकता है।

एक है जो कहता है-हम तो खाते-पीते पौषध करेंगे। शब्द ध्यान से पकड़ना। पूर्वाचार्यों ने खाते-पीते पौषध का नाम दया को दिया है। पौषध में आहार-त्याग रूपी मूल तत्त्व निकल गया तो उसके प्राण निकल जाने के समान है। आत्मा का पोषण होना पौषध है। हम तो आज खाते-पीते पौषध करेंगे अर्थात् दया करेंगे, यह बात तय हो चुकी है। आप भाव को पकड़ना। लेकिन उन्होंने भावों की विशुद्धि से उपवास कर लिया। एक ने उपवास किया और अन्य दूसरों ने उपवास नहीं किया।

उपवास करना या नहीं करना, यह भावों पर निर्भर करता है। एक ने पहले तो सोचा नहीं, लेकिन बाद में परिणाम बदल गये कि मुझे उपवास करना है। दूसरा प्रसङ्ग है-एक सन्त ने बेला कर रखा था, उसने यह सोचकर कि मैं दूसरों से अधिक त्यागी कहलाऊँ, इसलिए पारणे के बजाय तेला पच्चक्ख लिया और बाकी सन्तों को पारणा करवा दिया। इन दोनों में एक की भगवान तारीफ करते हुए कह रहे हैं अर्थात् पुष्कली श्रावक के लिए भगवान कहते हैं-''यह सरल है, भद्र है, विनीत है। इसमें अहंकार नहीं है। इसने तो सरलता से उपवास कर लिया।'' दूसरी तरफ उस सन्त ने बेले के पारणे के बजाय तेला कर लिया। उसके भीतर में अपने-आप के लिए कि मैं ऊँचा हूँ, ऐसी भावना थी। उसकी प्रशंसा कोई वीतरागी नहीं कर सकता।

कर्म के पीछे भाव भी होता है। भाव के पीछे विवेक और विवेक के पीछे लक्ष्य होता है। कर्म के पीछे भाव क्या है? अगर रोटी खाने का भाव चल रहा है तो क्या करें? इस शरीर को खिलाना पड़ेगा। साधुपने का पहला लाभ है बिना पाप किए हमारा पेट भर जाता है। आप हमें देखते हैं, हम किसी तरह का पाप नहीं करते

और हमारा पेट भर जाता है।

एक सन्त है। उसके मासखमण का पारणा है। एक मासखमण के बाद पारणे में एक दिन खाना और उसके बाद फिर मासखमण करना। मासखमण के पारणे में एक घर ही जाना। वहाँ मिल गया तो ठीक, नहीं मिला तो फिर मासखमण के प्रत्याख्यान कर लेना। मासखमण के पारणे में सन्त गोचरी को पधारे। घर असूझता मिला। वापस लौट आए। दूसरा मासखमण किया। फिर पारणे के लिए उसी घर जाना हुआ। फिर नहीं मिला तो फिर मासखमण कर लिया। यह प्रसङ्ग गुणसेन एवं अग्निशर्मा का है। गुणसेन राजकुमार था। अग्निशर्मा एक ब्राह्मण के घर जन्मता है। अग्निशर्मा का पेट ढोल की तरह है। हाथ-पैर अगरबत्ती की तरह है। परिवार गरीब तो है ही साथ ही घर में भी तिरस्कार प्राप्त होता है। राजकुमार गुणसेन उसे गधे पर बैठाता है। अग्निशर्मा को गधे पर बैठा कर चालनी का छत्र लगाता है, झाड़ू से चँवर डुलाता है और महाराजाधिराज अग्निशर्मा की जय के जयकारे लगते हैं।

आज कर्म कइयों के बँधते हैं, लेकिन पता नहीं चलता। टी.वी. के सीरियल देखते-देखते न जाने कैसे भाव आते हैं? कैसे कर्म बँधते हैं? कहा जा रहा है कि दुःख का मूल है-भोग। सबको भोग का सुख चाहिए। जब तक साता की आसक्ति है तब तक धर्म की श्रद्धा तक पैदा नहीं होती। साता की आसक्ति टूटती कब है? जब तक पर से सुख चाहिए तब तक आसक्ति नहीं टूटती। तब तक पराधीन-भाव होंगे ही।

सबको साता की चाहना है। घर में सासू-बहू हो या बाप-बेटा, सबको सुख चाहिए। एक दूसरा एक दूसरे की कमी बतायेंगे। आप अपने-आपको टटोल कर देखें। ये सारे नाटक इस जीव ने अनन्त बार कर लिये हैं। यह कपड़ा अच्छा नहीं है, वह अच्छा है। यह खाना माफिक नहीं है, वह बढ़िया है। यह कार ठीक नहीं है, वह चाहिए। यह मकान सुविधाजनक नहीं है, बड़ा चाहिए। हर जगह सुख चाहिए।

सुख चाहने से नहीं मिलता। सुख तो देने की चीज है। साता का सदुपयोग करने वाला सुबाहूकुमार बन सकता है। सुख मिलता कैसे है? विकसित मानव सुख देकर दुःख अपनाते हैं। पराधीनता-अभाव-जड़ता में बुद्धि रखने वाला दूसरों को दुःख देकर क्षणिक सुख का सम्पादन करता है, जबकि विकसित मानव छह काया के जीवों को सुख देकर दुःख अपनाता है।

छह काया के जीवों की रक्षा करने वाले सन्त होते हैं। सन्तों में आचार्य-उपाध्याय विकसित होते हैं। तीर्थंकर तो सर्वश्रेष्ठ हैं ही। दूसरों को सुख देकर ही सुख प्राप्त किया जाता है और दुःख देने से तो सुख भी दुःख में रूपान्तरित होता है। सुबाहुकुमार का प्रसङ्ग चल रहा है। वह शुभ से शुभ्रता की ओर बढ़ रहा है।

आप अभी सब-के-सब शुभ्र वस्त्रों में बैठे हैं। सबसे पहले निषेधात्मक साधना होती है फिर विधेयात्मक। प्राणातिपात विरमण, मृषावाद विरमण, अदत्तादान विरमण, मैथुन विरमण, परिग्रह विरमण इन सबमें निषेधात्मक साधना है। निषेधात्मक और विधेयात्मक साधना में अन्तर है। सप्त व्यसन का त्याग हो और नमस्कार मन्त्र पर आस्था हो, ऐसा प्रत्येक जैन का व्यवहार है। आचार्य भगवन्त ऐसा फरमाते हैं कि सबसे पहले साधना का निषेधात्मक रूप होगा। हिंसा नहीं करूँगा, झूठ नहीं बोलूँगा, चोरी नहीं करूँगा आदि। हिंसा नहीं, झूठ-चोरी नहीं, शराब नहीं, परस्त्री गमन नहीं, वेश्यागमन नहीं। पहले निषेधात्मक साधना को जीवन में साकार करना होता है। फिर विधेयात्मक साधना के रूप में श्रद्धा की जाती है।

हमें बाहर और भीतर दोनों को सम्भालना है। साधना के लिए यह जरूरी है। आज कोई पाकिस्तान में संयम पालना चाहे तो क्षेत्र की प्रतिकूलता से पल नहीं सकता। साधना के लिए सामाजिक व्यवस्था और सुरक्षा अनिवार्य है। मान लीजिए किसी राजा ने निषेध कर दिया कि मेरे राज्य में कोई साधु नहीं रह सकता, तो वहाँ साधु कैसे रहेगा?

हम-सब वीतराग वाणी के रसिक हैं। घटिया सुख छोड़कर बढ़िया सुख मिले, यह भावना रहती है, पर बढ़िया सुख की आकांक्षा नहीं होनी चाहिए।

कल हमारी विस्मृति को लेकर बात चल रही थी। जब सामर्थ्य टूटता है तो नहीं करने योग्य को भी जीव कर बैठता है। आप अभी सामायिक में बैठे हैं। सामायिक में सामायिक की स्मृति नहीं रखी हो तो आप मिच्छामि दुक्कड़ं देते हैं। यही बात छठे व्रत में आती है कि पंथ का सन्देह पड़ने पर आगे चला हो। विस्मृति हो जाती है। कई हैं जो व्रत ले लेते हैं और पच्चक्खाण लेने के बाद पारना भूल जाते हैं। किसी ने नवकारसी पच्चक्खी, मगर पारना भूल गया। याद नहीं रहता तो फिर प्रायश्चित लेने को लोग आते हैं। रात्रि में सोते हुए संथारा पच्चक्खा, सवेरे उठते ही पारना भूल गये। यह स्मृति नहीं रहने से होता है।

सन् 1999 के जून के महीना हम बीकानेर में थे। एक भाई जिसकी दो बहिनों ने दीक्षा ले रखी थी, वह घड़ी में ज्यों ही टन-टन की आवाज सुनता, एक दम शान्त होकर बैठ जाता। वह हर घण्टे में दो मिनट शान्त रहकर 58 मिनट में क्या-क्या गलतियाँ हुईं, उसका प्रतिक्रमण करता। उसकी बहिनें खरतरगच्छ में दीक्षित हुई थी। वह कहता है-''मेरे गुरुजी पन्द्रह दिन में एक प्रवचन देते हैं। मैं गुरु से पूछे बिना धर्म की कोई किताब नहीं पढ़ता।'' वह हर घण्टे दो मिनिट मौन करके अपने आपको देखता है कि मेरे से क्या गलती हुई। हम तो उस भाई से सन् 1999 के बाद नहीं मिले, पर उस भाई के परिवार वाले आते रहते हैं।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के आश्रम में अबनीन्द्रनाथ टैगोर भी हुए। वे चित्रकला में दक्ष थे, प्रवीण थे। नन्दलाल बोस नामक एक चित्रकार उनका विद्यार्थी था। उसने श्रीकृष्ण का बढ़िया-सा चित्र बनाकर गुरु अबनीन्द्रनाथ के चरणों में रखा। गुरु ने उस चित्र को उठाकर फेंक दिया और कहा-''नालायक! ऐसा भी कोई चित्र होता है? तेरे से अच्छा चित्र तो पाटिया लोग बना देते हैं।'' पाटिया लोग पाटी पर चित्र बनाकर गली-गली बेचते हैं।

गुरु ने जब चित्र फेंक दिया तब शिष्य नन्दलाल बोस ने गुरु के पैर छुए और निकल गये। गुरु अबनीन्द्रनाथ का आचरण रवीन्द्रनाथ टैगोर को सहन नहीं हुआ और उन्होंने कहा-''यह चित्र का नहीं, चित्रकार का अपमान है। उस बच्चे की प्रतिभा जगानी चाहिए थी।'' गुरु ने कहा-''मैंने हृदय पर पत्थर रखकर यह काम किया है। उसमें प्रतिभा विकास की अभी बहुत सम्भावनाएँ बाकी हैं, इसलिये मैंने उसकी अच्छी कलाकृति को भी फेंक दिया।''

गुरु से विदा होने के बाद वह नन्दलाल बोस दो-तीन महीने तक पाटियों के बीच घूमता रहा। उनके बीच रहकर उसने अनुभव किया कि मेरे चित्र में रंग था, लेकिन पाटियों जैसा स्वाभाविक प्रेम नहीं था। इसलिये ही मेरे गुरुदेव ने मेरी कला को स्वीकार नहीं किया। बाद में नन्दलाल बोस प्रसिद्ध चित्रकार हुए। यह इतिहास की घटना है।

हममें भी गुरु के प्रति समर्पण होना चाहिए, परन्तु महाराज के पास आने वालों में अधिकांशत: लोग कह देते हैं कि महाराज को सामने देखने तक की फुर्सत नहीं। यह समर्पण नहीं है। **समर्पण की कोई भाषा नहीं होती और समर्पण में कोई अभिलाषा भी नहीं होती।**

वह अग्निशर्मा शरीर की विकृति से टूटा हुआ था, फिर परिवार से रूठा हुआ था और लोगों के व्यवहार से हताश-निराश था। उसने एक महीने से कुछ नहीं खाया। वह एक तापस के वहाँ पहुँचा और दीक्षा ग्रहण कर ली।

उस अग्निशर्मा तापस को घर-परिवार और चौराहे पर भी तिरस्कार मिला। वह मासखमण पर मासखमण करने लगा। आज राजा बना गुणसेन उसे पारणे हेतु निमन्त्रण देने आया। अग्निशर्मा के भीतर में अनुकम्पा की भावना जागी, दीक्षा ग्रहण करने के बाद वह पुरानी बातों को भूल चुका था। पारणे हेतु राजमहल में गया, लेकिन पारणे की जोगाई नहीं बैठी। पुन: दूसरे मासखमण के पारणे में गया तो राजा के पुत्र का

जन्मोत्सव होने के कारण जोगाई नहीं बैठी। तीसरे महीने भी कारण बना। चार महीने के लगातार मासखमण हो गये।

अब अग्निशर्मा तापस का पूर्व वैर जाग्रत हो गया और वह विचारने लगा यह गुणसेन बचपन से ही मेरा शत्रु है, यह मुझे मारना चाहता है, इसने मेरे साथ क्या-क्या किया है? गधे पर बैठाया आदि-आदि।'' तीन महीने तक परिणाम सम्भले रहे, लेकिन अब परिणामों में वैर-भाव जाग्रत हो गया। कब तक सहन करे? आज घर-घर में यही सुनने को मिलता है कि यह हमारी छाती के छोड़े उतार रहा है, इसने कितना बुरा किया? सहन करें तो कब तक करें?

लेकिन याद रखना जब तक मञ्ज़िल नहीं मिलती, सहन करना ही पड़ेगा। सम्पतराजजी डोसी तो कहते थे-

करोड़ पूर्व कोई तप करे, एक सहे जो गाल।
तार्में नफो है घणो, मेटो मन की झाल।।

सुखविपाकसूत्र चेता रहा है। बाहर का प्रदूषण श्वास लेने में बाधक हो रहा है, कहीं धूल-मिट्टी से तकलीफ हो रही है। बोरुन्दा के रास्ते रणसीगाँव तक तथा उधर गोटन तक चूने के भट्टे ही भट्टे हैं। चूने की गन्ध अच्छी नहीं लगती। यह तो बाहर का धुआँ है। वह ज्यादा-से-ज्यादा एक भव खराब कर सकता है, लेकिन भीतर का धुआँ तो जन्म-जन्म बिगाड़ने वाला है।

दुःख का कारण दूसरों को बताना ठीक नहीं है। भोगी जीव सुख की अपेक्षा दूसरों से कर रहा है, जबकि दुःख का कारण दूसरा नहीं, स्वयं है। **'अप्पा कत्ता विकत्ता य'** यह सूत्र कहता है कि मैंने किसी न किसी भव में कोई गलत काम किया है, इसलिए मेरे किये का फल मुझे मिल रहा है।

आचार्यश्री हस्ती की प्रार्थना की कड़ियों में कहा गया है-

औरों के दुःख को दुःख समझूँ, सुख का करूँ उपाय।
अपने सब दुःखों को सह लूँ, पर दुःख सहा न जाय।
दयामय ऐसी मति हो जाय।
त्रिभुवन की कल्याण कामना, दिन-दिन बढ़ती जाय।
दयामय ऐसी मति हो जाए।।

यह गुरुदेव का प्रिय भजन है। सुखविपाक भी यही प्रेरणा करता है। दुःखियों के दुःख को अपना दुःख समझने वाला लक्ष्य प्राप्ति की ओर बढ़ता है।

गुरुवर के आचार का हो गान

श्री धीरज जैन

(तर्ज :: राष्ट्र की जय चेतना का गान, वन्दे मातरम्)

गुरुवर के आचार का हो गान,
हीरा गुरुवरम्
गुरुवर के विचारों का हो ज्ञान,
हीरा गुरुवरम्
वन्दे गुरुवरम्, हीरा गुरुवरम्-2

हस्ती की हस्ती हमारे नाथ,
हीरा गुरुवरम्
मुनि महेन्द्र आचार्य हिए भाये, हीरा गुरुवरम्
संघ को सुदृढ़ किया महान्,
हीरा गुरुवरम्
व्यसन मुक्त हो जीवन यह उपदेश,
हीरा गुरुवरम्
वन्दे गुरुवरम् हीरा गुरुवरम्-2।।1।।

मुखमण्डल पर आभा जिनके सूर्य, हीरा गुरुवरम्
वाणी में शीतलता जैसे चन्द्र, हीरा गुरुवरम्
संयम में अविचल हैं जैसे मेरु, हीरा गुरुवरम्
भक्तों के भगवान जैसे वीर, हीरा गुरुवरम्
वन्दे गुरुवरम्, हीरा गुरुवरम्-2।।2।।

-पुत्र श्री सुमतचन्द जी जैन, वर्धमान नगर, हिण्डौन सिटी, जिला-करौली (राज.)

10 मई 2023
जिनवाणी 26
ISSN 2249-2011

प्रवचन

भक्ति में होती है शक्ति

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा. द्वारा पर्वाधिराज पर्युषण के द्वितीय दिवस पर 25 अगस्त 2022 को महामन्दिर, जोधपुर में फरमाये गए प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है। -सम्पादक

धर्मानुरागी बन्धुओं!

आज पर्वाधिराज पर्युषण पर्व का दूसरा दिन है। आज हम 'करूँ भक्ति-पाऊँ शक्ति' इन शब्दों पर चर्चा करेंगे। आज का दिन श्रद्धा का दिन है। पंचम काल में प्रभु का दीदार दुर्लभ है, पर प्रभु का आधार सुलभ है। श्रद्धा हो तो भगवान से अधिक भगवान का नाम काम करता है। श्रद्धा उज्ज्वल है, समुज्ज्वल है। भक्ति में शक्ति होती है।

भक्त कौन? जो भगवान से कभी विभक्त न हो, वह भक्त है। विभक्त का मलतब है-अलग होना। आप भगवान से या संघ से अलग तो नहीं हैं?

भक्त विनयवान होता है, आस्थावान होता है और श्रद्धावान होता है।

आपका अभी ध्यान कहाँ है, पूछूँ तो....? आपका तो ध्यान साधना के बजाय सिक्कों पर अधिक है। यहाँ पर आपका ध्यान दो चीजों पर हो सकता है, या तो आपका ध्यान सिक्कों पर होगा या फिर सिद्धों पर।

सिक्कों पर ध्यान है, इसका मतलब है आपका ध्यान धन-दौलत पर है। बैठे तो यहाँ हैं, लेकिन ध्यान कहाँ? कैसे मेरा व्यापार-व्यवसाय बढ़े, कहाँ से मुझे ऑर्डर मिल सकता है आदि ऐसे न मालूम कितने-कितने बिन्दुओं पर आपका ध्यान जाता है। यहाँ पर जिनवाणी सुन रहे हैं तो आपका ध्यान सिद्ध भगवान पर जाना चाहिए।

श्रद्धा के बिना ज्ञान अधूरा है। पर्व प्रकृति (स्वभाव) को सुधारने आते हैं और पर्व के कारण प्रकृति (मौसम) भी सुधर जाती है। प्रकृति तो अनुकूल बन रही है, पर हमारी श्रद्धा-भक्ति भी अनुकूल बने। बुद्धि के साथ श्रद्धा जरूरी है। श्रद्धा की न जाति होती है और न ही इसका कोई अन्य विकल्प होता है।

आज व्यक्ति या तो नौकरी करता है या फिर अपना व्यापार चलाता है। जीवन चलाने के लिए कुछ-न-कुछ तो करना ही होता है। एक काश्तकार था जो गाँव में रहता था। उसके मन में आया-चलो, देखते हैं कि फौज में नौकरी मिलती है या नहीं?

उसने एक अनुभवी से पूछा-''मैं फौज में भर्ती होना चाहता हूँ। वहाँ मुझसे साक्षात्कार में कौन-कौन से सवाल पूछे जायेंगे।''

अनुभवी ने कहा-''तू डर मत। पहले कुछ प्रश्नों के उत्तर समझ ले और फौज के इस साक्षात्कार में अधिक तो वे कुछ पूछते नहीं हैं। वे उम्र, अनुभव और वेतन के बारे में सवाल-जवाब करेंगे। आप फौजी के साक्षात्कार में जा रहे हैं, न कि आई.ए.एस., आई.पी.एस. के साक्षात्कार में।''

अनुभवी ने रटा दिया। तुम्हारी उम्र पूछे तो कहना कि तीस वर्ष। अनुभव पूछे तो बता देना कि मेरा दस वर्ष का अनुभव है। तुम पगार कितनी लोगे? यह पूछे तो बोल देना कि भोजन एवं सौ रुपये ये दोनों मिल जायें। किसान के लड़के ने प्रश्न तो याद रखे नहीं, बस उत्तरों को याद रख लिया।

वह किसान का लड़का फौज के दफ़्तर तक पहुँच गया। कैप्टन ने देखा बाहर कोई व्यक्ति खड़ा है। उसे भीतर बुलाया गया और पूछा-''यहाँ क्यों आये हो?''

उत्तर में उस भाई ने कहा-''मैं फौज में नौकरी

करना चाहता हूँ। आप तो मेरा साक्षात्कार ले लीजिए।''

अफसर ने पूछा-''तुम्हारा अनुभव कितना है?''

उसने उत्तर दिया-''तीस वर्ष।''

अफसर ने आश्चर्य किया कि यह तो जन्म से बन्दूक चलाना जानता है। लेकिन वह किसान पुत्र तो रटा-रटाया उत्तर दे रहा था। अफसर ने आगे सवाल किया-''तुम्हारी उम्र कितनी है?'' वह बोला-''दस वर्ष।''

कैप्टन ने सोचा यह तो कोई मूर्ख दिखता है जो इस तरह के उत्तर दे रहा है। उम्र का पूछा तो दस वर्ष और अनुभव पूछा तो तीस वर्ष। उसने झल्लाकर तीसरा प्रश्न पूछा-तुम में से और मेरे में से मूर्ख कौन है? तो वह बोला-दोनों। मेरा कहना यही है कि जब तक ज्ञान के साथ श्रद्धा नहीं जुड़ेगी तब तक लोग आपको मूर्ख कहेंगे और ज्ञान के साथ श्रद्धा जुड़ गई तो आपकी दर्शन विशुद्धि होगी।

हाँ, तो मैं कह रहा था कि भक्त की आँखें भगवान को ढूँढ़ लेती हैं और यदि भक्त की आँख नहीं है तो साक्षात् भगवान को भी नहीं देख पायेगी। भगवान कब दिखेंगे? जब श्रद्धा होगी तो उसे हर क्षण, हर पल भगवान के दर्शन हो जायेंगे। आप कहेंगे-कैसे?

एक जीवन्त उदाहरण डॉ. मार्क कैनन का। जो कि एक कैंसर विशेषज्ञ थे। उन्हें एक बार स्वास्थ्य सम्मेलन में जाना था, किन्तु उड़ान के कुछ समय पहले ही विमान में तकनीकी खराबी आ गई और दूसरा विमान कई घण्टे लेट था। इसलिये उन्होंने एक टैक्सी किराये पर ली। टैक्सी तो मिल गई, पर बिना ड्राइवर के। अत: उन्होंने स्वयं ही टैक्सी चलाने का निर्णय लिया, क्योंकि सम्मेलन में जाना उनके लिए अत्यन्त आवश्यक था। यात्रा के दौरान ही तेज आँधी-तूफान शुरू हो गया और उनके लिए ड्राइविंग कर पाना मुश्किल हो गया। वे रास्ते में रुके और एक पुराने मकान में गए। वहाँ उपस्थित गृहस्वामिनी को उन्होंने अपनी स्थिति के बारे में बताया। गृहस्वामिनी ने उनका आतिथ्य-सत्कार किया और कुछ खाने को भी दिया। उस स्त्री के द्वारा डॉक्टर को भोजन के पूर्व प्रभु स्मरण, प्रार्थना करने को कहा गया। भोजन के पूर्व भजन आवश्यक है। इस पर डॉ. बोला-''मैं इसमें विश्वास नहीं करता।'' फिर वह महिला अपने प्रभु के स्मरण में प्रार्थना में तल्लीन हो गई। उसकी तन्मयता को देख डॉ. बोले-''क्या आपको लगता है कि भगवान आपकी प्रार्थनाएँ सुनेंगे?''

महिला बोली-''एक-न-एक दिन जरूर सुनेंगे।'' पास ही बिस्तर पर लेटे एक लड़के को देखकर डॉक्टर ने पूछा-''यह कौन है?'' तब उस गृहस्वामिनी ने उत्तर दिया-''सर! यह मेरा बेटा है, इसे कैंसर है और इसका इलाज कराने के लिए मेरे पास पैसे नहीं हैं। इसका इलाज मात्र एक डॉक्टर कर सकते हैं और वह है डॉ. मार्क कैनन। मुझे विश्वास है प्रभु जरूर कोई न कोई रास्ता निकालेंगे।'' डॉ. कैनन महिला की बात सुनकर अवाक्, अचम्भित और स्तब्ध रह गया। उसने विचार किया कि देखो प्रार्थना एवं भक्ति कैसे संयोग बिठाती है। वह महिला से बोला-''मैं ही डॉ. मार्क कैनन हूँ और आपके पुत्र का इलाज मैं नि:शुल्क करूँगा और मुझे प्रभु पर विश्वास हो गया है, इसलिए मैं आज से प्रभु प्रार्थना भी करूँगा।''

आप में आत्मा है, वैसा ही हर मनुष्य में आत्मदेव है, इसलिये आपको भगवान दिखाई देंगे। आत्मा और परमात्मा के स्वरूप में भेद नहीं है। कर्म के कारण ही आत्मा और परमात्मा अलग-अलग हैं।

आप श्रद्धा से ओतप्रोत हैं, तो आपको रोम-रोम से भगवान दिखाई देगा। इसलिये हम कहते हैं कि भक्ति में शक्ति होती है। आप में अगर भक्ति है तो आप भगवान को चाहेंगे और आसक्ति है तो फिर आप भगवान से चाहेंगे।

भगवान को चाहना और भगवान से चाहना, इन दोनों में फर्क है। आप इस फर्क को समझिये। आप सद्गुरु और सत्प्रभु को जानकर-समझकर कुछ करने का प्रयास करेंगे तो आप लक्ष्य तक पहुँच सकेंगे।

गुरुदेव फरमाते हैं कि पूर्व में कभी समता संघ में चार दीक्षाओं का प्रसङ्ग बना। चार दीक्षाएँ हो रही हैं,

लेकिन पाँच नाई पहुँच गये। एक नाई उदास बैठा था। वह सोच रहा था कि चारों को तो काम मिल गया, मैं तो बेकार ही बैठा हूँ।

किसी ने पूछा-''भाई! तू उदास क्यों बैठा है?'' नाई बोला-''मुझे काम नहीं मिला।'' यह सुनकर वह भाई बोला-''बस इतनी-सी बात है। ले तू मुझे मुण्ड दे।'' क्या आपकी ऐसी तैयारी है?

गुरु हस्ती जिसमें जैसी योग्यता देखते थे, उसे वैसा ही काम करने को कहते थे। एक बार डी. आर. मेहता साहब गुरु को वन्दन करने आये तो गुरु हस्ती ने कहा-''भाई देवेन्द्र! तुम जीवदया और मानव-सेवा का काम करते हो। इस काम को चालू रखना, करते रहना।''

गुरु हस्ती के द्वारा दी गई प्रेरणा को स्वीकार करके रत्नसंघ के संरक्षक डी. आर. मेहता साहब आज भी परोपकार के कार्यों को तन्मयता से कर रहे हैं। गुरु आज्ञा ही नहीं देता, आज्ञा पालन करने का बल भी देता है। गुरु किसी काम के लिए कहता है तो उसे करने की शक्ति भी देता है। वह चाहे ज्ञानाराधन का काम हो या तपस्या का काम। गुरु की शक्ति से काम पार लगता ही है। आप लोगों ने गुरु हस्ती का जीवन देखा है और गुरु हीरा एवं भावी आचार्यश्री का जीवन देख रहे हो। आप इन महापुरुषों का नाम लेकर तपस्या भी करेंगे तो वह जरूर पार लगेगी।

एक दिन सरस्वती नगर के एक भाई से बातचीत में मेरे मुँह से निकल गया कि तुमने तो शायद गोल्ड पहनने का त्याग कर रखा है। वह भाई बोला-''मैंने त्याग नहीं किया, आज आप नियम करा दें कि मैं जीवन पर्यन्त गोल्ड की कोई वस्तु काम में नहीं लूँगा अर्थात् गोल्ड पहनने का त्याग करवा दो।'' भक्ति हो तो गुरु की हर आज्ञा शिरोधार्य हो जाती है। हम भक्तिपूर्वक आराधना करें.....।

अक्षय तृतीया

श्री मनमोहनचन्द बाफना

प्रभु आदिनाथ भगवान चमके,
आँगणियों जी, आँगणियों।
अक्षय तृतीया आज तपस्वी कर,
कर लेसी पारणियो जी।।

मरुदेवी रा लाल नाभि रा नन्दन है जी, नन्दन है।
पहला तीर्थंकर राज शत शत वन्दन है जी, वन्दन है।
ऋद्धि-सिद्धि ने त्याग राज सुख छोड़यो है जी, छोड्यो है।
संयम कर स्वीकार मौन रो व्रत धारयो जी, व्रत धारियो।
बारह माह आहार प्रभु वर नहीं पायो जी, नहीं पायो।
शिष्य हैं चार हजार हिवड़े सूँ घबराया जी, घबराया।
मौन रहे भगवान चिन्तन कई करनो जी, कई करनो।
सगला ही अणजान आय ने ले शरणो जी, ले शरणो जी।
बैलाँ रो भुगतान मुखड़ा वे बाँध्या जी, वे बाँध्या।
करमाँ री अटकाव अन्न जल नहीं पायो जी, नहीं पायो।
भाँति भाँति री भेंट लावे नर-नारी जी, नर-नारी।
गज घोड़ा स्वर्ण थाल लावे भेटणने जी, भेटण जी।
कर वे लाख प्रयास प्रभु नहीं कुछ लेवे जी, कुछ लेवे।
किण विध संयम पालना नहीं जाण्यो जी, नहीं जाण्यो।
हस्तिनापुर रो पथ प्रभुवर आवे जी, प्रभु वर आवे जी।
अन्तराय रो अन्त अब तो आय गयो जी, आय गयो।
पौत्र श्रेयांस देखाय महल सूँ प्रभु देख्या जी, प्रभु देख्या।
घड़ा भरया शत आठ इक्षुरस बहरायो जी, बहरायो।
उच्च भाव सूँ दान बरसै सोन्नैया जी, जी सोन्नैया।
हम सबरा अरमान तपस्या करवा दो जी, करवा दो।
गणी हीरा पंथ वीतराग सूर्य सम चमके है जी, चमके जी
महेन्द्र मुनि भावी आचार्य नित रो बोध देवेजी, देवेजी।
सन्त सती सूँ उपकार अवसर पायो है जी, पाया है।
तपस्या साधक जयकार आशीष लेलोजी, लेलो जी।
पारणा इन विध आज ऋषभ प्रभु कर लीनो जी, कर लीनो।
'मनमोहन' बार हजार सगलो कुल तिरगयो जी।
कुल तिरगयो जी।

-कानपुर (उत्तरप्रदेश)

10 मई 2023
जिनवाणी 29
ISSN 2249-2011

प्रवचन

अन्तःप्रेरणा जगाएँ

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. द्वारा 25 जुलाई, 2022 को प्रतापनगर, जयपुर में फरमाये गये प्रवचन का आशुलेखन स्थानीय संघाध्यक्ष श्री प्रमोदजी महनोत, जयपुर के द्वारा करवाया गया। **-सम्पादक**

धर्मानुरागी बन्धुओं!

बन्धुओं! अन्तश्चेतना को जगाने में, अन्तर्निहित रहस्यों को उद्घाटित करने में, अध्यात्म भावों को अभिव्यक्ति देने में अन्तः स्फुरणा और अन्तः प्रेरणा का अनुपम योगदान होता है।

प्रेरणा को इत्र की उपमा दी जा सकती है। जैसे इत्र को व्यक्ति दो तरह से लगा सकता है। चाहे तो हम स्वयं लगाएँ या दूसरा कोई हमें लगाएँ, ठीक इसी प्रकार प्रेरणा भी दो तरह से प्राप्त की जा सकती है-1. प्रेरणा स्वतः स्फुरित होती है अथवा 2. दूसरों से भी प्राप्त की जा सकती है। इत्र से तन महकता है, प्रेरणा से जीवन महकता है। इत्र की सौरभ अल्पकालिक, क्षण-भङ्गुर, नाशवान् होती है। प्रेरणा की सौरभ दीर्घकालिक, चिरस्थायी होती है। इत्र से माहौल खुशनुमा बनता है, प्रेरणा से मन मुक्ति की ओर गमन करता है। अन्तःप्रेरणा वह पानी है जो मन रूपी धरती के भीतर रहे बीजों को पनपने का निमित्त बनता है।

अन्तःप्रेरणा ऐसा सिंहनाद है जो चिरकाल से सुप्त चेतना को जगाने में समर्थ है। इसलिए प्रेरणा करें, प्रेरणा करना बन्द नहीं करें। प्रेरणा दो प्रकार से प्राप्त की जाती है। उनमें सर्वप्रथम स्वयं के द्वारा प्रेरणा प्राप्त होना। जिनकी आत्म-चेतना जाग्रत होती है उन्हें दूसरों से प्रेरणा पाकर जाग्रत होने की आवश्यकता नहीं होती है।

जो सुप्त हैं, मोह की मादकता में मुग्ध हैं, कर्त्तव्य-पथ से च्युत हैं, उन्हें जाग्रत करने के लिए दूसरों से प्रेरणा प्राप्त करने की आवश्यकता होती है। दूसरे भी प्रेरणा करने में निमित्त तभी तक बनते हैं जब तक व्यक्ति के भीतर की अन्तःप्रेरणा जाग्रत नहीं हो जाय। अन्तःप्रेरणा जाग्रत होने के बाद बाह्य प्रेरणा प्रभावहीन हो जाती है।

एक पिता अपने पुत्र पर, एक गुरु शिष्य पर, एक शिक्षक विद्यार्थी पर और एक सास बहू पर तभी तक अनुशासन करती है जब तक उनका आत्मानुशासन जाग्रत नहीं हो जाता। आत्मानुशासित व्यक्ति को पराश्रित एवं व्यवस्थागत अनुशासन की जरूरत नहीं होती। वह स्वतः ही अनुशासित होकर जीता है। प्रभु महावीर ने उत्तराध्ययनसूत्र के प्रथम अध्ययन की 16वीं गाथा में फरमाया-

वरं मे अप्पा दंतो, संजमेण तवेण य।
माऽहं परेहिं दम्मंतो, बंधणेहिं वहेहि य।।

अपनी कषाय आत्मा का संयम और तप से दमन करना श्रेष्ठ है। दूसरों के द्वारा वध और बन्धन के द्वारा अनुशासित किया जाना कष्टकारी है। अर्थात् जो अन्तःप्रेरणा से चलते हैं, आत्मानुशासन से जीते हैं, उन्हें पर के बन्धन में बँधने की नौबत नहीं आती। अतः हम अन्तःप्रेरणा को जगाएँ। जिनको अन्तःप्रेरणा प्राप्त होती है वे स्वयंबुद्ध सिद्ध कहलाते हैं। जिनको घटना, निमित्त आदि से जाग्रत होने की प्रेरणा मिलती है वे प्रत्येकबुद्ध सिद्ध कहलाते हैं और जिनको सन्त, ग्रन्थ और पंथ के माध्यम से मोक्ष-पथ, कर्त्तव्य-पथ प्राप्त होता है वे बुद्धबोधित सिद्ध कहलाते हैं।

संसार के प्रत्येक क्षेत्र में प्रेरणा का प्रभाव है। आज जितने भी नित नये विकास एवं आविष्कार हो रहे हैं, प्रगति की गति बढ़ती जा रही है, नये-नये

सृजनात्मक चमत्कार हो रहे हैं, उपलब्धियों के अम्बार लग रहे हैं उन सभी में प्रेरणा की प्रमुखता है। घर से बाजार तक, दुकान, चौपाल, चौराहे, सभी जगह एक-दूसरे को प्रेरणा करते हुए आपको लोग नज़र आ जायेंगे। घर में यदि बच्चा जल्दी जागता नहीं है तो माँ जल्दी जागने की प्रेरणा देती हुई मिलेगी। दुकान पर नौकर/सेवक समय पर नहीं आ रहा है तो सेठ/स्वामी समय-प्रबन्धन की प्रेरणा देते हुए मिलेंगे। शिक्षक विद्यालयों में बालकों को ज्ञानार्जन में समय और श्रम लगाने की प्रेरणा देते हैं तो प्रधानमन्त्री मोदीजी देश को मन की बात रखते हुए स्वच्छ भारत बनाने की प्रेरणा दे रहे हैं आदि। कहने का अभिप्राय यही है सकल संसार प्रेरणाओं का पुञ्ज है।

लोग, श्रावक-श्राविका जब सन्त-मुनिराजों की सेवा में आते हैं तो धर्म के क्षेत्र में आगे बढ़ने की, जीवन सुन्दर बनाने की, माता-पिता-गुरुजन, उपकारी जनों की आज्ञा पालने की प्रेरणा करते देखे जाते हैं। लेकिन महत्त्वपूर्ण है अन्त:प्रेरणा का जगना।

अन्त:प्रेरणा कैसे जगाएँ?

अन्त:प्रेरणा को जगाने के लिए व्यक्ति को सर्वप्रथम अपने भीतर की आवाज़ को सुनना होगा। हमारे भीतर की आवाज़ हमेशा सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् से जुड़ी होती है। अन्तर की राय कभी झूठी नहीं होती, कभी ग़लत नहीं होती।

स्वजन-परिजन मोहावेश में अज्ञान के कारण कभी गलत राय दे सकते हैं, स्वार्थपूर्ति हेतु गुमराह कर सकते हैं, छद्मस्थता के कारण असत्य और अपूर्ण बात भी बता सकते हैं, मगर भीतर की आवाज़ गुमराह के लिए चन्द्रमा के समान, अपंग के लिए लाठी के समान और द्वन्द्व से ग्रसित व्यक्ति के लिए मार्गदर्शक के समान कार्य करती है। अन्त:प्रेरणा को जगाने के लिए सबसे पहले हम विश्वास करें कि मेरे भीतर भी सत्य की गूँज है और उसे मुझे सुनना है।

दूसरा कार्य है-अन्त:प्रेरणा को जगाने के लिए वादा करें-हम जब भी कोई भी कार्य करेंगे, कार्य प्रारम्भ करने से पहले एक बार अन्तर्मन से पूछेंगे। अन्तश्चेतना को बतायेंगे कि मैं यह कार्य करने जा रहा हूँ। आप थोड़े समय में ही देखेंगे कि आपके भीतर से एक अनहद नाद सुनाई देता है, एक आवाज़ स्पष्ट रूप से आती है। उस कार्य को करने के सम्बन्ध में और धीरे-धीरे आपकी अन्तश्चेतना भीतर ही भीतर विकसित हो जाती है। विचार शान्त होने लगते हैं, शुद्ध होने लगते हैं, सात्त्विक होने लगते हैं और सहज होने लगते हैं; यही है अन्त:प्रेरणा का कमाल।

सभा में से प्रश्न-म.सा.! भीतर से कभी-कभी दो आवाज़े आने लगती हैं, समझ ही नहीं आता, क्या सही है एवं क्या गलत?

समाधान करूँ-जब भीतर से दो आवाज़ अलग-अलग रूप में सुनाई पड़े तब उस समय समझें कि चञ्चलता का जोर है। ऐसे समय में कोई भी निर्णय नहीं लेना चाहिए। थोड़ा समय विचारों को शान्त होने दें, उसके पश्चात् आप भीतर से समाधान पायेंगे।

दो आवाज़ में एक आवाज़ मन की होती है और दूसरी चेतना की। एक आवाज़ भीतर जमी हुई धारणाओं की होती है, दूसरी आवाज़ अनन्त गुणधर्मात्मक रूप आत्मा की होती है। एक आवाज़ योग आत्मा की होती है, दूसरी आवाज़ उपयोग आत्मा की होती है। एक बन्धन से युक्त करती है दूसरी बन्धन से मुक्त करती है। मन और आत्मा इन दोनों की आवाज़ में अन्तर पहचानना हो तो उसका सरल मार्ग है-सबसे पहले मन की आवाज़ को पहचानें। मन की आवाज़ को पहचानने का एक सूत्र है-मन हमेशा अनुकूलता ढूँढ़ता है। मन को प्रतिकूलता पसन्द नहीं है। प्रतिकूलता मिलने के साथ ही मन प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। व्यक्ति, वस्तु, स्थान, परिस्थिति सभी क्षेत्रों में मन अनुकूलता ही देखता है। जैसे ही प्रतिकूल वातावरण मिला, मन विपरीत होने लगता है। उदाहरण के रूप में-जैसे आप यहाँ धर्म स्थानक में सामायिक करने आए। अभी उमस हो रही है,

मन तुरन्त कहेगा-सामायिक ऐसी जगह बैठकर करनी है जहाँ हवा के पुद्गल हों, ठण्डी-ठण्डी बयार चल रही हो। यदि आपने यह आवाज़ सुनकर सामायिक उस स्थान पर की तो आपने मन की आवाज़ को प्रधानता दी। अब इसी उदाहरण में आत्मा की आवाज़ का रूप देखिए-आप सामायिक करने आए, स्थान देखा तुरन्त आपका आत्म-विवेक बोलता है-मुझे सामायिक ऐसी जगह करनी है जहाँ बाहर का व्यवधान न हो (मुझे किसी से नहीं और किसी को मुझसे नहीं)।

इस प्रकार हम मन और आत्मा की आवाज़ को समझकर अन्त:प्रेरणा पर विश्वास और वादा करके आगे बढ़े। जितने भी तीर्थंकर भगवन्त होते हैं, वे अन्त:प्रेरणा के धनी होते हैं। जीताचार निभाने हेतु लोकान्तिक देव तीर्थंकर भगवन्तों को संयम के लिए प्रेरित करते हैं मगर तीर्थंकर भगवन्त तो स्व-प्रेरित होकर ही संयम के राजमार्ग पर कदम बढ़ाते हैं।

प्रेरणा कैसे करें?

अन्त:प्रेरणा से जो स्वत: नहीं जगते, उन्हें जगाने के लिए प्रेरणा कैसे करें? प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ने एवं दूसरों को आगे बढ़ाने हेतु प्रेरणा की त्रिपुटी का प्रयोग करें-(1) प्रेम, (2) प्रोत्साहन और (3) पुरुषार्थ।

आप यदि किसी को प्रेरणा कर रहे हैं तो सबसे पहले 'प्रेम' से प्रेरणा करें। उपालम्भ की भाषा में, एक ही तरह के शब्दों में रोज प्रेरणा करने पर उस प्रेरणा का असर नहीं होता। सबसे पहले प्रेरणा उसी बात की होनी चाहिए जिस बात का पालन स्वयं द्वारा किया जा रहा हो। एक प्रसङ्ग प्रचलित है-

एक माँ बच्चे को लेकर सन्त के पास गयी और कहा-महाराज! यह बच्चा गुड़ अधिक खाता है, इसे गुड़ नहीं खाने का नियम करा दो। सन्त ने कहा-7 दिन बाद आना। माँ ने सोचा-महात्मा सात दिन में कोई मन्त्र-ताबीज बनायेंगे, इसलिए 7 दिन का समय माँग रहे हैं। सात दिन बाद वापिस माँ और बच्चा दोनों सन्त के पास पहुँचे। सन्त ने बच्चे से इतना मात्र कहा-बेटा! गुड़ नहीं खाना और एक बार की प्रेरणा के साथ ही बच्चे ने हाथ जोड़कर नियम लेने की सहमति दे दी। माँ के मन में विचार आये-मैंने बेटे से कितनी बार कहा, पर इसने मेरी एक बार भी बात नहीं मानी। माँ के मन में प्रश्न उठा कि महात्माजी ने सिर्फ एक पंक्ति कहने के लिए सात दिन का समय क्यों माँगा?

माँ कुछ पूछे उसके पहले ही सन्त ने उनकी भाव-स्थिति को भाँपते हुए कहा-देखो बहिन! सात दिन पहले तक तो मैं स्वयं गुड़ बहुत खाता था, इसलिए पहले मैंने गुड़ का त्याग किया। अब मैं बच्चे को गुड़ त्याग करने की प्रेरणा दे सकता हूँ और आप देख रहे हैं आपके 100 बार कहने से जो कार्य नहीं हुआ, वही कार्य मेरे द्वारा एक बार कहने से हुआ। प्रभाव मेरा नहीं, प्रभाव त्याग का है। प्रभाव प्रेरणा का है। प्रभाव प्रेम से समझाने का है।

अक्सर घरों में देखा जाता है-घर की प्रमुख बहिनें भाइयों को, बच्चों को प्रेरणा तो करती हैं, मगर उनकी प्रेरणा का असर नहीं होता। क्योंकि उनकी प्रेरणा में उलाहना होती है, उपालम्भ होता है, उत्साहित करने की भाषा नहीं, उदास करने की भाषा होती है जिसके कारण प्रेरणा का प्रभाव नहीं होता।

दूसरों को प्रेरणा करने में सबसे पहले प्रेम का प्रयोग हो, प्रेमयुक्त भाषा हो। प्रेम से कही हुई कड़वी बात भी फलदायी बन जाती है और उपालम्भ भरे शब्दों में कही हुई हितकारी बात भी हँसी में उड़ा दी जाती है। प्रेम हो जिसकी बोली में, सारा संसार उसकी झोली में। प्रेम के साथ प्रोत्साहन हो अर्थात् प्रेमपूर्वक प्रेरणा की गई और सामने वाले ने आपसे प्रेरणा पाकर यदि कोई श्रेष्ठ कार्य किया है तो साथ-साथ उसे प्रोत्साहन भी दो। उत्साह-वर्धन के लिए, आन्तरिक शक्ति को और आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन विटामिन का काम करता है। अक्सर ऐसा देखा जाता है कि घर में बच्चे से एक गलती हो गई, तुरन्त घर के सभी सदस्य उसे सुनाने को, ताने मारने को तैयार हो जाते हैं और जब वही बच्चा कोई श्रेष्ठ परिणाम लेकर आता है, श्रेष्ठ कार्य करके आता

है, तब बच्चे को धन्यवाद देना, दो मीठे शब्द कहना, पीठ थपथपाना भूल जाते हैं। यदि ऐसा व्यवहार बच्चों को मिलता है तो ऐसे बच्चों पर नकारात्मकता बहुत शीघ्र हावी हो जाती है। जैसे गलती होने पर उपालम्भ देना बड़ों का कर्त्तव्य है तो श्रेष्ठ कार्य करने पर प्रोत्साहित करना भी बड़ों का धर्म है।

खुद की प्रशंसा और दूसरों की निन्दा करने का अवसर आने पर हमारी जीभ लम्बी हो जाती है और खुद की निन्दा और दूसरों की प्रशंसा के वक्त छोटी हो जाती है। प्रोत्साहन देने का अर्थ सिर्फ पैसा या उपहार देना ही नहीं होता। प्रोत्साहन का सटीक अर्थ होता है-आपने ऐसा श्रेष्ठ कार्य किया जिसको देखकर हम गौरवान्वित हैं, साथ ही आपका श्रेष्ठ कार्य हमारे भीतर भी ऐसा श्रेष्ठ कार्य करने की प्रेरणा दे रहा है। आपने श्रेष्ठ किया, हम भी श्रेष्ठ कार्य करेंगे यह प्रेरणा लेना ही सम्यक् प्रोत्साहन देना है। प्रोत्साहन में कई बार ऐसा भी देखा जाता है जिसमें सामने वाले को प्रोत्साहित करते हुए और आगे बढ़ने की प्रेरणा दी जाती है। जैसे-आपने कार्य बहुत अच्छा किया है, इस कार्य को और अच्छा हम इस तरह से कर सकते हैं जिससे हमारे कार्य में और चार चाँद लग जायेंगे। इस प्रकार की प्रेमभरी, प्रोत्साहन भरी वाणी से प्रेरणा की जाय तो मैं समझता हूँ, घर-घर में हो रही महाभारत बन्द होकर रामायण शुरू हो जाय।

महाभारत एक के दो करती है और रामायण दो को एक करती है। हमें तय करना है कि घर में क्या चाहिए? क्या सारा-सारा दिन मोबाइल में लगे हो, थोड़ी देर मेरे से बात करो, जब देखो मोबाइल, मोबाइल ही मोबाइल, क्या लगा रखा है? समझ नहीं आता ? इस प्रकार की पंक्तियाँ घर-परिवार में आम है।

आप देखिए, इन वचनों में प्रेरणा तो है पर प्रेम और प्रोत्साहन का अभाव है। यदि इन वचनों में प्रेम और प्रोत्साहन का भाव जुड़ जाए तो प्रेरणा पुरुषार्थ को जगा देती है।

कब से काम कर रहे हो, थोड़ा विश्राम कर लो यदि यह पंक्ति प्रेम से बोल दी जाय तो सामने वाले के दिल को छू जाती है और वह आपकी प्रेरणा को ध्यान से सुनने को तैयार हो जाता है। अन्यथा प्रेरणा कर्पूर की तरह उड़ जाती है।

प्रेरणा की त्रिपुटी में प्रेम, प्रोत्साहन हमें दूसरों से मिलता है, पुरुषार्थ हमें स्वयं करना होता है। प्रेरणा से ही पुरुषार्थ जाग्रत होता है। पुरुषार्थ तो स्वयं जीव को ही करना पड़ता है। कई जगह यह देखा जाता है कि प्रेरणा करने पर जब सामने वाला सुनने को तैयार नहीं, समझने को तैयार नहीं, बदलने को तैयार नहीं तब प्रेरणा करना बन्द कर दिया जाता है। यह सही नहीं है। प्रेरणा करना बन्द नहीं करना चाहिए। प्रेरणा करने का तरीका बदलना होगा। तरीका सही, तरक्की सही। यदि हम जीवन में, घर-परिवार में तरक्की चाहते हैं तो तरीका बदलें। तरीका तो हम बदलना नहीं चाहते और सपने तरक्की के देखते हैं। ऐसे तो तरक्की तीन काल में भी सम्भव नहीं है।

आप देखिए पेड़ के जीव को। पेड़ उसी ओर अपनी जड़ें फैलाता है जिस ओर नमी होती है। यदि मार्ग कंकरीला-पथरीला चट्टान आ जाए तो पेड़ मार्ग बदलता है, लक्ष्य नहीं। तरीका बदलता है मञ्ज़िल नहीं, चट्टान को घेरकर आगे बढ़ता है और पानी के पास पहुँच जाता है। हम भी प्रेरणा करने के तरीके में परिवर्तन करें, प्रेरणा अवश्य कारगर सिद्ध होगी।

आज हमने जाना कि प्रेरणा प्रभावी तब होती है जब उसके साथ प्रेम हो, प्रोत्साहन हो और पुरुषार्थ हो। अन्त:प्रेरणा साधना के पथ पर आगे बढ़ाती है। आज तक जिनशासन में जितने भी साधकों ने प्रवेश लिया है उनमें अन्त: प्रेरणा या दूसरों से प्राप्त हुई प्रेरणा का ही प्रभाव है। धर्म करने के तीन रूप हैं-करना, कराना और अनुमोदन करना। इन तीन प्रकार में मध्य का प्रकार प्रेरणा का ही है।

सत्कार्य हम स्वयं करें, दूसरों से करवायें और करने वालों की अनुमोदना करने में तत्पर रहें। इन्हीं शुभभावों के साथ.....

■

10 मई 2023
जिनवाणी 33
ISSN 2249-2011

शोधालेख

संस्कृत साहित्य के अध्ययन में प्राकृत भाषा के प्रशिक्षण की प्रासङ्गिकता

डॉ. सुषमा सिंघवी #

भारतीय भाषाओं में प्राकृत-भाषा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। भाषा वैज्ञानिकों ने भारत-ईरानी-भाषा के परिचय के अन्तर्गत भारतीय आर्यभाषा परिवार का विवेचन किया है। प्राकृत इसी भाषा-परिवार की एक आर्य भाषा है।

वस्तुत: प्राकृत किसी एक भाषा का नाम नहीं होकर एक भाषिक समुदाय है। प्राकृत अनेक जनभाषाओं का समूह है। प्रदेश और जातिगत सीमाओं से परे प्राकृत-साहित्य ने पूर्व से मागधी, उत्तर से शौरसेनी, पश्चिम से पैशाची, दक्षिण से महाराष्ट्री प्राकृतों को स्वीकार किया।

संस्कृत, कन्नड़, तमिल आदि भाषाओं के अनेक शब्द प्राकृत साहित्य की भाषा के शब्दों से मेल खाते हैं। आधुनिक अनेकानेक प्रादेशिक भाषाओं और बोलियों जैसे-राजस्थानी, सिन्धी, पंजाबी, गुजराती, मैथिली, उड़िया, बुन्देली आदि में प्राकृत भाषा के अनेक शब्द आज भी प्रयुक्त हो रहे हैं।

यद्यपि भाषा और बोलियों की विविधता और परिवर्तनशीलता प्राकृत भाषा के अध्येताओं के लिए चुनौतीपूर्ण प्रश्न उपस्थित करती रही है, तथापि गुणवत्ता और परिणाम दोनों दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण एवं विशाल प्राकृत भाषा-साहित्य एक ऐसी धरोहर है जिसका संरक्षण-संवर्धन जरूरी है। प्राकृत भाषा का पठन-पाठन-लेखन, स्वाध्याय-शिक्षण-प्रशिक्षण सभी कुछ भारतीयता की पहचान के लिए अनिवार्य है, साथ ही भावी पीढ़ी के मार्गदर्शन के लिए प्रासङ्गिक और महत्त्वपूर्ण है।

प्राकृत जनभाषा रही है। इसे जैनों की भाषा तथा जैनधर्म-दर्शन की भाषा मानकर इसकी उपेक्षा नहीं होने देना चाहिये, क्योंकि प्राचीन तथा अर्वाचीन साहित्यकारों ने ऐसा कभी नहीं माना।

संस्कृत और प्राकृत भाषाएँ सहोदरा की तरह पनपी हैं, साथ-साथ साहित्य में प्रयुक्त हुई हैं। संस्कृत साहित्य और प्राकृत साहित्य का अभिन्न सम्बन्ध रहा है। साहित्य के क्षेत्र में संस्कृत एवं प्राकृत भाषाओं की प्रतिष्ठा ने समाज के सभी वर्गों को पाथेय दिया-**प्राकृतं संस्कृतं चैव चातुर्वर्ण्य-समाश्रयम्।**[1] इस दृष्टि से संस्कृत-साहित्य को समझने के लिए प्राकृत-भाषाओं का ज्ञान होना प्रासङ्गिक होगा।

संस्कृत और प्राकृत का अटूट सम्बन्ध है। गाहासत्तसई की गाथाओं, गुणाढ्य की वड्ढकहा; भास, अश्वघोष, कालिदास, श्रीहर्ष आदि महाकवियों के संस्कृत नाटकों से लेकर दो सदी पूर्व तक के नाटकों में वह सम्बन्ध देखा जा सकता है। संस्कृत नाटककारों ने अपने पात्रों में प्राकृत भाषा को जीवित रखा और प्राकृत भाषा की गुणवत्ता और व्यापकता का दिग्दर्शन कराया।

ईस्वी की 9वीं शती से 17वीं शती के प्रसिद्ध

(1) एमरिटस प्रोफेसर, प्राकृत एवं संस्कृत विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय), लाडनूँ (राजस्थान), (2) पूर्व अध्यक्ष, राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर, कला-साहित्य संस्कृति-पुरातत्त्व विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर (राजस्थान)

संस्कृत अलंकार शास्त्रियों, काव्यशास्त्रियों, छन्दशास्त्रियों ने लक्षण ग्रन्थों और काव्यशास्त्रों में प्राकृत गाथाओं के अनेक उद्धरण देकर यह सिद्ध कर दिया कि प्राकृत भाषा और उसमें रचित साहित्य के ज्ञान के बिना संस्कृत-साहित्य को समझा नहीं जा सकता है।

महाकवि हाल द्वारा रचित 'गाहासत्तसई' महाराष्ट्री प्राकृत भाषा में रचित एक मुक्तक काव्य है, जो शृङ्गार प्रधान सरस 700 गाथा छन्द के पद्यों का संकलन है। इसे 'गाथासप्तशती' संस्कृत नाम से भी जाना जाता है। इसमें संकलित गाथाओं तथा सेतुबन्ध, गउडवहो आदि ग्रन्थों के प्राकृत पद्यों की भाषा और काव्यात्मक विशेषताओं के कारण ही उन्हें दण्डी, रुद्रट, आनन्दवर्धन, भोजराज, मम्मट, हेमचन्द्र, पण्डितराज जगन्नाथ आदि दिग्गज साहित्य शास्त्रियों ने अपनी रचनाओं में उद्धृत किया।

महाकवि कालिदास ने 'सुखग्राह्यनिबन्धन' कहकर प्राकृत-काव्य की प्रशंसा की है। गाहासत्तसई में स्वयं हाल ने प्राकृत-काव्य को अमृतरूप कहा है-'अमिअं पाइअकव्वं'[2] वज्जालग्ग में जयवल्लभ ने प्राकृत काव्य को 'देशी शब्द भण्डार, मधुरवर्णविन्यास, ललित छन्द तथा स्फुट-विकट एवं प्रकट अर्थगरिमा से सम्पन्न तथा पठनीय' कहा है।[3]

ऐसी समृद्ध प्राकृत भाषा के सालङ्कार, विशुद्ध, अग्राम्य, गाथा रत्न यदि संस्कृत रचनाओं के लिए उपजीव्य रहे हों तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं। संस्कृत और प्राकृत भाषा का सह-सम्बन्ध पुरातन परम्परा से रहा है।

डॉ. हरिराम आचार्य ने 'गाथासप्तशती' के (हिन्दी काव्यानुवाद) के पूर्वभाष्य में लिखा है कि गाहासत्तसई की 325 से अधिक गाथाओं को

संस्कृत काव्यशास्त्रों में गाहासत्तसई से उद्धृत गाथाएँ

क्र.सं.	काल	ग्रन्थकार	ग्रन्थ	उद्धृत गाथा संख्या
1.	9वीं शती ईस्वी	आनन्दवर्धन	ध्वन्यालोक	15
2.	9वीं शती ईस्वी	कुन्तक	वक्रोक्तिजीवित	2
3.	10वीं शती ईस्वी	धनञ्जय	दशरूपक	8
4.	10-11वीं शती ईस्वी	भोजदेव	सरस्वतीकण्ठाभरण	123
5.	11-12वीं शती ईस्वी	मम्मट	काव्यप्रकाश	7
6.	12वीं शती ईस्वी	हेमचन्द्र	काव्यानुशासन	16
7.	11-12वीं शती ईस्वी	रुय्यक	अलंकारसर्वस्व	4
8.	12वीं शती ईस्वी	मंखक	साहित्य मीमांसा	20
9.	12वीं शती ईस्वी	शोभाकर मिश्र	अलंकार रत्नाकर	45
10.	12वीं शती ईस्वी	नरेन्द्रप्रभसूरि	अलंकार महोदधि	22
11.	13-14वीं शती ईस्वी	विश्वनाथ	साहित्यदर्पण	6
12.	15वीं शती ईस्वी	गोविन्द ठक्कुर	काव्य प्रदीप	7
13.	16वीं शती ईस्वी का अन्त	विश्वेश्वर	अलंकार कौस्तुभ	53

विभिन्न (लगभग 90) अलंकारों, रससिद्धान्तों, रसाभासों तथा नायिकाभेदों आदि के उदाहरणों के रूप में उद्धृत किया गया है। भोज तो गाहासत्तसई की गाथाओं को उद्धृत करते थकते नहीं है, सरस्वती-कण्ठाभरण में उन्होंने 123 प्राकृत भाषा की गाथाएँ उद्धृत की है।[4] विद्यार्थी संस्कृत काव्य पढ़ते समय प्राकृत-भाषा में इतने उद्धरणों को कैसे समझेंगे, यदि वे प्राकृत भाषा के पाठ्यक्रम को नहीं पढ़ेंगे?

प्राकृत भाषा में रचित वड्ढकहा के संस्कृत अनुवाद लिखे गये, जिससे वड्ढकहा की भाषा का महत्त्व प्रकट होता है। प्रथम शती ईस्वी के महाकवि गुणाढ्य प्रतिष्ठानपुर के अधिपति सातवाहन की सभा में प्रतिष्ठित थे। पैशाची प्राकृत भाषा में एक लाख श्लोकों में लिखी उनकी वड्ढकहा (बृहत्कथा नाम से प्रसिद्ध) अद्भुत अर्थ वाली थी- 'भूतभाषामयीं प्राहुरद्भुतार्थां बृहत्कथाम्।' ऐसी मान्यता है। दण्डी ने भी ऐसा कहा है। बाणभट्ट ने भी कहा है-

समुद्दीपितकन्दर्पा कृतगौरीप्रसाधना।
हरलीलेव नो कस्य विस्मयाय बृहत्कथा।।

धनञ्जय, त्रिविक्रम और गोवर्धनाचार्य आदि ने बृहत्कथा की स्मृति एवं प्रशंसा की है। आज अनुपलब्ध प्राकृत भाषा में रचित वड्ढकहा के संस्कृत में तीन अनुवाद प्रकाशित है-

(अ) बुधस्वामी कृत बृहत्कथाश्लोक संग्रह।

(ब) महाकवि क्षेमेन्द्रकृत बृहत्कथामञ्जरी।

(स) सोमदेव भट्ट कृत कथासरित्सागर।

इस प्रकार प्राकृत साहित्य ने संस्कृतज्ञों को बहुत प्रभावित किया। इस दृष्टि से प्राकृत भाषा को सीखना-सिखाना आज भी अत्यन्त प्रासङ्गिक है।

संस्कृत नाटकों के आलोडन से भी यह बात समझ में आती है कि संस्कृत और प्राकृतभाषा के सहसम्बन्ध की परम्परा के निर्वाह हेतु प्राकृत भाषा के शब्दों और वाक्यों तथा साहित्य का अध्ययन प्रासङ्गिक है। महाकवि भास के मृच्छकटिकम् संस्कृत नाटक में संस्कृत के साथ विविध प्राकृतों के प्रयोग द्वारा उच्च, मध्यम तथा साधारण सभी वर्गों के पात्रों के यथार्थ चित्रण को भाव और प्राकृत की विविध जनभाषाओं के माध्यम से प्रस्तुत कर तत्कालीन समाज का वास्तविक एवं सजीव चित्र उपस्थित किया गया है।

एक तरफ संस्कृतभाषी द्विज सार्थवाह चारुदत्त, राजा पालक, न्यायाधीश आदि उच्चवर्गीय पात्र हैं तो दूसरी ओर धूर्त-चोर, जुआरी-चेट, चाण्डाल आदि वर्णों के संवाद जनभाषा रूपी प्राकृतों में दिये गये हैं। सामाजिक स्थिति को चित्रित करने का तरीका यह भी है कि अधिकारी, राजनीतिज्ञ, प्रभावशाली तथाकथित उच्चवर्ग को व्याकरण-अनुशासनबद्ध संस्कृत भाषा के संवाद दिये जायें और आम जनता तथा पीड़ित एवं कुव्यसनियों के लिए विविध प्राकृतों की मुहावरेदार भाषा का प्रयोग किया जाय।

मृच्छकटिक में चार भाषाओं-शौरेसनी, आवन्ति, प्राची, मागधी तथा चार अपभ्रंश भाषाओं-शकारी, चाण्डाली, शाबरी और ढक्की का प्रयोग हुआ है। कुछ विद्वान् उक्त चार प्राकृतों को अर्द्धमागधी, बाह्लीक, दाक्षिणात्य मिलाकर सात प्रकार की (प्राकृतों) जन बोलियों का प्रयोग मानते हैं।

मृच्छकटिकम् संस्कृत नाटक के पुरुष पात्रों में रंगमञ्च पर उपस्थित और अनुपस्थित को मिलाकर 31 लोग हैं तथा 8 स्त्री पात्र हैं। इन पात्रों में से 11 पात्र शौरसेनी प्राकृत भाषा, दो आवन्ति भाषा, विदूषक प्राच्य भाषा, छह पात्र मागधी प्राकृत भाषा, शकार शकारी भाषा, चाण्डाल चाण्डाली भाषा तथा माथुर और द्यूतकर ढक्की भाषा में बोलते हैं।

स्पष्ट है कि प्राकृत भाषा के ज्ञान के बिना नाटक के संवाद नहीं समझे जा सकते, अतः तदर्थ प्राकृत भाषा सीखना अनिवार्य है।

यही स्थिति अन्य संस्कृत नाटकों की है। भास

विरचित स्वप्नवासवदत्तम् में 8 पुरुष पात्र और 13 स्त्री पात्र हैं। संस्कृत की अपेक्षा प्राकृत बोलने वाले पात्र इसमें भी अधिक हैं।

कालिदास के नाटकों में मालविकाग्निमित्रम् में 9 पुरुष पात्रों और 13 स्त्री पात्रों में से 14 पात्र प्राकृत भाषा ही बोलते हैं।

विक्रमोर्वशीयम् नाटक के 11 स्त्री पात्र तथा प्राय: 12 पुरुष पात्रों में भी माणवक-विदूषक और वेधक-किरात आदि 3 पुरुष पात्र भी प्राकृत भाषा में संवाद करते हैं।

संस्कृत नाटक अभिज्ञानशाकुन्तलम् में भी संस्कृत प्राकृत दोनों भाषाओं का प्रयोग है, 18 पुरुष पात्र तथा 12 स्त्री पात्र हैं। इस नाटक में प्राकृत भाषा में सरल-सरस गीतों का माधुर्य भी है।

संस्कृत नाटकों की प्रस्तावना में सूत्रकार संस्कृत भाषा का प्रयोग करता है और नटी सदा आम जनता का प्रतिनिधित्व करती हुई प्राकृत भाषा में ही प्रस्तुत किये जाने वाले नाटक की सूचना देती है।

श्री हर्ष विरचित 'नागानन्दनाटकम्' के 13 पुरुष पात्रों में से भी विदूषक, विट, चेट, किङ्कर के कथन प्राकृत भाषा में हैं तथा शेष 9 पुरुष पात्र सूत्रधार, नायक, तपस्वी, मित्रावसु, कञ्चुकी, गरुड़जी, शंखचूड़, जीमूतकेतु, सुनन्द, प्रतीहारी संस्कृत में सम्भाषण करते हैं। 8 स्त्री पात्रों में से केवल एक पात्र गौरी के अतिरिक्त सभी प्राकृत भाषा का प्रयोग करती हैं।

श्रीहर्ष रचित रत्नावली नाटिका के 8 पुरुष पात्रों में से 2 पुरुष पात्र (विदूषक और ऐन्द्रजालिक) तथा 9 स्त्री पात्रों में से एक प्रतीहारी-वसुन्धरा को छोड़कर सभी पात्र प्राकृत भाषा बोलकर अभिनय करते हैं।

इस प्रकार महत्त्वपूर्ण सामाजिक पात्रों तथा आम नागरिकों की मूल जनभाषा प्राकृत को पढ़े और समझे बिना कवि के नाटकीय मन्तव्य को हृदयंगम करना सम्भव नहीं है।

अत: मेरा सुझाव है कि देश के सभी संस्कृत अध्यापकों, प्राध्यापकों, शोधार्थियों तथा विद्यार्थियों के लिए अल्पावधि के प्राकृत भाषा शिक्षण-प्रशिक्षण सम्बन्धी प्रारम्भिक पाठ्यक्रमों में सर्टिफिकेट, डिप्लोमा आदि करना अनिवार्य होना चाहिये। प्राकृत शिविर (अल्पकालीन) लगाने चाहिये।

संस्कृत नाटकों और काव्य शास्त्रों में लिखित मूलभाषा संस्कृत और प्राकृत दोनों का अध्यापन कराना अनिवार्य होना चाहिये। अन्यथा संस्कृत नाटकों और काव्यशास्त्र आदि की प्राकृत भाषा के संस्कृत रूपान्तर का प्रयोग उस साहित्य के अध्ययन-अध्यापन के नाम पर वञ्चना होगी।

पाद-टिप्पण

1. भरतमुनि : नाट्यशास्त्र, 18.28
2. गाहासत्तसई, 1.2
3. वज्जालग्ग, 1028
4. हरिराम आचार्य (सम्पादक एवं हिन्दी काव्यानुवाद) : 'गाथासप्तशती', प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर, 1989, पूर्वभाष्य पृष्ठ (xxvii)

-डी-1, जैन कुञ्ज, गोपालबाड़ी, जयपुर-302001 (राजस्थान)

निवेदन-प्रतिमाह गजेन्द्र निधि, गजेन्द्र फाउण्डेशन और संघ-सेवा-सोपान के अन्तर्गत संघ के कई सदस्यों से निरन्तर फण्ड प्राप्त हो रहा है। संघ-सेवा में योगदान देने वाले प्रत्येक सदस्य को संघ साधुवाद ज्ञापित करता है। जो भी सदस्य अपना फण्ड सीधे बैंक में जमा कर सहयोग दे रहे हैं, वे अपनी जमापूँजी का पूर्ण विवरण (मय पता, पेन कार्ड, मोबाइल नं.) मोबाइल नं. 9867325842 के व्हाट्स एप्प अथवा absjrhssangh@gmail.com पर भिजवाएँ, जिससे समय पर आपश्री की सेवा में रसीद प्रेषित की जा सके।

-महेन्द्र कुम्भट, कोषाध्यक्ष-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

10 मई 2023
जिनवाणी 37
ISSN 2249-2011

मन्थन

ब्रह्मचर्य व्रत के अतिचार : एक विमर्श

डॉ. दिलीप धींग

जैनाचार में श्रावक-श्राविका के लिए बारह व्रतों की व्यवस्था है। इनमें पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत हैं। प्रत्येक व्रत के पाँच-पाँच अतिचार बताए गये हैं। इस तरह बारह व्रतों के साठ अतिचार होते हैं। समझने, समझाने और निभाने की दृष्टि से सिद्धान्तों की संख्या का निर्धारण बहुत उपयोगी होता है। इनमें सीमित संख्या के माध्यम से असीमित अर्थबोध और भावबोध कराया जाता है। बारह व्रत और इनके अतिचारों में भी यही शास्त्रीय शैली अपनाई गई है।

व्रत-व्यवस्था में क्रमबद्ध और सूक्ष्म चिन्तन दिया गया है। हिंसादि पाप तीन योग और तीन करण से होते हैं। तीन योग हैं-मन, वचन और काया। तीन करण हैं- पाप स्वयं नहीं करना, दूसरों से नहीं करवाना और पाप का अनुमोदन नहीं करना। इनके कुल 49 भेद बनते हैं। श्रावक के लिए अधिकतर व्रत दो करण, तीन योग से अनुपालनीय बताये गये हैं। कुछ व्रत एक करण, एक योग से अनुपालनीय हैं। अणुव्रत के अनुपालन से व्यक्ति संयम, मर्यादा और अनुशासन का सम्मानित जीवन जीता है। आगम-ग्रन्थों में व्रतों के निरतिचार यानी पूर्ण निर्दोष पालन पर जोर दिया गया है। स्थानांग सूत्र में व्रत-खण्डन के चार चरण बताए गए हैं-

1. **अतिक्रम**-व्रत की परिधि तोड़ने का मानसिक संकल्प।
2. **व्यतिक्रम**-व्रत तोड़ने के लिए सामग्री जुटाना।
3. **अतिचार**-व्रत का आंशिक रूप से खण्डन।
4. **अनाचार**-व्रत का भंग हो जाना।

नहीं चाहते हुए या अनजाने में अथवा परिस्थितिवश पाप होना अतिचार है। अतिचार के स्तर तक जो दोष लगते हैं; वे नहीं लगे, इसकी सजगता आवश्यक है। अतिचार के स्तर तक लगे दोषों से व्रत खण्डित नहीं होता है। अनाचार से वह खण्डित हो जाता है। इस क्रम में मानव की कमजोरी का ध्यान रखते हुए व्रत निभाने की प्रेरणा दी गई है।

अणुव्रतों अथवा बारह व्रतों में चौथा व्रत है-ब्रह्मचर्य। ब्रह्मचर्य अणुव्रत के अन्तर्गत सद्गृहस्थ या सद्गृहिणी के द्वारा अपने जीवन-साथी या जीवन-संगिनी के प्रति पूर्ण निष्ठा व्यक्त की जाती है तथा अन्य समस्त स्त्रियों (पुरुषों के लिए) और पुरुषों (स्त्रियों के लिए) के प्रति विकारमुक्त सम्बन्ध का सत्संकल्प किया जाता है। यह व्रत सदाचार, सामाजिकता और उज्ज्वल चरित्र का बोधक है।

भगवान महावीर ने ब्रह्मचर्य पर बहुत बल दिया। उनकी परम्परा के सद्गृहस्थ आज भी अनेक रूपों में ब्रह्मचर्य पालन (शीलव्रत) के प्रेरणादायी आदर्श उपस्थित करते हैं। वे अपने जीवन-साथी के प्रति भी अधिकाधिक विकार मुक्त रहकर जीवन की तेजस्विता और रचनात्मकता को बहुगुणित करते हैं।

उपासकदशांगसूत्र में आनन्द श्रावक भगवान महावीर से संकल्प करता है-**'ननत्थ एक्काए सिवाणंदाए भारियाए, अवसेसं सव्वं मेहुणविहिं पच्चक्खामि'** अर्थात् मैं स्वपत्नी सन्तोषव्रत ग्रहण करता हूँ, मेरी शिवानन्दा नामक पत्नी के अतिरिक्त सभी प्रकार के मैथुन का त्याग करता हूँ। आवश्यकसूत्र में चौथे व्रत के अन्तर्गत श्रावक देव-देवी सम्बन्धी मैथुन का त्याग दो करण तीन योग से तथा मनुष्य और तिर्यञ्च सम्बन्धी मैथुन का त्याग एक करण एक योग से करता है। संसारिक जीवन की जिम्मेदारियों और व्यावहारिक कठिनाइयों को ध्यान में रखकर इस व्रत का विधान

किया गया है। इस व्रत के पाँच अतिचार इस प्रकार हैं- 1. इत्वरपरिगृहीतागमन, 2. अपरिगृहीतागमन, 3. अनंगक्रीड़ा, 4. परविवाहकरण और 5. कामभोग की तीव्र इच्छा।

प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ क्रम के अतिचार की चर्चा से पूर्व यहाँ तृतीय और पंचम अतिचार की संक्षिप्त चर्चा की जा रही है। तृतीय अतिचार के अन्तर्गत स्वाभाविक रूप से कामसेवन की बजाय अप्राकृतिक तरीकों से कामक्रीड़ा करने को अनंगक्रीड़ा अतिचार बताया है। समलैंगिक कामक्रीड़ा को अनंग क्रीड़ा अतिचार के अन्तर्गत गिना जाए या अनाचार माना जाए, इस पर विचार होना चाहिये। इसी प्रकार पाँचवें क्रम पर कामभोग की तीव्र इच्छा को अतिचार कहा गया है। इस अतिचार से बचने के लिए व्रती को कामोत्तेजना बढ़ाने वाली औषधियों और मादक चीजों के सेवन से भी दूर रहना चाहिये। इन अतिचारों से बचने वाला निश्चित ही अपनी जीवन-शक्ति, दीर्घजीविता और रचनात्मकता को बढ़ाता है।

अब प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ अतिचार पर विचार करते हैं। आवश्यकसूत्र की पुस्तकों में इन अतिचारों के प्राय: जो अर्थ मिलते हैं, उनके अनुसार यहाँ चर्चा की जा रही है।

प्रथम अतिचार – इत्वरपरिगृहीतागमन

इस अतिचार के दो अर्थ बताये गये हैं-(1) थोड़े समय के लिए रखी गई स्त्री से गमन, (2) अल्पवयस्क या अवयस्क के साथ गमन।

पहले अर्थ के अनुसार अल्प समय के लिए रखी गई स्त्री (रखैल) के साथ गमन करने को अतिचार कहा गया है। प्रश्न है कि क्या एक श्रावक किसी को अल्प समय के लिए रख सकता है? रखैल के साथ गमन अतिचार है या अनाचार? व्रती श्रावक के लिए रखैल को रखना ही गलत है, फिर गमन की बात तो बहुत दूर की है। इसलिए इसका यह अर्थ संगत नहीं है। फिर, ऐसा अर्थ क्यों किया गया? शायद पुराने जमाने में कुछ मनचले लोगों के द्वारा इस तरह महिला से रिश्ता रखना अथवा उसे शरण देना बुरा नहीं माना जाने लगा हो। कथा-साहित्य में ऐसे चटकीले किस्से मिलते हैं। लगता है, तत्कालीन सामाजिक परिप्रेक्ष्य में उनके इस क़दम को व्रत से नियन्त्रित करने के लिए यह अर्थ किया गया।

वर्तमान में रखैल से भी अधिक अशोभनीय एवं असामाजिक रिश्ता है-'लिव-इन-रिलेशन' या 'लिव-इन-पार्टनर।' कुछ मिथ्या आधुनिकतावादी लोग इसे कानूनी जामा पहनाना चाहते हैं। ऐसे लोगों को पता होना चाहिये कि इसी तरह के रिश्ते के कारण मई-2022 में दिल्ली में नृशंस श्रद्धा वाल्कर हत्याकाण्ड हुआ था। उसके बाद लिव-इन-रिलेशन के कारण ही दिल्ली में फरवरी-2023 में निक्की यादव हत्याकाण्ड हुआ। राजस्थान पत्रिका (चेन्नई) के 16 फरवरी, 2023 के अनुसार महाराष्ट्र के पालघर जिले के तुलिंज में मेधा नामक लड़की की हत्या के आरोप में उसके लिव-इन पार्टनर को गिरफ्तार किया गया। ऐसी कई भद्दी घटनाएँ हुई हैं, जो लिव-इन-रिलेशन को पूरी तरह से व्यर्थ सिद्ध कर देती हैं। 'लिव-इन-रिलेशन' भारत की पारिवारिक और सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध है।

इत्वरपरिगृहीतागमन के दूसरे अर्थ में अल्पवयस्क या अवयस्क के साथ गमन को अतिचार कहा है। यह अर्थ तत्कालीन समय में बाल-विवाह प्रथा को इंगित करता है। बाल-विवाह होने के बावजूद इस अतिचार के जरिये आत्म-संयम का सन्देश दिया गया है। वैसे आगमों में बालविवाह का कहीं भी समर्थन नहीं है। आगमों में कहा गया है कि बालभाव से मुक्त होने पर (उमुक्क बालभावे-भगवती 11/11), नौ अंग प्रतिबुद्ध होने पर (णवंग सुत्त पडिबोहिए-ज्ञाता. 1/1) और गृहस्थ सम्बन्धी भोग भोगने में समर्थ (अलं भोगे समत्थे-भगवती 11/11) होने पर ही विवाह किया जाए। इसी प्रकार बेमेल विवाह का भी जैनाचार में समर्थन नहीं है।

वर्तमान में भारत में हिन्दू विवाह कानून के अनुसार लड़की की 18 वर्ष और लड़के की 21 वर्ष की आयु से पूर्व शादी को बाल विवाह माना जाता है, जो

कानूनन निषिद्ध है। दैनिक अखबार 'प्रात:काल' (उदयपुर) के 21 नवम्बर, 2022 के अंक में प्रकाशित समाचार के अनुसार केरल उच्च न्यायालय ने कहा कि नाबालिग पत्नी से शारीरिक सम्बन्ध बनाना भी अपराध है और पॉक्सो एक्ट मुस्लिम समुदाय पर भी लागू होता है। स्पष्ट है कि अवयस्क के साथ गमन अनाचार है। उसकी छूट न तो प्रथम अतिचार में है और न ही दूसरे अतिचार में है। इसलिए वर्तमान समय में इस व्रत के अन्तर्गत यह दूसरा अर्थ भी असंगत एवं अप्रासंगिक है। अत: इस अतिचार पर पुनर्विचार जरूरी है।

द्वितीय अतिचार–अपरिगृहीतागमन

दूसरे अतिचार अपरिग्गहिया–गमणे के भी दो अर्थ मिलते हैं– (1) परस्त्री, वेश्या, विधवा आदि के साथ गमन और (2) वाग्दत्ता (सगाई की हुई) के साथ गमन।

यहाँ भी यही सवाल है कि क्या परस्त्री, वेश्या आदि के साथ गमन सिर्फ अतिचार ही है? निश्चित ही नहीं। यह तो अनाचार है, जिसकी रोक सद्गृहस्थ की शुरुआती भूमिका सप्तव्यसन त्याग के अन्तर्गत ही परस्त्रीगमन और वेश्यागमन के अन्तर्गत लगा दी जाती है। व्रतग्रहण या श्रावकपना तो उससे भी आगे की उच्चतर और श्रेष्ठतर भूमिका है। इसलिए प्रथम अर्थ अस्वीकार्य है। दूसरे अर्थ को अतिचार में लिया जा सकता है, बशर्ते वाग्दत्ता अवयस्क नहीं हो।

यहाँ व्रतधारी या समकिती श्रावक या एक जैन के बारे में चर्चा है। रखैल रखना, उसके साथ और परस्त्री के साथ गमन करना एक सामान्य इज्जतदार इन्सान के लिए भी गलत और लोकनिन्दनीय माना जाता है। फिर ऐसा लोकनिन्दनीय आचरण श्रावक के लिए सिर्फ अतिचार ही हो, जिसकी आलोचना करके वह दोष–मुक्त हो जाए, निश्चित ही उक्त अर्थ असंगत है।

प्रतिक्रमण की कुछ पुस्तकों में चौथे स्थूल एवं चौथे अणुव्रत के पाठ के नीचे टिप्पणी देकर यह स्पष्ट किया गया है कि उक्त अतिचारों के लिए स्त्री को इत्तरियपरिग्गहिय–गमणे और अपरिग्गहिय–गमणे बोलना चाहिये। अत: उक्त स्पष्टीकरण एवं नियम–उपनियम जिस प्रकार पुरुष के लिए हैं, उसी प्रकार स्त्री के लिए भी समझ लेने चाहिये। क्योंकि चतुर्थ व्रत द्विपक्षीय होता है। दोनों ही अतिचार सभी प्रकार के स्त्री–पुरुष के अवैधानिक और असामाजिक सम्बन्धों का निषेध करते हैं।

इन दोनों व्रतों में आए 'गमन' शब्द का अर्थ कहीं–कहीं 'आलाप–संलाप' भी किया गया है। अतिचार के अर्थ को बिठाने के लिए इस अर्थ का मन्तव्य तो ठीक है, लेकिन क्या अर्थ ठीक है? इस पर भी निर्णय की अपेक्षा है।

चतुर्थ अतिचार–परविवाहकरण

चौथा अतिचार है–परविवाहकरण। इसका अर्थ है–पराये का विवाह–नाता करवाना। यानी अपना और अपनी सन्तान के सिवाय दूसरों के वैवाहिक रिश्ते जुड़वाने में किसी भी प्रकार की मदद करना या भूमिका निभाना। यहाँ सवाल यह है कि जब मूल पाठ में मनुष्य सम्बन्धी व्रत ग्रहण एक करण और एक योग (एगविहं एगविहेणं–न करेमि कायसा) से किया गया है तो श्रावक के लिए पराये का विवाह नाता करवाने में दोष क्यों लगेगा? वस्तुत: चौथे व्रत की व्यवस्था एक करण और एक योग से होने पर ही श्रावक अपने पारिवारिक और सामाजिक कर्तव्यों और दायित्वों का पालन कर सकता है।

वर्तमान समय में जहाँ वैवाहिक सम्बन्ध जुड़ना कठिनतर हो रहा है; विलम्बित विवाह और अविवाह की स्थितियाँ समाज में पैदा हो रही हैं, वहाँ समाज में वैवाहिक सहयोग का महत्त्व बढ़ जाता है। परिचय सम्मेलन और सामूहिक विवाह का एक कारण यह भी है। व्यक्ति की जीवन–साधना का सपना इससे जुड़ा है। ब्रह्मचर्य व्रत का मुख्य लक्ष्य भोगासक्ति घटाना और समाज में सदाचार की स्थापना करना है। विवाह भी इस उच्चतर लक्ष्य से जुड़ा है। इस अतिचार की कुछ

महानुभाव यह व्याख्या करते हैं कि जीवनसाथी या जीवनसंगिनी के चिर-बिछोह पर दूसरा विवाह करना, इस अतिचार के अन्तर्गत आएगा। लेकिन यह अर्थ भी असंगत है। विधवा-विवाह और विधुर-विवाह को प्रचलित एवं परिवर्तित सामाजिक रिवाज तथा व्यक्ति विशेष की परिस्थितियों के सन्दर्भ में देखा जाना चाहिये। अत: इस अतिचार पर भी पुनर्विचार आवश्यक है।

अणुव्रत यानी छोटे-छोटे व्रत। ये छोटे-छोटे व्रत व्यक्ति को बड़ा बनाने में सक्षम हैं। ये छोटे-छोटे व्रत आदमी को पूर्णता प्रदान करते हैं और पूर्णता कोई छोटी बात नहीं होती है। इसलिए ब्रह्मचर्य अणुव्रत के उक्त अतिचारों के अर्थ एवं भावार्थ निर्भ्रान्त, निश्चित, तर्कसंगत और व्रत की महिमा बढ़ाने वाले होने चाहिये।

सन्दर्भ पुस्तकें

1. श्रावक सामायिक-प्रतिक्रमणसूत्र, प्रकाशक : सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर, सम्पादक : पार्श्वकुमार मेहता, 27वाँ संस्करण, 2022
2. प्रतिक्रमणसूत्र, प्रकाशक : अगरचंद भैरोंदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था, बीकानेर, 28वीं आवृत्ति, 2004
3. विभिन्न स्थानों से प्रकाशित प्रतिक्रमण और आवश्यकसूत्र की पुस्तकें।

-शोधप्रमुख : जैनविद्या विभाग, शासुन जैन कॉलेज, 3, मैडले रोड, टी.नगर, चेन्नई-600017

लोभ को रोकें

श्री हीरालाल ओसवाल (जैन)

संसार का मूल कर्म है। कर्म का मूल कषाय है। (1) क्रोध, (2) मान, (3) माया, (4) लोभ ये चार कषाय मनुष्य जीवन को दु:खमय करते हैं।

वर्तमान में लोभ-कषाय का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है। आर्थिक विषमता बढ़ रही है। अमीर अधिक अमीर हो रहे हैं, गरीब अधिक गरीब हो रहे हैं।

दु:खमा आरे के प्रभाव से सृष्टि में वृक्षधन, पशुधन, तेजी से कम हो रहे हैं। जल की उपलब्धता घट रही है। प्रदूषण बढ़ रहा है। कषायों का प्रभाव बढ़ रहा है। धर्मशास्त्र में लिखित आचारों का आचरण घट रहा है।

परिणाम-आत्महत्या, खून, बलात्कार, दुर्घटना, अनाचार बढ़ रहे हैं।

अधिक धन कमाने हेतु लोभी मनुष्य अनेक कर्मबन्ध करता है। रिश्वत, अनीति, छल-कपट, मिलावट, असत्य वचन आदि से लोग धन प्राप्त करते हैं।

मनुष्य के जीवन के हर क्षेत्र में जैसे शासन, प्रशासन, शिक्षण, आरोग्य, व्यापार, उद्योग में अनैतिक व्यवहार बढ़ रहा है। हमें इसकी जानकारी अखबार, टी. वी. द्वारा ज्ञात होती है। युवा वर्ग भी इसकी ओर आकर्षित हो रहा है। वजह संस्कार, सत्संग का अभाव है।

धनवान भी दु:खी रहते हैं। उन्हें सरकारी छापेमारी और गुण्डों का डर लगता है। गरीब किसान कर्ज के बोझ से दु:खी रहते हैं।

लोभ को कैसे रोकें-(1) निर्लोभता हेतु ज्ञान, दर्शन, चारित्र को अपनाओ। (2) नैतिकता से अर्थार्जन करो। (3) मन, वचन और काया पर नियन्त्रण रखो। (4) कर्म से प्राप्त स्थिति में सन्तोषी रहो। (5) आवश्यकताओं को और इच्छाओं को सीमित रखो। (6) मृत्यु का हर पल खयाल रखो।

धर्म के चार द्वार-(1) क्षमा, (2) सन्तोष, (3) सरलता और (4) नम्रता (स्थानांगसूत्र)।

श्रावक धर्म का पालन करना चाहिये। इससे कर्म निर्जरा होती है। यह अशुभ कर्मबन्ध और कषायों से दूर रहने का मार्ग है।

-धुलिया (महाराष्ट्र)

10 मई 2023
जिनवाणी 41
ISSN 2249-2011

साधना

संयम की संरक्षा : जिज्ञासा-समाधान

संकलित

जिज्ञासा–साधु संघ में सर्वप्रिय बनने के लिए क्या-क्या करना चाहिए?

समाधान–1. जो अच्छा होता है, वह सबको अच्छा ही लगता है, अत: प्रयास सबकी नज़रों में अच्छा दिखने का न करके स्वयं अच्छा बनने का करना चाहिए। इसी में प्राकृतिकता है। अच्छा दिखना कृत्रिमता है। सभी को प्राकृतिक चीजें ही पसन्द आती हैं।

2. सब मेरे काम आएँ या कौन-कौन मेरे काम आ रहे हैं, यह सामान्य सोच है। हम किस-किस के काम आते हैं और किस-किस के काम आ सकते हैं जो कि नहीं आ रहे हैं, यह सोचना चाहिए। उपयोगी वस्तु-व्यक्ति सभी को प्रिय ही होते हैं।
3. जैसा व्यवहार हम सबसे चाहते हैं, जैसे कि कोई मेरे बार-बार दोष नहीं देखे, कोई मुझे सभी के बीच में दोष न दिखाए, कोई मेरी गलतियाँ देखकर गुरु के सामने चुगली नहीं करे, इसी प्रकार का व्यवहार सभी हमसे भी चाहते हैं, यह समझ रखनी चाहिए।
4. जो देते हैं, वही कई गुणा होकर मिलता है, यह सृष्टि का नियम है। सभी को प्रेम दें, सभी कई गुणा अधिक आपको आपको प्रेम देंगे।
5. सभी मुझे समझें, यह समझ नहीं रखकर, यह समझ रखनी चाहिए कि मैं सभी को समझूँ। जो सबको उनके अनुसार समझता है, उसे सभी जन समझकर प्रियता देते हैं।
6. गाड़ी के जिस हिस्से में गड़बड़ होती है, मिस्त्री उसी स्थान पर औजार चलाता है, अत: जिनसे प्रियता नहीं मिल रही है, समझना चाहिए कि यह इस भव या पूर्व की गलती का परिणाम है तो उनकी विशेष सेवा-भक्ति करनी चाहिए।
7. सभी के अनुकूल बनने से सभी की प्रियता मिलती है अर्थात् सभी के अभिप्राय, अपेक्षाएँ सभी के जीवन की शैली को ध्यान में रखकर यदि व्यवहार करें तो सहज ही सर्वप्रियता प्राप्त होती है।
8. आवश्यकी आदि दस सामाचारी का भावों से पालन करने से भी सर्वप्रियता प्राप्त होती है।
9. ज्ञान-ध्यान-प्रवचन आदि का विकास किसी की ईर्ष्या का कारण बन सकता है, पर सेवा ऐसा गुण है जिसमें कोई ईर्ष्या नहीं करता। अत: प्राथमिकता स्वकार्य को न देकर सेवाकार्य को देनी चाहिए।
10. अनुमोदना, गुणानुवाद अगर जीवन में है तो सभी की समीपता-प्रियता तो मिलती ही है, स्वयं की निर्जरा भी होती है। ध्यान रहे चापलूसी नहीं गुणानुवाद करना है। चापलूसी एवं गुणानुवाद में क्या अन्तर है? जो गुण प्रकट नहीं है, सामने वाले को खुश करने के लिए उन्हें बढ़ा-चढ़ाकर कहना चापलूसी है। वास्तविक गुणों का निवेदन और कथन गुणानुवाद है। हर जीव में गुण तो होते ही हैं। गुण द्रष्टा बनकर गुणों का कथन करें।
11. किसी से भी स्वयं की तुलना करके ईर्ष्या अथवा हीन भावना न लायें। अपने से ऊपर चढ़ने वालों को अपना आदर्श बनायें और जो नहीं बढ़ पा रहे हैं, उन्हें सहयोग दें।
12. सहनशील बनें। जिसको सहन करेंगे, उसके अपने बनेंगे। जिनका सामना करेंगे-उनके अप्रिय बनेंगे। हजार बार बादाम खाने पर ताकत आती है और एक बार ज़हर पीते ही मरने की सम्भावना रहती है। विनय हजार बार करें तो सामने वाले के हृदय में स्थान मिलता है। एक बार का उत्तेजनायुक्त व्यवहार ज़हर का कार्य करता है।

13. दवा को लेने से पहले हिलानी चाहिए। वैसे ही किसी को अच्छी बात कहनी हो, राय देनी हो तो भी अपने मन में उस प्रसङ्ग को अच्छे से चिन्तन कर लेना चाहिए कि यह समय सही है क्या? यह व्यक्ति पात्र है क्या? मेरी कहने की शैली सही है क्या? सामने वाले सुनने में रुचि लेंगे क्या? आदि। बिना सोचे-समझे बोलने वाले अप्रिय लगते हैं।
14. जब रास्ता कमजोर होता है या दुर्घटना का डर होता है तो वहाँ लिखा होता है-'धीरे चलिए।' वैसे ही लगने लगे कि कर्म का कुछ पापरूप उदय चल रहा है। मुझसे गलतियाँ ज्यादा हो रही हैं तो उस समय व्यवहार में 'धीरे चलिए' अर्थात् ज्यादा सम्भल कर गति करें। जिससे किसी से अप्रीति नहीं होगी।
15. जो कभी-कभी उपकार और सहयोग करते हैं उनको तो धन्यवाद बोल देते हैं, पर जो हरदम साथ रहते हैं, पल-पल हमारे सहयोगी होते हैं, उनको धन्यवाद देना, कृतज्ञता ज्ञापित करना अधिक आवश्यक होता है। उदाहरणार्थ-हम सुबह गोचरी लाएँ, कोई दोपहर में, बराबर हो गया। ऐसा नहीं सोचना चाहिए। किसी साधक ने दोपहर में निर्दोष आहार लाकर संयम जीवन में सहयोग दिया तो अवसरानुसार ऐसे प्रसङ्गों पर धन्यवाद देना चाहिए।
16. हर गलती के लिए त्रियोग से भावपूर्वक वन्दना करके क्षमायाचना माँगनी चाहिए। क्षमा सारी दरारें भर देती है। दो लकड़ी को फेविकॉल जोड़ता है, दो कागज को सेलो टेप जोड़ती है, दो दिलों को क्षमायाचना जोड़ती है।
17. रास्ता संकरा होता है, उसमें एक ट्रक भी आ जाये तो रास्ता जाम हो जाता है। रास्ता चौड़ा हो तो चार ट्रक भी आमने-सामने से आसानी से निकल सकते हैं एवं टकराव भी नहीं होता है। ऐसे हमारे चिन्तन का रास्ता चौड़ा होना चाहिए। किसी ने कुछ कह दिया, वह वाक्य भीतर में ही अटक गया, भूल नहीं पा रहे, यह छोटे चिन्तन की निशानी है, हमें विशाल सोच रखनी चाहिए। किसी के भी ग़लत व्यवहार को भूलना आना चाहिए।
18. सर्वप्रिय बनने के लिए समाधान की प्रक्रिया जीवन में होना चाहिए। सामने वाले के सुख के लिए अपने सुख को कई बार गौण करना होता है। यह ही सामूहिक जीवन की रीति है।
19. दोषी ठहराने का स्वभाव छोड़ देना चाहिए, इस जगत में वे ही महान् बन पाए हैं जिन्होंने असफलता का उत्तरदायी स्वयं को ठहराया है। जब तक हम अपनी गलती को दूसरों की साबित करने के प्रयास करते रहेंगे तब तक हमारे जीवन को 'गलती-मुक्त' बनाने में हम सफल नहीं हो पाएँगे।
20. अपनी गलतियों का निरीक्षण प्रतिदिन करें। किसी के साथ कोई भी गलती हो जाये तो उसे नहीं दोहराएँ।
21. किसी को उल्टा जवाब नहीं देना चाहिए। इससे हित को, गुण को, उत्थान को अवश्य हानि पहुँचती है। अत: दलीलबाजी, बहस में शान्त रहना चाहिए। सबके हृदय में विजय पानी है, विजेता बनना है तो गलत सोच पर विजय प्राप्त करनी ही होगी। गलत प्रवृत्ति पर विजय मिलानी ही होगी।

इस तरह के अन्य अनेक विषय हो सकते हैं जो ज्ञानियों के अनुभव में हैं। ये तो मात्र कुछ बिन्दु हैं, जिन पर ध्यान देना आवश्यक है। किसी-किसी के मन में प्रश्न उठ सकता है कि सभी के प्रेम को पाने की इच्छा भी ममता, कामना ही है, यह इच्छा भी कर्मबन्ध का हेतु ही है, अत: यह भाव नहीं रखना चाहिए।

उत्कृष्ट अवस्था का साधक तो मात्र एकत्व भावना में लीन रहता है। सभी से नि:स्पृह रहता है। मध्यम कोटि के साधक बाहरी परिस्थिति में अशान्त रहकर आन्तरिक एकाग्रता को प्राप्त नहीं कर पाते हैं अत: उनके द्वारा बाहरी परिस्थितियों को अनुकूल बनाये रखने का प्रयास किया जाता है। प्रयास के बाद भी अनुकूलता-प्रियता नहीं मिले तो फिर उन परिस्थितियों को भी समभाव से स्वीकार करके संयम पथ पर गतिशील रहना ही उचित है।

10 मई 2023
जिनवाणी 43
ISSN 2249-2011

English-section

Impressions of Anupreksha in Jaina Didactic Stories#

Dr. Priyadarshana Jain

Introduction

In the wake of the scientific revolution all comforts and luxuries became easily accessible to man, but all these in the absence of a spiritual and moral life hampered the real progress of man and mankind and sort of created a vacuum in him and also man is more restless and tensed than he has been ever before as he is searching for his true identity outside himself. It is for man to come in terms with himself, for the realization of the self and reality and also for a disciplined, moral and social order in society that different kinds of literature was written, one branch in this vast literary field is that of stories. Stories interest young and old alike and are an easy means of conveying the desired message. Their appeal is universal and unique and hence from time immemorial, stories have been entertaining, inspiring and guiding mankind.

Stories can be broadly classified into four categories viz.,

1. Religious Tales (Dharma Katha),
2. Didactic Tales (Niti Katha),
3. Popular Tales (Loka Katha),
4. Allegorical Tales (Rupaka Katha).

Of all these, the Didactic stories have great importance. As man is a social animal and lives in society he definitely needs the ethics and moral values. In this content I quote that "Spirituality is for man in God and Ethics is for man in Society". And the stories that I have chosen today and wish to discuss with you serve both the ends of ethics and spirituality although primarily being religious in nature. These stories bring to light the importance of the twelve-fold contemplations. The inflow of karmas is due to the three-fold activities of mind, body and speech and so the primary condition for their stoppage is the control of the above three and so contemplation, which is, 12-fold is a necessary condition for the accomplishment of the above and hence serves all didactic purposes. This 12-fold contemplation feeds the soul with non-egoistic thoughts and helps to perfect desire-less-ness and to remain equanimous in diverse situations. Although in the higher stages of spiritual development, these *Anupreksas* can be observed to be one blend in spirituality, goodness and reality, they are twelve in number due to the complex nature of the elements that constitute this world. The contemplations also called, as *Anupreksas* or *Bhavanas* can well be understood through the following biographical and historical Jaina Didactic stories. Although the *Anupreksas* number 12, there are innumerable stories in this connection of which I render a few-

Now to begin with the Stories on the 12-fold Contemplations

***1. Anitya Anupreksha* - Contemplation upon transitoriness**

Bharata, the legendary son of Ṛṣabha the first *Tirthankara* and Queen Sumangala ruled over the kingdom of Vinita. Once bedecked with all royal ornaments and jewels of a Chakravartin, Bharata stood admiring his reflection in the mirrors of his palace. He

Paper presented in a seminar organised by the Dept. of Jainology, University of Madras, Chennai.

noticed that one of the finger rings had fallen down and so that finger looked ugly and deformed and this amused and confused the King. To know the nature of his true self, he removed all ornaments one by one and the image that he saw before him set him to contemplate upon the fleeting nature of all worldly objects and pleasures. At this time he realized that all the associations of body, sense pleasures and even kith and kin are a resultant of past deeds and are subject to disassociation and destruction where as the real self is eternal and imperishable. At the time of death one is unable to take any of his possessions along with him, which he has earned with great difficulty. Thus meditating, the power of discrimination between the real and the unreal is enhanced in Bharata and this becomes the cause of his emancipation.

This incident in the story of Bharata instructs one and all to know the fleeting nature of things and inspires one and all to search true happiness not in the worldly pleasures but in oneself, which is truly a foundation of joy and everlasting bliss.

***2. Asharana Anupreksha-* Contemplation upon shelterlessness**

About 2,500 yrs ago, at the time of Tīrthaṅkara Mahavira, a handsome youth of Kausambi was stricken with an acute and agonizing pain in the eyes. All his kith and kin tried endlessly to cure him of the pain but remained helpless. This moved the youth and he realized that there was no shelter in this shelter less world and all those involved in the worldly existence were themselves helpless and so he vowed that if he was cured of the disease, he would immediately renounce the world and overcome all helplessness and become a master. After this he fell asleep and in the morning he was cured of all pain. With the kind permission of his parents, he became an ascetic to ascend all dependence and helplessness. He practiced rigorous penances in the deep forests. At one time Shrenik alias Bimbisara happened to pass through the forests and was amazed to see a handsome youth meditating at such a tender age. He humbly approached the young monk and enquired about the reason for his taking up an austere life of renunciation. The youth replied that he was shelter less and unprotected and so he led a renounced world. The King then invited the monk to his palace and proposed to be his protector and caretaker. The monk replied that when the King himself was unprotected, how he could protect others. The young ascetic then enlightened the King, that in this world full of miseries, where disease, old age and death are inevitable, neither the near and dear ones, nor wealth and worldly possessions can protect and shelter all livings beings at the time of death and otherwise. Only true realization of the self and practice of dharma can actually protect and shelter the soul wandering endlessly in this world of birth and death.

This story of Anathi *Muni* brings to light the limitations of material objects and helplessness of all material associations and relations and inspires us to take refuge in truth instead of endlessly hankering after sense pleasures and material comforts.

3. Samsara Anupreksha- Contemplation upon the nature of the world

The third kind of contemplation is to meditate upon the cycle of rebirth, which is endless, and the difficulty of acquiring a human birth. It is only in the life of a human that one can practice *dharma* and experience supreme happiness. The Jaina scriptures reveal that there is not a single space in the entire universe where the soul has not transmigrated and not a single soul with whom one has not been related in some way or the

other. In the *Svetambara* tradition the story of the 19th *Tirthankara* Mallinatha is worth illustrating in this context. Malli was born to King Kumbha of Mithila and Queen Prabhavati. Rulers of six kingdoms, who were all dear friends of Malli in the last birth, heard of the beauty and excellence of Mallikumari and invaded Mithila to marry Mallikumari. Malli comforted her father saying that she shall ably deal with all the Kings. Malli then got erected an effigy of herself and kept an opening through which she fed it with food and drinks. After some days the six Kings came to see Malli on her invitation, but they saw the effigy and got attracted towards the effigy of Mallikumari. Malli then removed the lid and the place began to stink and all the Kings wanted to flee from there due to the bad smell. Malli then approached them and spoke at length about the nature of this world that is subject to decay and death. She unfolded their past birth in which all the seven including herself were bosom friends, but owing to their karmas were reborn and due to ignorance were infatuated towards Malli. All the seven then renounced the world and hence the value of this story lies in apprehending the cause of rebirth and working out one's liberation through discrimination and renunciation.

4. *Ekatva Anupreksha*-Contemplation upon the pure self being one and unique

The story of *Rajarishi* Nami is rendered while explaining the fourth kind of contemplation of being alone in this world. Once Namiraj, the King of Mithila was subject to a kind of severe fever and the royal physician advised the Queens to massage sandalwood paste to cure the King. When the Queens were preparing the paste for massage the king was disturbed by the sound produced by the bangles that the Queens were wearing. The Queens realized this and removed all the bangles and wore only one bangle. When the King came to know about this, he embarked in deep contemplation and realized that a man can be at peace only when he is alone i.e. when he is absorbed in his true self. All kinds of associations, relations and possessions bring along with them afflictions and miseries. He realized that all kinds of material associations were the root cause of pain and suffering. Hence, one in search of peace must give up all such ties. Thus meditating he fell asleep and in the morning when he was cured of the fever he renounced the world after crowning his son and retired to the deep forests. All the people hue and cry hearing which Indra, the King of the celestial gods disguises as a Brahmin and to test the firmness of the King's resolution appears before him and asks him a lot of questions, trying to tempt him and draw him to worldly pleasures but the King remains unmoved. This philosophical discussion, which took place between Nami Rajarishi and Indra, has been recorded in the 9th chapter of Uttaradhyayana Sutra. Tīrthaṅkara Indra bowed to him, praised him and returned to his abode. Namiraj in due course attained enlightenment, thus the impression of the story of Namiraj is found in the fourth *Anupreksa*.

5. *Anyatva Anupreksha*-Contemplation upon the body being distinct from the self

The self is of transcendental nature and is distinct from the body. This instruction of the fifth kind of contemplation is explained through the story of Prince Mrgaputra, son of King Balabhadra of Sugriva kingdom and Queen Mrgavathi. Surrounded by his beautiful wives, Mrgaputra was viewing the scenario of his kingdom from his palace casement. He sees an ascetic and feels that he has seen such a personality previously. As he ponders over this he gets *Jatismaraṇa Jñāna*, i.e. knowledge of his past birth and understands that he too had been an ascetic in his last birth and realizes that owing to one's own karmas one wanders in the

cycle of births and deaths. The soul comes alone unaccompanied and departs from the world all alone. It is true that at the time of death all wealth lies buried in the house, the wife accompanies to the door step, the kith to the burial ground and the body to the funeral pyre. The soul thus marches alone with the merits and demerits of the present life.

A huge tree upon which birds happily chirp and under the shade of which the travelers take rest, forsake the same tree for another shelter when the wind blows fastly. Inspired by the distinction of body and spirit, Mrgaputra approached his parents and renounced the world to attain emancipation.

6. *Ashuchi Anupreksha* - Contemplation upon the nature of the body

To meditate upon the impure nature of the body as *Chakravartin* Sanatkumar did, is the subject of the sixth type of *Anupreksa*. Sanatkumar ruled over Ayodhya and he was so handsome that Indra in the court of gods praised his beauty. One of the celestial Gods disguised as a Brahmin and came to see the magnificent personality of the *Chakravartin* and to see if the latter was as handsome as he was described to be. Unfortunately the God's visit made the King proud and due to rise of inauspicious karmas his beautiful body was deformed then and there and he was infected by many incurable diseases. This led the King to meditate upon the impure nature of the body prior to which he believed the body to remain eternally attractive and beautiful. He thought when the body itself was so transient what to say of wealth and relations, who shall at one time or another let us down. He disdained his body as well as this world and renounced the same. He then patiently worked out the path of liberation and ultimately attained Nirvana.

In our everyday life we see many sick, diseased, disabled and dead people, still we think ourselves to be this body, which is in fact subject to disease, old-age and death. This story instructs one and all to realize this nature of the body and endeavor for self-realization and self-purification.

7. *Asrava Anupreksha* – Contemplation upon the influx of *karma*

Through the three *yogas* of body, mind and speech, there is constant and continuous flow of *karma*s to our soul. As one reflects upon this inflow of *karma*s, there comes a time when one is able to check and end this inflow like King Samudrapala. In the city of Champa, there lived a young man called Samudrapala. He once saw a thief bound by chains, being dragged through the main road to the altar of death to be hanged for committing the sin of robbery. Seeing this Samudrapala thought that due to the rise of the inauspicious *karma*s the thief was subject to suffering and death and this was due to the inflow of *karma*s in the past. Hence if one restricted and checked this inflow, there would be no bondage and hence no miseries. Samudrapala thought that the thief committed one of the 18 sins of violence, untruth, etc and was subject to death. Whereas he committed all the 18 sins and there was *karmic* inflow through all the 20 channels of *Asrava,* hence what would be his plight. This kind of reflection inspired King Samudrapala to stop all karmic inflow and attain eternal bliss and beatitude. This story sums up the entire Jaina didactic network of karmic inflow and inspires one and all to work for the stoppage and annihilation of the same for eternal peace and prosperity.

8. *Samvara Anupreksa* - Contemplation upon the stoppage of *karma*

The inflow of *karmic* particles is the cause of wandering in the wheel of *samsara* and stoppage of this *karmic* inflow technically termed as Samvara alone can end this inflow and wandering. Harikesi *Muni* established

himself in Right Faith, Right Knowledge and Right Conduct inspired by this *Anupreksa*. Harikesi was born ugly and so was looked down and condemned by one and all. Vexed with a life of condemnation he attempted to commit suicide. While he was attempting to do so, a Jaina monk stopped him and inspired him to lead a holy life and on the request of the latter, the pious ascetic initiated him in the holy order as a Shramana after which he took to rigorous austerities. Once while he stood in deep contemplation in a *Yaksa* temple on the out skirts of the city of Benares, the Princess of that kingdom happened to be present there. Seeing such an unpleasant figure before her, she spat on the ascetic, as a result of which she became crippled. When the King asked Harikesi *Muni* to marry her, the *Muni* declined the offer and so a Brahmin of that land was chosen to be the groom.

After some time a sacrificial ladle was set up during the marriage ceremony and Harikesi happened to come there for alms. Due to his ugly structure he was assaulted and the *Yaksa* who was at the service of the *Muni*, punished the assaulters. The Brahmins then bowed to the *Muni* in reverence and begged pardon from the holy ascetic, Harikesi *Muni* then sermoned to them that since time immemorial the soul is entangled in the wheel of births and deaths as it is following the path of violence and organizes sacrifices of animals in the name of *Dharma*. But truly speaking this kind of *Asrava Yagna* is to be replaced by *Samvara Yagna* in which the soul is the sacrificial ladle; the *karma*s are the fuel and the austerities form the fire of such a *Yagna*. Only this kind of oblation can free the soul from all ignorance and bondage. The Brahmins, inspired by the sermon of Harikesi *Muni*, give up the slaughtering of animals and realize the significance of non-violence.

This story instructs one and all to know the nature of true *Dharma* and work out the stoppage of *karmic* inflow.

9. *Nirjara Anupreksha* – Contemplation upon the annihilation of *karma*

The story of Arjunamali is illustrated while explaining the ninth Anupreksa of reflection upon the disassociation of karmic matter from the soul. Arjunamali, whose story is well known as that of Angulimala had killed 1,141 people in 5 months and 13 days i.e., each day he killed 6 men and 1 woman. After inspired by Tīrthaṅkara Mahavira's teachings he became a humble follower of the Tīrthaṅkara and became an ascetic taking to rigorous austerities to annihilate the *karma*s. When he went in the city of Rajgriha for alms he was assaulted and attacked in all possible ways. But he remained equanimous and patiently endured all hardships and strived for annihilation of *karmic* matter. As a result of this within six months he was able to annihilate all the obscuring *karma*s and realize his true self.

10. *Loka Swarupa Anupreksha* – Contemplation upon the nature of the universe

Jaina Cosmology reveals that the entire universe measures 14 Rajju and is of the shape of a human being standing with his arms placed on his hips. There are innumerable landscapes and oceans in the transverse world where living beings transmigrate and suffer endlessly.

On the outskirts of the city of Benares, Shivraj *Rishi* is a hermit engaged in penances, as a result of which he is able to visualize seven oceans and seven lands and concludes that the world is only of that measure. The people of Benares who had heard the sermons of Tīrthaṅkara Mahavira told Shivraj Rishi that the Tīrthaṅkara revealed that there are innumerable oceans and lands in contrast to

his preaching of only seven oceans and lands. Shivraj then approached Tīrthaṅkara Mahavira and got his doubt clarified. On approaching the Tīrthaṅkara, his thought process is so purified that he gets Right-Knowledge and in the light of which he apprehends reality. This *Anupreksa* inspires us to know the universe and the nature of its constituents.

11. *Boddhi-durlabha Anupreksha* – Contemplation upon the difficulty in acquiring Right Understanding (Samyak-darshan)

The story of the 98 sons of Tīrthaṅkara Ṛṣabha is revealed through the eleventh contemplation of the difficulty of the attainment of right faith and enlightenment. Bharata, the eldest of the 100 sons of Ṛṣabha, asked all this brothers to accept his sovereignty. As Ṛṣabha had himself divided his kingdom among his 100 sons, they could not accept Bharata as their ruler. So the 98 brothers excluding Bahubali approached Tīrthaṅkara Ṛṣabha and asked for a just solution for the above problem. Tīrthaṅkara Ṛṣabha then threw light on the difficulty of acquiring Right Understanding, which is the seed of enlightenment. He said that in the past births they had experienced such royal pleasures many times and now it was time to endeavor to conquer oneself and attain the kingdom of *Moksha*. The 98 brothers thus apprehended the difficulty of acquiring Right Understanding and gave up the worldly way and earnestly sought enlightenment. In due course they acquired self-realization and attained *Nirvana*.

12. *Dharma Anupreksha* – Contemplation upon Dharma as the greatest healer and the benefactor

Wealth, fame and all material pleasures are easily accessible to man, but to follow the path of non-violence and righteousness and to practice it by thought, word and deed is indeed the most difficult of all. The moral values, the ethical code of conduct and a compassionate mind is that which distinguishes man from a beast, hence not to injure by thought, word and deed is the highest dharma. This statement is the essence of Jaina Didactics.

An ascetic by name Dharmaruchi reflected on the greatest religion of non-violence and the story of which goes as follows: While wandering for alms in the city of Champa to break his month long fast Dharmaruchi reached a Brahmin's house and a Brahmin lady named Nagasri knowingly offered a very bitter dish to the monk, but his wise master said that as the monk was on a month long fast that food would be poisonous for him and so asked him to discard that food in a place where no living beings could be subject to injury. As he spilt a drop of that food, lots of ants came there and this disturbed the ascetic. Dharmaruchi was filled with compassion towards those little creatures and ate the entire food. As a result of this his body perished but during this course great heaps of inauspicious *karma*s got destroyed and Dharmaruchi was nearly freed from the shackles of birth and death.

In this age of war and terror it is difficult to come across compassionate souls and Jainism is promulgated by those great souls who practiced and preached compassion towards not just human beings but all living creatures. Thus this Jaina Didactic story instructs one and all to take up the right path of non-violence and practice compassion towards all creatures.

Conclusion

The importance of *Dharma* constituted of *Ahimsa*, *Sanyama* and *Tapa*, the practice of the five great vows, the strong impact of *karma*

theory and rebirth, the importance of renunciation, the three fold path of liberation constituted by Right faith, Right knowledge & Right conduct, the difficulty of acquiring self-realization and the ultimate aim in Nirvana are the underlying social, religious, ethical and spiritual features of Jaina religion and culture and all these are very well brought out through the 12-fold *Anupreksas* and various stories. Although the *Anupreksas* are twelve in number, umpteen number of stories can be told in connection with each *Anupreksa*. Further there is a tradition of contemplating on these *Anupreksas* inclusive of such stories, which has been the source of my inspiration. The above incidents and stories are a bird's eye view on the importance of the two topics of Jaina Didactic Stories and *Anupreksas*. As the path of human evolution is not a straight line, but a zigzag spiral which jerks from side to side as well as up and down, jerks caused by false faith, passions, vowlessness, ignorance, carelessness, inauspicious thought process; the didactic stories come at hand to keep a balance during these jerks and inspire to calmly tread upon the divine path not being effected by the ups and downs. Besides there are scores of other Jaina Didactic Stories which have their roots in history as well as mythology.

-Associate Prof and Head, Dept of Jainology, University of Madras, Chennai 600005 (Tamilnadu)

धर्म से जुड़ाव कैसे हो?

श्री विजेन्द्र जैन

समाज की आने वाली पीढ़ी में धर्म से जुड़ाव कैसे हो, इसके लिए सबसे महत्त्वपूर्ण हैं-

1. घर के संस्कार-बच्चों एवं युवाओं को संस्कार देने की जिम्मेदारी आती है घर के बड़ों एवं बुजुर्गों पर। इसके लिए बच्चों को बचपन से ही पढ़ाई के साथ-साथ अपने धर्मस्थान एवं गुरु भगवन्तों के दर्शनार्थ ले जाने की आदत डालें तथा घर का वातावरण एवं कुछ नियम ऐसे बनाएँ, जिनसे धर्म के प्रति रुचि जगे। इसके लिए सभी पारिवारिक सदस्य एक साथ बैठकर आधे घण्टे या एक घण्टे की धर्म चर्चा, सामायिक, स्वाध्याय एवं प्रार्थना जो अनुकूल हो, वे कर सकते हैं, पर इसके लिए नियम सख़्त होने चाहिए।

2. सामाजिक उत्तरदायित्व-इसके लिए सबसे अधिक उत्तरदायित्व आता है अपने स्थानीय समाज पर। समय-समय पर समाज को ऐसे कार्यक्रम रखने चाहिए जिनमें सभी परिवारों को आमन्त्रित किया जाये। कार्यक्रम में आने के लिए घर-घर जाकर प्रेरणा की जाय और कार्यक्रम में जैनधर्म एवं गुरु भगवन्तों के बारे में प्रभावशाली वक्तव्य दिए जाएँ, जिनमें जैनधर्म के सिद्धान्तों के बारे में, धर्म से क्या-क्या फायदे हैं, के बारे में जानकारी दी जाए। साथ ही धार्मिक शिक्षण संस्थाएँ नियमित रूप से सञ्चालित की जाएँ।

3. सकारात्मक सोच-सबसे महत्त्वपूर्ण बात है युवाओं एवं बच्चों की नकारात्मक सोच को बदलना। इसकी जिम्मेदारी गुरु भगवन्तों एवं समाज के विद्वानों एवं स्वाध्याय वर्ग के श्रावकों की है।

4. सम्प्रदायवाद-अलग-अलग सम्प्रदायों में अलग-अलग आचार-विचार, अलग-अलग क्रियाएँ होने से जन मानस पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। इस सम्बन्ध में कहना है कि हम जैन पंथी बनें, जैनधर्म के बारे में समझें, इसकी महत्ता को पहचानें, आगे आएँ, धर्म से एवं गुरुओं से जुड़ें और जोड़ें।

-77/235, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राजस्थान)

10 मई 2023
जिनवाणी 50
ISSN 2249-2011

आचार्यपद दिवस

आचार्यश्री हीरा के प्रवचनों में निहित बोधपरक सुभाषित

श्री त्रिलोकचन्द जैन

यह मानव जीवन सुख और दु:ख के क्रम से युक्त है। सुख के बाद दु:ख और दु:ख के बाद सुख आता ही है। सुख और दु:ख जीवन सरिता के दो तट हैं। प्रत्येक व्यक्ति सुख की खोज में रहता है, फिर भी दु:ख से उसका सामना होता ही रहता है। कभी-कभी दु:ख के समुद्र में अनायास ही सुख की नाव भी मिल जाती है। सुख सभी को प्रिय होता है, लेकिन न चाहते हुए भी दु:ख आ ही जाता है। संसारी जीव प्राय: किसी न किसी दु:ख से पीड़ित हैं, लेकिन फिर भी एक व्यक्ति को दूसरा व्यक्ति सुखी नज़र आता है। बस यही मायाजाल है कि एक-दूसरे को सुखी मानकर मानव अपने आपको दु:खी और दीन समझ रहा है।

अनेक प्रकार की चिन्ताओं से त्रस्त, मानसिक एवं शारीरिक रोगों से ग्रस्त, रात-दिन कुछ न कुछ करने में व्यस्त आज की पीढ़ी जीवन को हारने जैसी मुख मुद्रा लिये हुए है। ऐसी अवस्था में धर्म ही एकमात्र सहारा है, जो जीवन को सम्यक् बोध एवं दिशा प्रदान करता है। धर्म की आराधना सम्यग्ज्ञान-दर्शन-चारित्र के माध्यम से होती है। ज्ञान अन्तर्चक्षु को उद्घाटित करता है, दर्शन श्रद्धा के मेरु शिखर पर बढ़ाता है और चारित्र चरित्र को उज्ज्वल करने का पथ है। ये ज्ञानादि तीन भाव रत्न ही जीवन जीने की श्रेष्ठ कला है।

प्रभु ने इन भाव रत्नों के माध्यम से मुक्ति प्राप्ति का सिद्धान्त दिया है। लेकिन नीति में भी तीन रत्नों की बात कही है-**पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम्** अर्थात् पृथ्वी पर अन्न, जल और सुभाषित ये तीन रत्न हैं। ज्ञानादि रत्नों से सम्पन्न महापुरुष के वचन सुभाषित रत्न के रूप में कथित हैं। महापुरुष उत्कृष्ट साधना-आराधना करके संसारी जीवों को आगम आधारित उपदेश देते हैं। इनके ये उपदेश सुभाषित रत्न हैं, जिनको आत्मसात् करके दिग्भ्रमित जीव सन्मार्ग पर अग्रसर होने लगता है।

वर्तमान में ये महापुरुष कोई ओर नहीं, अपितु हमारे गुरु ही हैं। जो इस प्रतिकूलता की प्रचण्ड भोग रूपी आँधी में भी भाव रत्नों की आराधना का दीपक जलाकर रखते हैं। इनकी जिह्वा से निसृत वचन वर्गणा के पुद्गल अनमोल सुभाषित रत्न हैं। कहा भी है-

एकमेवाक्षरं यस्तु, गुरु: शिष्यं प्रबोधयेत्।
पृथिव्यां नास्ति तद् द्रव्यं, यद्दत्वा चानृणी भवेत्।।

अर्थात् गुरु के द्वारा शिष्य को यदि एक अक्षर का भी उपदेश दिया जाता है तो उस उपदेश के समान इस पृथ्वी पर ऐसा कोई द्रव्य नहीं है जिसको देकर शिष्य उऋण हो सके।

गुरु के वचन औषधि के समान हैं, जो भवरोग का आत्यन्तिक विनाश करने में समर्थ हैं। ऐसे ही भाव रत्नों की उत्कृष्ट आराधना करने वाले गुरु हैं **आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा.**। वर्तमान में आचार्य ही अरिहन्त भगवान के प्रतिनिधि हैं। आचार्य के समस्त गुणों से शोभित आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. वीर प्रभु की पट्ट परम्परा के 82वें पट्टधर हैं। जैनधर्म की प्रमुख चार परम्पराओं में स्थानकवासी परम्परा के आप ज्येष्ठ आचार्य हैं। लघुवय में संसार से विरक्त होकर युवावय में दीक्षित हुए और प्रौढ़ अवस्था में आचार्य पद को स्वीकार किया तथा गत 60 वर्षों से जिनशासन की महती प्रभावना कर रहे हैं। तप-त्याग, जप-मौन, साधना एवं स्वाध्याय को जीवन बनाकर स्वयं शुद्ध पञ्चाचार पालक बनकर रत्नसंघ के सन्त-सतीवृन्द को भी पञ्चाचार का पालन कराने का कुशल नेतृत्त्व प्रदान कर रहे हैं।

आचार्य भगवन्त आगमों के ज्ञाता, दूरदर्शी,

सिद्धान्तनिष्ठ, साधनाप्रिय एवं प्रवचन प्रभाकर हैं। आपके प्रवचन सरल भाषा एवं उतार-चढ़ाव पूर्ण शैली में सिंहनाद से होते हैं। इन प्रवचनों में आगम आधार, सिद्धान्त प्ररूपण एवं जीवन कला के प्रेरक सूत्रों का समन्वय होता है। आपके प्रवचन 'हीरा प्रवचन पीयूष भाग-1 से 5, व्रत-प्रवचन संग्रह, आहार-संयम एवं रात्रिभोजन-त्याग' आदि पुस्तकों में मिलते हैं। ये पुस्तकें स्वाध्यायी बन्धुओं के लिए पर्युषण दिवसों में वक्तव्य प्रदान करने हेतु मुख्य स्रोत रहती हैं। इन प्रवचनों में समाहित अनेक प्रेरक वचन विशेष बोध प्रदान कर जाते हैं। ये प्रेरक वचन जीवन को नई दिशा प्रदान करने में समर्थ होते हैं। किन्हीं-किन्हीं के जीवन का यू-टर्न इन्हीं प्रेरक वाक्यों से हो जाता है।

आचार्य श्री के प्रवचनों में अस्तित्व विकास के साथ-साथ व्यक्तित्व विकास के भी प्रेरक वाक्य मिलते हैं। प्रमुख जैन सिद्धान्त अहिंसा के विषय में गुरुदेव फरमाते हैं-'व्यक्ति में अहिंसा के प्रति जितनी निष्ठा और श्रद्धा होती है, वह उसी अनुपात में महानता की उपलब्धि कर पाता है।' 'हिंसा का कारण संवेदनहीनता है और संवेदनहीनता का कारण आध्यात्मिकता का अभाव तथा भौतिकता का प्रभाव है।' आचार्य श्री परिग्रह रूपी पाप को पाप रूप में बताने का पुरजोर कथन करते हैं, जो कि आज पाप रूप में माना ही नहीं जा रहा है। आज श्रावक समुदाय भी परिग्रह को बढ़ाकर अपनी शान ऊँची समझ रहा है। लेकिन गुरुदेव कहते हैं-'परिग्रह के द्वारा मिलने वाले सुख को सुख कहना उचित नहीं, यह तो सुखाभास है। वास्तव में सन्तोष में जो सुख है, आनन्द है, वह परिग्रहजन्य सुख में सम्भव नहीं है।' 'परिग्रह के वश में मनुष्य बुरे विचार और दुराचार का दास बन जाता है और अन्त में ऐसी स्थिति भी आ जाती है कि जिससे वह अपने ही रचे परिग्रह के जाल में उलझकर जीवन से हाथ धो बैठता है।' आचार्य भगवन्त रात्रिभोजन एवं कुव्यसन सेवन पर वचनों से तीक्ष्ण प्रहार करते हुए कहते हैं-'ग्रहण के समय सूर्य कुछ समय के लिए दिन में छिपता है तो सूतक हो जाता है उस समय आहार नहीं किया जाता, फिर रातभर के लिए अस्त होता है तो भोजन कैसे रुचता है, कैसे गले से नीचे उतरता है? चिन्तन का विषय है।' 'तामसी आहार एवं रात्रिभोजन से बुद्धि भ्रष्ट होती है, विवेक नष्ट होता है और क्रोध, अहं, माया, तृष्णा के भाव जाग्रत होते हैं।' 'जीवन में जहाँ व्यसन है, वहीं जीवन के लिए विपत्ति है।'

आचार्य भगवन्त के प्रवचन मनमोहक, प्रेरक एवं सचोट होते हैं। आपके प्रवचनों में प्राय: अपने गुरुदेव आचार्य श्री हस्ती का स्मरण उनके प्रति आपकी अगाध श्रद्धाभक्ति का परिचायक है। आपके रोम-रोम में आचार्य श्री हस्ती के प्रति अहोभाव समाया हुआ है।

आचार्य भगवन्त स्पष्ट रूप से कहते हैं कि हमारा लक्ष्य कषाय-मुक्ति होना चाहिए, जिससे हमारी आत्मा का कल्याण-पथ प्रशस्त हो। हमारे व्यवहार में पाप की निवृत्ति होनी चाहिए, जिससे हमारा वर्तमान जीवन अच्छा बन सके। आप कषाय का सेवन अर्थात् क्रोध, मान, माया और लोभ का आचरण करने वाले को तीखे शब्द में कसाई के समान कहते हैं। 'संसार में व्यक्ति धर्म के आलम्बन से सुखी होता है, न कि पाप के आलम्बन से।' इस प्रकार के अनेक चिन्तनपरक सुभाषित आचार्य भगवन्त फरमाते हैं।

समाज-सुधार एवं नैतिक उन्नयन के परिप्रेक्ष्य में भी आचार्य भगवन्त के शब्द महत्त्वपूर्ण हैं। 'बिना किवाड़ वाले मकान में रहना हमें पसन्द नहीं होता है, उसी प्रकार बिना मर्यादा वाला जीवन भी सामाजिक-विकास में हेतु नहीं हो सकता।' 'पुण्य से अर्जित रिद्धि-सिद्धि का उपयोग समाजोत्थान में किया जाए।' 'मानव संयम छोड़ता चला जायेगा तो विश्व अनीति और अवनति के गड्ढे में गिरता चला जायेगा।' सामाजिक व्यवस्था के सम्यक् सञ्चालन हेतु आचार्यप्रवर फरमाते हैं-'समाज को स्वस्थ, स्वचालित करने के लिए व्यक्ति-व्यक्ति को घड़ी के पुर्जों की तरह सक्रिय रहना होगा।'

एक वाक्य में भी आचार्य भगवन्त सचोट प्रेरणा अथवा साधना के सूत्र बतला देते हैं। जैसे-1. जहाँ

अनैतिक पूँजी और धन बढ़ता है, वहाँ दुर्व्यसन भी बढ़ते हैं। 2. चिन्ता करना भी अनर्थदण्ड है। 3. आचरण पक्ष दु:ख-दुविधा झेलने की शक्ति से निखरता है। 4. कर्त्तव्य के प्रति समर्पण से सारे अधिकार मिल जाते हैं। 5. गुणदर्शन ही सम्यग्दर्शन है। 6. अगर ज्ञान है तो दु:ख भी सुख में बदल जायेगा। 7. प्राप्त योग्यता, सामर्थ्य एवं बल का दुरुपयोग भी भ्रष्टाचार है। 8. प्रसिद्धि के लिए नहीं, सिद्धि के लिए पुरुषार्थ कीजिये। ऐसे अनेक लघुवाक्य भी जीवन में आमूलचूल परिवर्तन लाने में समर्थ हैं।

सारांश रूप में कहें तो आचार्य श्री के सुभाषित जीवन के समीचीन विकास में मील के स्तम्भ हैं। व्यक्तिगत विकास की दृष्टि से कुव्यसन-त्याग, नैतिक मूल्यों का आचरण एवं श्रावक आचार संहिता का पालन आवश्यक है। आध्यात्मिक विकास की दृष्टि से कषाय मुक्ति की बात प्रासंगिक है। आपने समाज-विकास में रात्रिभोजन आदि कुरीतियों का निराकरण आवश्यक बताया तथा असंयम, अमर्यादा को विश्व के लिए खतरा भी बताया। पारिवारिक जीवन के सुखमय होने के लिए संस्कार, प्रेम, सौहार्द की जरूरत भी निर्विवाद रूप से बतायी है। इस प्रकार आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आचरण के श्रेष्ठ पुरोधा तो हैं ही, सुभाषित वचनों के वागरण के उत्कृष्ट महापुरुष भी हैं। हम उनके सुभाषित वचनों को स्वीकार करके अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने का प्रयास कर सकते हैं।

-37/67, रजतपथ, मानसरोवर, जयपुर-302020

जब से गुरु चरणों में आया

श्रीमती शिपिका जैन

तर्ज :: मुझे इस दुनिया में लाया

जब से गुरु चरणों में आया, धरती पर स्वर्ग है पाया।
तेरे चरणों की रज पाकर, मेरा रोम-रोम मुस्काया।।

भटका रहा अब तक पथ से, दर-दर भटका अज्ञानी,
यह मानव भव दुर्लभ है, कीमत इसकी पहचानी।
मुक्ति का मार्ग बता कर, सोता आतम है जगाया,
तेरे चरणों की रज पाकर, मेरा रोम-रोम मुस्काया।।

जीवन ये क्षणभंगुर सा, माटी का जैसे खिलौना ,
गुरुवर की कृपा को पाकर, बन गया खरा यह सोना।
आगम की वाणी सुना कर, मुझे भव से पार कराया,
तेरे चरणों की रज पाकर, मेरा रोम-रोम मुस्काया।।

जो बीत गया सो बीता, नहीं हाथ किसी के आया,
जो टूट गया डाली से, ना फूल कभी खिल पाया।
गुरुवर की कृपा ने जीवन, चन्दन सा महकाया,
तेरे चरणों की रज पाकर, मेरा रोम-रोम मुस्काया...।।

-73/238, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.)

नहीं हो गर विनय घट में

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

नहीं हो गर विनय घट में, धर्म करणी तो वृथा है,
धर्म का मूल, विनय ही है, यही वट वृक्ष बनता है।
नहीं हो गर विनय घट में ....।।ध्रुव।।

विनय जीवन में होता है, तो ज्ञान के फूल खिलते हैं,
नहीं आती कोई बाधा, सभी अनुकूल मिलते हैं।
विनय की है बड़ी महिमा, यह जीवन महक जाता है,
नहीं हो गर विनय घट में ....।।1।।

अहं रखना नहीं मन में, यह जीवन हार जाओगे,
मिलेगी दुर्गति आगे, नहीं मञ्ज़िल को पाओगे।
विनय जीवन में अपनाओ, यही प्रभुवर का कहना है,
नहीं हो गर विनय घट में...।।2।।

बढ़ेगा प्रेम आपस में, नहीं तकरार फिर होगी,
रहेंगे सभी मिलजुल, शान्ति से साधना होगी।
आचरण रहे सदा ऊँचा, शिवरमणी को वरना है,
नहीं हो गिर विनय घट में ....।।3।।

-जनता साड़ी सेण्टर फरिश्ता कॉम्पलेक्स, स्टेशन रोड़, दुर्ग-49001(छत्तीसगढ़)

10 मई 2023
जिनवाणी 53
ISSN 2249-2011

49वाँ दीक्षादिवस

गुणनिधि भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.

श्रीमती अंशु संजय सुराणा

प्रभु महावीर की अन्तिम वाणी उत्तराध्ययनसूत्र के 26वें सामाचारी अध्ययन में भगवान ने फरमाया कि एक संयमी साधक, पंचमहाव्रती मुनि के करने योग्य प्रमुख रूप से दो ही कार्य होते हैं अथवा इसे ऐसे भी कहा जा सकता है कि इन दो कार्यों में मुनिजीवन के समस्त कार्यों का समावेश हो जाता है और वे दो कार्य हैं स्वाध्याय और वैयावृत्य।

ये पंक्तियाँ भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के मुखारविन्द से सन् 2012 में आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के जयपुर चातुर्मास में सुनी थी। भावी आचार्यश्री का जीवन काफी करीब से देखने को मिला। आप वास्तव में सेवा और स्वाध्याय के पर्याय हैं। वे आगम में निरूपित सूत्रों के जीवन्त पर्याय हैं।

सेवा और स्वाध्याय के पर्याय हैं आप,
अप्रमत्तता बसती जहाँ वह निवास हैं आप।
देह और आत्मा का भेद विज्ञान दिखता जिनमें,
रत्नसंघ के भावी आचार्य ऐसे ज्ञान पुञ्ज हैं आप।।

परम पूज्य प्रात: स्मरणीय उपाध्यायप्रवर पूज्य श्री मानचन्द्रजी म.सा. का अलौकिक कथन-"जिनका जीवन बोलता है, उन्हें ज्यादा बोलने की जरूरत नहीं।" इस कथन को जीवन्त सम्पादित होते हुए आप भावी आचार्यश्री में देख सकते हैं। पाँच महीने के चातुर्मास में उन्हें एक क्षण भी पर-प्रपञ्च में पड़ते नहीं देखा। जब कभी दर्शनार्थियों की भीड़ ज्यादा होती तो वे उन सबको नियत समय जरूर देते हैं, सबकी जिज्ञासाओं का समाधान भी करते हैं, पर जैसे ही इन सबसे निवृत्त होते हैं उनके हाथ में बिना पल भर के प्रमाद के स्वाध्याय की पुस्तक देख सकते हैं। जब कभी भी गुरुदेव के दर्शन के लिए जाने का सौभाग्य प्राप्त हो और आपको भावी आचार्यश्री नहीं दिखे तो समझ लीजिए या तो वे गोचरी के लिए पधार गए हैं अथवा जिस स्थान पर विराजित हैं वहाँ की छत या कोई एकान्त स्थल पर तलाश कर लीजिए, निश्चित तौर पर आपको वहाँ स्वाध्याय करते हुए वह महाविभूति नज़र आ जाएगी।

स्वाध्याय रमता आप में,
अप्रमत्तता कितनी उत्तम।
जोड़ी गुरु हीरा संग कुछ ऐसी,
जैसे महावीर संग गौतम।।

शायद कुछ न कुछ पुण्य जरूर किया होगा, जो जयपुर चातुर्मास में इन विरले महापुरुषों का सान्निध्य और स्नेह का प्रत्यक्ष अनुभव किया। चूँकि भावी आचार्यश्री ही प्रधानता से गोचरी को पधारते थे, इसलिये उनका परिचय, दर्शन आदि अत्यन्त सुलभ थे। जो कुछ उनमें देखा सब अभूतपूर्व आश्चर्यकारी था। उनकी कार्य शैली लिखने की नहीं, देखने की चीज है। उनके उपदेश सुनने के नहीं, अपितु आचरण में ढ़ालने के सूत्र हैं। उनकी चर्या आनन्दकारी ही नहीं, अपितु सुमार्ग पर अग्रसर होने का संकेत है। अप्रमत्तता ऐसी कि जो हमें अपने स्वयं के जीवन में झाँकने को मजबूर कर दे। इस संसार के सारे आश्चर्य जड़ हैं, अजीव रूप में रहे हुए हैं पर भावी आचार्यश्री तो इस धरती के चेतन रूप, जीवन्त रूप आश्चर्य हैं। इस अप्रमत्त साधक में जो देखा, सम्पूर्ण लिखने का न ज्ञान, न कला, न बुद्धि, न कौशल है, पर मन के मन्दिर में विराजित प्रतिमा की भक्ति भले सुर से करो, भले बेसुर से करो, लेकिन करनी ही चाहिए। बस इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर कतिपय गुण वर्णन करने का साहस किया है।

कार्य कुशलता

उनकी कार्य करने में जो चतुराई है, निपुणता है उसका उदाहरण देखना है तो कभी आचार्यश्री के वस्त्रों पर दृष्टि डाल लीजिए। इतनी महीन, बारीक और सफाई से सिलाई की हुई होती है कि एक अनुभवी दर्जी या नई से नई तकनीक की सिलाई मशीन मात खा जाए। जब कभी गुरुदेव के विराजने का आसन बिछाते हैं तब देखिए इतना सटीक व्यवस्थित, एक सिलवट का नामोनिशान नहीं, कहीं से भी अव्यवस्थित नहीं। एक सुघड़ गृहिणी प्रेस की हुई चादर को बड़ी यतना से लगाए तो भी हो सकता है एक दो सल रह जाए, पर भावी आचार्यश्री हर कार्य इतनी कुशलता से करते हैं कि किञ्चित् मात्र गड़बड़ का प्रश्न ही नहीं उठता। जब कभी गोचरी पधारते हैं, तब आप इनके पात्रों को व्यवस्थित रखने की कला देखिए, किसी भी सामग्री के लिए कोई अखबार का टुकड़ा, कोई थैली आदि की आवश्यकता ही नहीं, पात्र एक के ऊपर एक इतने सुन्दर तरीके से व्यवस्थित कि मजाल इधर-उधर हिले-डुले, कोई सामग्री गिरे या झोली में दाग लगे। इतनी कुशलता तब ही आ सकती है जब आप प्रत्येक कार्य एकाग्रचित्त होकर करते हैं। आप सोचेंगे कि वस्त्र सिलना, संस्तारक बिछाना, प्रतिलेखना अथवा पात्रों की सुव्यवस्था आदि की कुशलता भौतिक रूप में है, आध्यात्मिक जगत से इसका क्या लेना-देना। परन्तु व्यवहार रूप को देखकर ही निश्चय रूप को भाँपा जा सकता है, उसका मापन किया जा सकता है। बाहरी कार्यों में इतनी सजगता भी उसी जीव में रह सकती है जो आत्मा के हित के लिए सजग है, एकाग्रचित्त है। मन की बुद्धि की स्थिरता वाला जीव ही बाहरी कार्य करते समय सजग रह सकता है। उन्होंने स्वाध्याय में एकाग्रचित्त होकर रमण किया और करते रहते हैं। उनकी बाहरी कुशलता में भी यही एकाग्रता झलकती है।

दही के मंथन से ही, मक्खन है निकलता,
परिश्रमी के क़दमों को ही, चूमती है सफलता।
अहंकार के विनाश की ही, परिणति है सरलता,
परिणाम है भीतर में एकाग्रता की कुशलता।।

सेवा भावना

जैसे महावीर के प्रति समर्पण, सेवा का भाव गौतम स्वामी में देखा जाता है, सुना जाता है, उसी सेवा भाव का प्रत्यक्ष दर्शन आप भावी आचार्यश्री में कर सकते हैं। आप वर्तमान आचार्यप्रवर की जो अग्लान भाव से सेवा करते हैं वह कथनातीत है। सेवा वही कर सकता है जिसमें विनय का गुण विद्यमान हो। उत्तराध्ययनसूत्र के प्रथम अध्ययन की दूसरी गाथा में कहा है-

आणानिद्देसकरे, गुरुणमुववायकारए।
इंगियागारसंपण्णे, से विणीए त्ति वुच्चइ।।

अर्थात् जिसमें निम्नलिखित तीन लक्षण हों वही 'विनीत' कहलाता है-(1) गुरु की आज्ञा और निर्देश के अनुसार प्रवृत्ति करना। (2) गुरुओं के सान्निध्य में रहकर उनकी सेवा करना। (3) गुरु की चेष्टा और आकृति को देखकर उनके मनोभावों को समझ लेना।

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., भावी आचार्यश्री के गुरुभाई हैं, पर भावी आचार्यश्री उन्हें हर समय 'गुरुदेव' 'आचार्य भगवन्त' शब्दों से सम्बोधित करते हैं। जितना सम्मान एवं आदर पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री हस्ती का करते थे वैसा ही वर्तमान आचार्यप्रवर के प्रति अहोभाव है। आप आचार्यश्री के इशारे मात्र को तुरन्त समझ लेते हैं, मुख से कहने का तो अवसर ही नहीं आता। यह सेवाभावना भावी आचार्यश्री में संयमी बनने के बाद नहीं आई, अपितु बचपन से ही विद्यमान है। सुनते हैं कि भावी आचार्यश्री के कोई सांसारिक बहन नहीं थी, मात्र भाई हैं। इसलिये अपनी सांसारिक माताजी के गृहकार्यों में यथासम्भव सहायता करते थे। बर्तन, झाड़ू-पौंछा इत्यादि कार्य कर लेते थे, जिससे माँ को थोड़ा आराम मिल सके। ऐसे भी कह सकते हैं माँ की सेवा का कोई भी मौका गँवाना नहीं चाहते थे। माँ और गुरु की सेवा तक तो फिर भी ठीक है,

परन्तु छोटे सन्तों की सेवा में भी राई मात्र पीछे नहीं रहते हैं। रत्नसंघ के सन्तों में 'धायमाता' के नाम से विख्यात भावी आचार्यश्री ने लघुवय में दीक्षित सन्तों की सार-सम्भाल एक माँ से बढ़कर की। रत्नसंघ के अग्रज सन्त होते हुए भी, स्वयं गोचरी जाना, सन्तों की प्रत्येक जरूरत का ध्यान रखना, उनके स्नेह और सेवा भाव को प्रकट करता है।

तन-मन के समर्पण से ही, हो सकता सेवा का काम है,
कर सकता वही जिसके जीवन में, प्रमाद का नहीं नाम है।
सेवा मुझे सबकी करनी, चिन्तन यही सुबह-शाम है,
उन भावी आचार्य महेन्द्रमुनि के चरणों में प्रणाम है।।

समय-प्रबन्धन

भावी आचार्यश्री का प्रत्येक कार्य समय के साथ होता है। समय-प्रबन्धन की व्यवस्था इतनी सुन्दर होती है कि चाहे प्रवचन हो, गोचरी हो, वर्तमान आचार्यश्री का सेवा कार्य हो, वाचनी हो अथवा सन्त-सतियाँजी म.सा. को समय देना हो अथवा लोच करना हो, हर कार्य नियत समय पर ही होता है। उनका समय-प्रबन्धन इतना प्रभावी है, ऐसा प्रेरणादायक है कि एक बार सोचने को मजबूर कर देता है कि हम भी गृहस्थ जीवन में यदि सुनियोजित समयानुसार कार्य करे-तो अपनी आत्मा के लिए, उसके कल्याण-उत्थान के लिए आराम से समय निकाल सकते हैं। हमें यह बहाना नहीं बनाना पड़ेगा कि धर्म करणी करना तो चाहते हैं, पर समय नहीं मिल पाता। ज्ञानी सन्त महापुरुषों के मुखारविन्द से कई बार सुना **'खणं जाणाइ पंडिए'** जो क्षण अर्थात् (समय) को जानता है वही पण्डित अर्थात् (ज्ञानी है)। मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. के प्रवचन में एक वाक्य सुना था-'समय के लिए समय का सदुपयोग करना ही समय है।' समय के तीन अर्थ फरमाते हुए म.सा. ने बताया-समय का एक अर्थ है आत्मा, दूसरा अर्थ समय और तीसरा अर्थ सिद्धान्त है। आत्मा के लिए प्राप्त समय का सदुपयोग करना ही सिद्धान्त है। समय के प्रत्येक क्षण की कीमत अप्रमत्त अवस्था वाला हलुकर्मी जीव ही कर सकता है। उनकी हर क्रिया में अप्रमत्तता झलकती है, समय का क्या मूल्य रहा हुआ है स्वयं उनका जीवन वर्णन कर रहा है। बीता समय वापस लौटकर नहीं आता और मानव जीवन का प्रत्येक समय मात्र कर्मों की निर्जरा के लिए है, यही सिद्धान्त भावी आचार्यश्री के जीवन का मूल मन्त्र है।

बीता समय लौटकर आता नहीं,
ज्ञानी पुरुष इसे व्यर्थ में गँवाता नहीं।।
आत्म अवलोकन के अतिरिक्त जिसे कुछ भाता नहीं,
ऐसा अप्रमत्त जीव संसार में फिर गोता खाता नहीं।।

स्वाध्याय-प्रेम

सुना है जब तक प्रतिदिन 2,000 गाथा का स्वाध्याय नहीं हो जाता तब तक भावी आचार्यश्री शयन नहीं करते हैं। अन्य सन्तों को भी पाठ देना, वापस उनसे सुनना, उनकी दिनचर्या का अभिन्न अंग है। वे मात्र स्वाध्याय पढ़ते नहीं, अपितु स्वाध्याय उनमें रमण करता है। वे हर सन्त-सती, श्रावक-श्राविका की जिज्ञासाओं का तुरन्त सटीक समाधान प्रस्तुत करते हैं। अनेक आगम उन्हें कण्ठस्थ हैं और वाचनी देते समय उनका आन्तरिक ज्ञान मुखरित स्वर में स्वयं बोलता है। प्रवचन की प्रभावना ऐसी कि सरल शब्दों में आगम का ज्ञान हृदय में उतर जाए। स्वाध्याय के पाँच अंग मान्य हैं-वाचना, पृच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा और धर्मकथा। धर्मकथा अर्थात् प्रवचन भी स्वाध्याय का ही रूप बताया है। उत्तराध्ययनसूत्र के 29वें अध्ययन की 23वीं पृच्छना-भगवन्त! धर्मकथा से जीव को क्या प्राप्त होता है? समाधान में बताया-'धर्मकथा से कर्म निर्जरा होती है, प्रवचन की प्रभावना होती है। प्रवचन की प्रभावना से आगामी काल की भद्रता के लिए भविष्य में शुभ फल देने वाले कर्मों का जीव बन्ध करता है। उनके प्रवचन में सरसता है, माधुर्य है, आगम ज्ञान का ख़जाना है और प्रत्येक जीव के लिए कल्याण की कामना है।'

स्वाध्याय है कर्म निर्जरा का हेतु,
भावी जीवों के लिए मोक्ष मार्ग का सेतु।

पार उतरने को भव सागर से,
स्वाध्याय सहारा अब ले ले तूँ।।

वाक्पटुता

वाक्चातुर्य के धनी भावी आचार्यश्री संघ की व्यवस्थाओं में आई किसी भी समस्या का सटीक समाधान मात्र एक वाक्य में कर देते हैं। वे कम बोलते हैं। अपने दैनिक कार्यकलाप, गोचरी, प्रवचन के अतिरिक्त काफी समय मौन की साधना करते हैं। कभी-कभी सतियाँजी म.सा. किन्हीं व्यवस्थाओं को, जिज्ञासाओं अथवा समस्याओं को लेकर आपके पास आते हैं तो पल भर में अपनी वाक्पटुता के कारण संक्षिप्त उत्तर से भी उन्हें सन्तुष्ट कर देते हैं। जब किसी के घर गोचरी जाते हैं तब उनके मुख से निकलने वाले शब्द 'पुण्यवान बाईजी' सामने वाले को आनन्द-विभोर कर देते हैं और जब कुछ सामग्री नहीं लेनी होती है तो 'त्याग-वोसिरे' के शब्द से सामने वाला समझ जाता है कि अब भगवन्त किसी भी हालत में झोली खोलने वाले नहीं हैं। प्रवचन में कुछ भी प्रेरणा करनी हो, चाहे तप की, सामायिक-संवर-पौषध की, उनके बोलने का तरीका इतना प्रभावी है कि हृदय को अन्तर से झकझोर देता है। जिसका विचार कुछ न करने का हो वह भी कुछ न कुछ भेंट तो अर्पित करता ही है।

सरसता और मधुरता का भण्डार आपकी वाणी,
कह जाती मानो प्रत्येक से अपनेपन की कहानी।
वाक्पटुता में नहीं कोई आपका सानी,
तभी तो हर भक्त ने आपकी बात हृदय से मानी।।

तपोमार्ग के अद्भुत राही

मोक्षमार्ग के चार साधन बताएँ हैं। ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तप। हर साधन को आपने साधा है। ज्ञान की ज्योति पाने के लिए अथक प्रयास किया, देव-गुरु-धर्म के प्रति अनुपम श्रद्धा, चारित्र का निरतिचार पालन और आत्म-निर्जरा के लिए तप को आपने अपने जीवन का अभिन्न अंग बना लिया है। तप के बारह भेदों में से ऐसा कोई तप नहीं, जिसे आपने जीवन में नहीं उतारा। वर्षों से एकान्तर की तप साधना, बीच में न जाने कितने बेले-तेले आप करते रहते हैं। मासक्षपण जैसी दीर्घ तपस्या, कितने चौले, पचौले, पन्द्रह। इतनी तपस्या तब ही हो सकती है जब शरीर की आसक्ति खत्म हो जाए और उस तपस्या में भी गोचरी एवं प्रवचन अनवरत चालू रहते हैं। जयपुर चातुर्मास में देखा, पचोले की तपस्या में भी पाँच-पाँच मञ्ज़िल गोचरी हेतु जा रहे हैं। कितने निष्काम भाव से तप, कर्मों को तोड़ने हेतु कितनी सजगता, प्रभु महावीर के प्रत्येक वाक्य पर कितनी अटूट श्रद्धा। कायक्लेश तप ऐसा कि शीत ऋतु में कड़कड़ाती ठण्ड में मात्र एक चादर में रात्रि व्यतीत करते हैं।

सुन्दर है तप का मार्ग, कर्म शत्रु हार जाता है,
निर्जरा होती कर्मों की, भव से पार पाता है
जिसने तोड़ी आसक्ति शरीर की,
उसके कर्म बन्ध रुक जाता है
ऐसे तपस्वी के चरणों में नर-नारी क्या,
देव भी शीश नमाता है।

ऐसे तो 64 इन्द्रों का वर्णन साहित्य में आता है, पर इन्द्र भी देवता होने से व्रत पच्चक्खाण नहीं ले पाता है। हालाँकि वह सम्यग्दृष्टि होने पर सुगति का ही अधिकारी होता है, पर प्रत्यक्ष रूप से उसी भव में मोक्ष प्राप्त नहीं कर पाता है। हमारे भावी आचार्य तो महा + इन्द्र = महेन्द्र हैं। अपने नामानुसार उन इन्द्रों से भी भव्य एवं महान् है। ज्ञान-दर्शन-चारित्र के रत्नत्रय के सामने इन्द्र की सारी ऋद्धि फीकी है। उत्तराध्ययनसूत्र का 11वाँ अध्ययन बहुश्रुतमुनि की व्याख्या करते हुए उनमें इन्द्र के चार विशेषणों का बखान कर रहा है-सहस्राक्ष, वज्रपाणि, पुरन्दर और देवाधिपति। (1) सहस्राक्ष का अर्थ है जैसे इन्द्र के एक हजार आँखें होती है इसी प्रकार बहुश्रुत के श्रुतज्ञान एवं नयों की हजार आँखें होती हैं। (2) वज्रपाणि-जैसे इन्द्र के हाथ में हमेशा वज्र रहता है ठीक उसी प्रकार बहुश्रुत भी क्षमा रूपी वज्र को सदैव धारण करते हैं। (3) पुरन्दर-जैसे इन्द्र दैत्यों के पुर अर्थात् नगरों का विदारण करता है ठीक उसी प्रकार

बहुश्रुत भी राग-द्वेष रूपी दैत्यों का विदारण करते हैं। (4) देवाधिपति-जैसे इन्द्र देवों का अधिपति है इसी प्रकार बहुश्रुत भी देवतुल्य साधुओं का अधिपति है। भावी आचार्यश्री में भी आपको ये चारों विशेषताएँ देखने को मिल जाएगी। वे श्रुतज्ञान के धारक, स्वाध्याय प्रेमी, आगमज्ञ हैं। उनके चर्मचक्षु भले ही दो हैं, पर श्रुतज्ञान की हजार आँखों के वे स्वामी हैं।

उनके चेहरे पर मुस्कान, हृदय में वात्सल्य, नयनों में करुणा, जिह्वा पर सरस्वती और हाथ में क्षमा रूपी वज्र का निवास है। वे राग-द्वेष, मोह-ममता, मान-अपमान से हमेशा निर्लिप्त रहते हैं। तप के आचरण से उन्होंने कर्म शत्रुओं को मात कर दिया है, वे वीतरागी बनने की ओर अग्रसर हैं। ये काम भोग रूपी दैत्य अब उनके शरीर रूपी नगर में प्रवेश नहीं पा सकते हैं क्योंकि संयम रूपी चौकीदार उन्हें शरीर रूपी नगर के भीतर आने ही नहीं देता। पूज्य आचार्यश्री ने उन्हें भावी आचार्य के रूप में चयनित किया है, इसलिये वे अब संघ के सभी संयमी आत्माओं के प्रमुख हैं। इस रूप में वे यथानाम इन्द्र के सभी गुणों से सुशोभित हैं, बल्कि इन्द्र से भी अधिक महान् होने से 'महेन्द्र' नाम को सार्थक कर रहे हैं। इन्द्र का गुणस्थान चौथा है जबकि एक संयमी साधु छट्ठे और सातवें गुणस्थान में रमण करता है। इन्द्र को आयु पूर्ण होने पर मनुष्य गति में आना होता है जबकि एक संयमी साधु-आगामी भव में देवलोक का अधिकारी होता है। फिर एक भवतारी भी हो सकता है।

प्रकाश समाया जैसे सूरज में,
खुशबू समायी चन्दन में।
गुणों के रत्न समाये वैसे,
सोहिनी पारस के नन्दन में।।
गुरु हीरा की कृपा से, बना है वो संघ का सिरताज,
ऐसे महेन्द्र गुरुवर पर, रत्नसंघ को बहुत है नाज़।
लगा दिया सेवा में जीवन, आत्महित स्पन्दन में,
श्रद्धा से हम शीश झुकाते, हे अध्यवसायी! तेरे वन्दन में।।

ऐसे तो महापुरुषों के गुणों को लेखनी में नहीं ढाला जा सकता है, पर सच में भावी आचार्यश्री का जीवन इतना सरल है कि जिसकी व्याख्या के लिए भारी भरकम शब्दों के सहारे की आवश्यकता ही नहीं है। उनके दर्शनमात्र से ही हर व्यक्ति अपनी श्रद्धा को अभिव्यक्त कर सकता है। अन्त में यही शुभकामना करते हैं कि जिनशासन और संघ उनके नेतृत्व में और देदीप्यमान बने, उज्ज्वल बने और कीर्ति को प्राप्त करे।

-एस 149, महावीर नगर, टोंक रोड़, जयपुर-302018 (राजस्थान)

प्रमुदित मन से संसार-सागर पार करें

श्री देवेन्द्रनाथ मोदी

जो जीवन से उदास एवं हताश है,
जो अकेलेपन की उबाऊ मन:स्थिति से
अपनों की प्रतीक्षा कर रहे हैं,
उनके जीवन की उदासी धर्माराधना में विलीन हो।

जो वेदना और विपत्ति के चक्रव्यूह में
संतप्त होकर कराह रहे हैं,
उनके जीवन की व्यथा धर्म-ध्यान में समाप्त हो।

जो अनुकूलता में साधना से दूर हैं,
जो प्रतिकूलता में समाधि से दूर हैं,
वे भगवत्-भक्ति की नौका-विहार में
अहोभाव का चप्पू चलाकर
प्रमुदित मन से संसार-सागर पार करें।

स्नेह और सद्भाव से पूरित भक्ति का
सुसज्जित सौरभयुक्त गुलदस्ता
जीवन की प्रबुद्धता के साथ
सम्यक् आनन्द से सरोबार करें।

-'हुकम', 5-ए/1, सुभाष नगर, पाल रोड़, जोधपुर-342008 (राजस्थान)

10 अप्रेल 2023
जिनवाणी 58
ISSN 2249-2011

चिन्तन

कुछ विचारणीय बिन्दु

डॉ. अनिल कुमार जैन

हिंसा से अनभिज्ञ सन्त

पिछले लगभग 50 वर्षों में जितना अधिक मूर्तियों, मन्दिरों और तीर्थों का निर्माण हुआ है उतना सम्भवतः कभी नहीं हुआ। मुडासा निवासी जीवराज पापड़ीवाल एक अपवाद है, जिन्होंने सम्वत् 1548 में एक लाख मूर्तियों की प्रतिष्ठा कराई थी तथा उन मूर्तियों को देश के अनेक स्थानों पर भिजवाया था। वह उस समय की आवश्यकता और जैनधर्म की प्रभावना का कारण था। अब ये कार्य आवश्यकता के लिए कम और नाम कमाने के लिए अधिक होने लगे हैं। अधिकतर ये सभी कार्य सन्तों की प्रेरणा से ही होते हैं। उनका तर्क रहता है कि जैनधर्म इससे जिन्दा रहेगा। एक दूसरा तर्क यह भी देते हैं कि यदि किसी एक व्यक्ति को भी इन तीर्थों और मन्दिरों के दर्शन करने से मोक्ष की प्राप्ति हो गई तो होने वाली सारी हिंसा से कहीं लाख गुना अधिक पुण्य मिलेगा।

उनको यह तो मालूम है कि निर्माण कार्यों में हिंसा होती है, लेकिन वे इस बात से अनभिज्ञ हैं कि इन कार्यों में वास्तव में कितनी हिंसा हो रही है। यदि सौ वर्ग गज के क्षेत्र में एक मन्दिर बनाया और उसके आधे हिस्से में गर्भतल बनाया या फिर मन्दिर का भूमि स्तर ऊपर उठाने के लिए मिट्टी डलवाई, तो उसमें कितने त्रस जीवों की हिंसा होगी, इसका एक अनुमान तो लगा ही सकते हैं। एक ग्राम मिट्टी में बहुत सारे त्रस जीव पाये जाते हैं, जिन्हें माइक्रोस्कोप से देखा जा सकता है। इसमें जीवों की लगभग चार हजार से चालीस हजार तक प्रजातियाँ पाई जाती हैं। यदि 10 फुट x 10 फुट x 10 फुट मिट्टी हटानी पड़ी है तो सौ अरब को सौ अरब से गुणा करने पर जो राशि आयेगी, लगभग उतने जीवों की हिंसा होगी। भवन-निर्माण के लिए जो पत्थर प्रयोग में लाये जायेंगे उनमें स्थावर जीवों और कुछ त्रस जीवों की जो हिंसा होगी वह अलग है। यदि भूमि पर एक पेड़ लगा है और उसे काटना पड़े तो अनेक संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवों सहित असंख्यात स्थावर जीवों की हिंसा भी कर रहे हैं। पेड़ के काटने पर या खानों से पत्थर निकालने पर पर्यावरण में परिवर्तन कितना आएगा और कितने जीव नष्ट होंगे, इसका भी शोध होना चाहिए। उनके ट्रांसपोर्टेशन आदि के कारण जो प्रदूषण होगा वह अलग है।

निवेदन इतना ही है कि अनावश्यक निर्माण कार्यों या सिर्फ दूसरों से अधिक दिखने की होड़ के कारण निर्माण कार्यों से बचना चाहिए, जिससे इन त्रस और स्थावर जीवों की हिंसा से बच सकें। कोई कह सकता है कि आप अपने घर के निर्माण में भी इतना सोचते हैं क्या? हमारा मानना है कि घर-निर्माण में भी विवेक रखना चाहिए। जैसा कि श्री जिनेन्द्र वर्णी जी ने कहा कि जितना हो सके उतना हम गृहस्थों को भी हिंसा का अल्पीकरण करना ही चाहिए। साधु महाव्रती होते हैं, उन्हें तो बिल्कुल ही बचना चाहिए।

पंचकल्याणकों एवं दीक्षा आदि प्रसङ्गों पर हाथी और घोड़ों का इस्तेमाल भी होता है। उन पशुओं की तरफ तो किसी का ध्यान भी नहीं जाता है। जयपुर के एक एडवोकेट इन पर होने वाले अत्याचारों के खिलाफ वर्षों से कार्य कर रहे हैं। समारोहों में सम्मिलित होने वाले इन हाथियों और घोड़ों को न तो भरपेट खाना दिया जाता है और न ही बीमार होने पर उनका समुचित इलाज कराया जाता है। जयपुर में हाथिओं का एक पूरा गाँव ही है। आमेर में पर्यटकों के मनोरञ्जन के लिए उनका इस्तेमाल किया जाता है। कई बार रिपोर्ट सामने आई है

कि इनमें से अधिकतर हाथी बीमार हैं। अभी हाल ही में यहाँ रोबोट हाथी को लाया गया है। दक्षिण के हिन्दू मन्दिरों में भी रोबोट हाथियों का प्रयोग किया जाने लगा है। यह एक अच्छी शुरुआत है। क्या अहिंसक जैन समाज भी इस तरफ ध्यान देगा?

पैसा बोलता है

लोग कहते हैं कि पैसा सब कुछ नहीं है, लेकिन फिर भी पैसा बहुत कुछ होता है। चाहे राजनीतिक क्षेत्र हो या फिर धार्मिक। वर्तमान में देखने में तो यही आ रहा है कि पैसे में सही को गलत और गलत को सही ठहराने की ताकत है। पैसा है तो मूर्ख, दुराचारी, अत्याचारी भी पूजे जाते हैं, टीवी पर उनका नाम आता है, टीवी सञ्चालकों को खरीदा जा सकता है। समाज और देश में प्राय: उनको ही इज्जत मिलती है जिनके पास पैसा है। धार्मिक क्षेत्र में पैसे से श्रीजी का अभिषेक करने का पहले मौका मिलता है, बड़े-बड़े पोस्टरों में इज्जत के साथ नाम छपता है।

आज अनेक जैन टीवी चैनल हैं, जिनमें प्रायः सभी पर प्रायोजित कार्यक्रम ही आते हैं। जो सन्त अधिक पैसे खर्च कर सकता है उसके प्रवचन आसानी से प्रसारित किये जाते हैं। यही हाल जैन पत्र-पत्रिकाओं का भी है। जो कोई उनको पन्द्रह-बीस हजार दे दे, उसका विशेषांक निकाल देंगे। सम्पादकीय में उसके गुणगान करने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे और ऐसा बतायेंगे कि भगवान महावीर के बाद वे ही एक अकेले महान् व्यक्ति हुए हैं, जिनका विशेषांक निकाल रहे हैं। आज कतिपय सम्पादकों में इतनी भी नैतिकता नहीं बची है कि जिनके आचरण की कुछ समय पहले तक आलोचना और निंदा करते थे, आज वे पैसे मिलने के कारण उनकी प्रशंसा करने में लगे हैं। उनकी सही को सही और गलत को गलत कहने की हिम्मत पैसे के आगे समाप्त हो जाती है। 'धर्म मंगल' की सम्पादिका प्रा. सौ. लीलावती जैन अपनी जान पर खेल कर कुछ लिखती थीं। यदि कोई शोधकर्ता उनके पुराने अंकों को देखे और आज के पत्र-पत्रिकाओं के विशेषांकों को देखे तो कन्फ्यूज्ड हुए बगैर नहीं रहेगा। कुछ पत्र-पत्रिकाएँ स्वयं को इसलिए निष्पक्ष कह देती हैं क्योंकि उनको उनसे पैसे नहीं मिल पाये हैं। जिस दिन उनसे पैसे मिल जायेंगे, वे भी उनका गुणगान करने लगेंगे।

आज अनेक लोभी विद्वान भी हैं जो कभी जिनकी आलोचना करते थे, अब उनकी प्रशंसा करने में लगे हैं, उनकी खूबियाँ बताने लगे हैं। पैसा मिला, विचार बदले। विद्वानों में एक कला तो होती ही है। वे दुराचारी को महान् और मूर्ख को विद्वान बना सकते हैं। कालिदास का किस्सा तो सभी को मालूम ही है कि किस प्रकार राजकुमारी से बदला लेने के लिए विद्वानों ने मूर्ख कालिदास को महान विद्वान् सिद्ध कर दिया था। जब विद्वानों से पूछो कि पहले आप कुछ और कहते थे और अब उसके विपरीत कहते हो, ऐसा क्यों? तो उनके पास सटीक उत्तर है, पुराणों में भी प्रायश्चित्त की व्यवस्था है, माघनन्द का उदाहरण हमारे सामने है, पहले व्यक्ति गलत हो सकता है लेकिन बाद में बदल सकता है। मैं भी मानता हूँ कि ऐसा हो सकता है, इतिहास में ऐसे कई उदाहरण हैं। लेकिन आज प्रायःकर ऐसा होता नहीं है।

पिछले दिनों राजस्थान सहित देश के अनेक हिस्सों में कई सन्तों के अनुचित कारनामे सामने आए। कुछ को संदिग्ध अवस्था में पकड़ा गया था। उनका बहिष्कार ही नहीं, कपड़े पहनाने तक की बात भी चली थी। विद्वान् भी लामबन्ध हो गये थे। अब स्थिति बदल गई है। अब तो विद्वान् भी उनके आगे नतमस्तक हो रहे हैं और गुणगान करते हैं, उनके सान्निध्य में आयोजित संगोष्ठियों और अन्य कार्यक्रमों में सम्मलित हो रहे हैं, क्योंकि उन्हें मालूम है कि बदले में उन्हें उपहार, भेंट आदि मिलने वाले हैं। दूसरी ओर मुनि सरलसागरजी जैसे मुनि बहिष्कृत हैं जिन्होंने 'नग्नत्व समीक्षा' सहित जैनधर्म में व्याप्त आडम्बरों पर अनेक समीक्षाएँ लिखीं थीं। अधिकतर लोगों को उनके बारे में कुछ पता भी नहीं होगा।

कोई कुछ भी कहें, आज जैनधर्म का पावन अस्तित्व खतरे में है। जैनधर्म अब पुस्तकों में ही रहेगा, आचरण में नहीं। मेरा अनुमान है कि जैनधर्म सन् 2050 तक समाप्त हो ही लेगा और जब इसकी समाप्ति का इतिहास लिखा जायेगा तब इस समाप्ति के लिए वर्तमान के अनेक सन्तों, विद्वानों और पत्रकारों के योगदान को भी याद किया जायेगा।

-डी-197, मोती पार्क के सामने, मोती मार्ग, बापू नगर, जयपुर-302015 (राज.)

प्रार्थना के स्वर

डॉ. रमेश 'मयंक'

प्रार्थना-
परमात्मा से रुख मिलाना
मानो सूर्य की किरणों को
करते हुए आत्मसात्
भीतर एक ज्योति का जगमगाना,
प्रकाश-पुञ्ज से
अन्तर्बाह्य जगत का
उर्जस्वित-आलोकित होकर
देदीप्यमान हो जाना।

प्रार्थना के स्वर-
शुद्ध वायु का सेवन करने की
अनुभूति का अहसास जगाते,
गन्दगी से दूर
वैचारिक ताजगी से भर पाते,
चित्त को शुद्ध निर्मल-पवित्र बनाकर
मानव-कल्याण हितार्थ बढ़ाते।

प्रार्थना से जुड़कर-
मन के लिए शान्ति पाठ करना,
आत्मा के लिए सम्बल पाना,
शरीर के लिए समय-श्रम
प्रवृत्तियों को
सार्थकता की दिशा में
संचालित कर पाना,
दुर्लभ मानव जीवन के लिए
क्रोध-कुविचार,
लालच-अहंकार का
तिरोहित हो जाना,
अपूर्णता से पूर्णत्व को पाने का पथ
सुगम बनाना।

प्रार्थना-
जड़ भाव को रोकती
भटकाव से बचाती
ज्ञान-ध्यान, योग-साधना का
मर्म समझाती,
गुणों के मकरन्द का
सञ्चित कोश बढ़ाती
ध्यान मग्न होकर साधक के हाथों
तुलसी की वाणी
कबीर का धागा
मीरा का इकतारा
और महावीर का नवकार बन जाती
हमें प्रभु की महिमा का
स्तवन करने में जुटाती है,
अपने भीतर परम ज्योति को
स्थापित कर तेजोनिधान बनाती है।

-बी-8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-372001 (राज.)

10 मई 2023
जिनवाणी 61
ISSN 2249-2011

अध्यात्म

क्षणभंगुर जीवन में अचाह बनें

डॉ. एन. के. खींचा

मनुष्य जीवन भर इच्छाओं, कामनाओं के पीछे भागता रहता है। किन्तु अधिकतर इच्छाओं की पूर्ति नहीं हो पाती है। कुछ इच्छाओं की पूर्ति हो भी जाती है तो, व्यक्ति फूला नहीं समाता है और मद से ग्रस्त हो जाता है। जीवन पर्यन्त यह क्रम चलता ही रहता है।

इस क्षणभंगुर जीवन में सांसारिक सुख की प्राप्ति के लिए मानव मन प्रयत्नशील रहता है, लालायित रहता है। किन्तु वह यह नहीं जान पाता है कि सुख स्वरूप तो वह स्वयं है। ये सांसारिक सुख तो क्षणभंगुर हैं।

जैनदर्शन के आगम आत्मविद्या के अक्षय कोष हैं, जिनमें आत्मविद्या, तत्त्वज्ञान, जीवविज्ञान तथा ज्ञानविज्ञान के विविध सूत्रों का सम्यक् बोध उपलब्ध है। आगमों की शृङ्खला में उत्तराध्ययनसूत्र में तीर्थङ्कर महावीर की वाणी के अद्वितीय जीवनसूत्र उपलब्ध हैं, जिनमें ज्ञान, दर्शन और चारित्र का अद्भुत सङ्गम है।

उत्तराध्ययनसूत्र के चतुर्थ अध्ययन में क्षणभंगुर जीवन के प्रति आगाह किया गया है। कहा गया है कि प्रमाद त्यागो, यह ज्ञात नहीं है कि जीवन की इतिश्री कब हो जायेगी। आलस्य, प्रमाद, तन्द्रा त्यागकर अन्तर्मुखी बन जायें। राग-द्वेष को त्यागकर वैर से बचें, कर्म से मुक्त बनें। कृत कर्मों का परिणाम (फल) भोगे बिना मुक्त होना सम्भव नहीं है। कर्मफल में कोई भी हिस्सेदार नहीं होते हैं।

यह भी सत्य है कि कहीं भी (लोक अथवा परलोक में) धन से त्राण अथवा संरक्षण नहीं है। अत: राग-द्वेष, वासना, कामना अथवा पाप-प्रवृत्ति से बचें। प्रतिक्षण जागकर कर्म करें, प्रमाद को त्यागें। अप्रमत्त होकर कर्मशील रहें। कहा भी गया है कि करने में सावधान एवं होने में प्रसन्न रहें। जीवन का लक्ष्य तय करें। अपना विजन, मिशन, ऐम और ऑब्जेक्टिव बनायें। वासना को त्यागें, आत्मरक्षक बनें।

इच्छाएँ आकाश के समान अनन्त हैं। यह मेरा है, इस ममत्ववृत्ति के कारण प्राणी संसार में भटकते रहते हैं। असन्तोषी व्यक्ति को सर्वत्र भय रहता है। अत: कामनाओं पर विजय प्राप्त करें, किन्तु कामनाओं के पार पाना कठिन है। कामनाओं का परित्याग करें। तृष्णा का गड्ढा भरने के लिए जगत् परमाणु तुल्य है।

कामना अशान्ति का कारक है। भौतिक समृद्धि से कभी शान्ति नहीं मिल सकती। तृष्णा, लिप्सा भयावह है। भोगवृत्ति को जीर्ण करें, क्षीण करें, मिटा डालें। अठारह पापों से बचें। माया मृषावाद सत्य को नष्ट कर डालता है। क्रोध, मान, माया, लोभ दुर्गुण हैं, अतएव परित्याग करें। लोभ को सन्तोष से जीतें। धन और जीवन जल के बुलबुले के समान हैं। परिग्रह को त्यागकर अपरिग्रही बनें, यत्नशील बनें, बोधशील बनें। सद्गृहस्थ सम्यक् आजीविका अपनाते हैं। प्रज्ञा जगाएँ; क्योंकि यह मनुष्य जीवन ही मूल धन है।

संसार के पदार्थों का त्यागभाव से भोग करें। किसी के प्रति आसक्त न बनें। त्याग भाव से भोग करने का अर्थ है-आसक्ति, त्याग अथवा परिग्रह से मनुष्य कभी-भी धनादि द्वारा तृप्त नहीं हो सकता। यह धनादि तो विनश्वर है। कामना की तृप्ति कभी होती ही नहीं है। धन की तृष्णा कभी खत्म ही नहीं होती है।

समूचे ज्ञान का आधार आचार है। अहिंसा आचार है तथा हिंसा अनाचार है। आचरणीय पाँच वस्तुएँ हैं-ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य। आचार से आत्मा संयत होती है। आचार का अर्थ है-अहिंसा एवं सभी जीवों के प्रति संयम। पहले ज्ञान फिर अहिंसा।

मुक्ति का अधिकारी साधक होता है न कि असाधक। जो भी संग्रह किया जाता है वह लोभ का ही प्रभाव है।

उत्तराध्ययनसूत्र के 8वें अध्ययन की 46वीं गाथा में कहा गया है-**इच्छा हु आगाससमा अणंतिया।** इच्छाएँ आकाश के समान अनन्त हैं।

अपरिग्रह सिद्धान्त से इच्छा पर सीमा लगेगी, प्रवृत्ति में मोड़ आएगा। संग्रह की मनोवृत्ति छोड़ें। अपरिग्रह से चिन्ता मुक्ति सम्भव है, अतएव अप्रमत्त रहना चाहिए। परिग्रह महाभय का हेतु है। साधक मान, माया और लोभ का त्याग करें, अत: साधक प्रमाद न करें। अविद्या ही संसार का कारण है। ज्ञान और विवेक से चिन्तन करना चाहिए। आवश्यकतानुसार ही ग्रहण करें, क्योंकि धन-सम्पत्ति का संग्रह दु:ख का कारण है।

दशवैकालिकसूत्र के छठे अध्ययन की 21वीं गाथा में कहा गया है-**मुच्छा परिग्गहो वुत्तो।** मूर्च्छा को ही वस्तुत: परिग्रह कहा गया है।

भगवान महावीर श्रमण परम्परा के 24वें तीर्थङ्कर रहे हैं। श्रमण-परम्परा में सम शब्द को सर्वाधिक मूल्य दिया गया है। प्राकृत का 'सम' शब्द संस्कृत में तीन रूपों में व्याख्यात हुआ है-

1. सम = समता
2. शम = शान्ति
3. श्रम = तपस्या, स्वावलम्बन और आत्म-निर्भरता।

हम अक्सर छोटी-छोटी बातों, वस्तुओं, पदार्थों, भौतिक सम्पदा में उलझ जाते हैं। ये सब क्षुद्र वस्तुएँ हैं।

संसार तो यात्रा पथ है, इसमें चिपको नहीं। केवल आगे बढ़ते जाओ। हमारे चित्त में वासना की ग्रन्थियाँ पोषित हो रही हैं। जिनके कारण अभाव है, विषाद है और सन्ताप है। अतएव समता को पुष्ट करें, अचाह हो जायें।

प्राय: लोग धन को इकट्ठा करते-करते ही मर जाते हैं। सुखपूर्वक जीने का मौका ही नहीं आता है। असल बात है सुख-दु:ख के पार जाना। स्थायी प्रसन्नता प्राप्त करना लक्ष्य होना चाहिए। अतएव यतनाचारी बनकर विवेकी बनें। आवश्यकता का परिष्कार कर, क्षणभंगुर जीवन की कलिका में अचाह बनें।

-544 ए, सिद्धार्थ नगर, जवाहर सर्किल, जयपुर (राज.)

जिनवाणी पर अभिमत

प्रो. (डॉ.) हेमन्त शर्मा

जिनवाणी मार्च, 2023 के अंक का सम्पादकीय 'प्रभुवीर की स्तुति' में डॉ. धर्मचन्दजी जैन ने तीर्थंकर महावीर स्वामी को 26 नामों से सम्बोधित किया एवं उनका भावार्थ भी स्पष्ट किया जो कि अत्यन्त सार्थक एवं सारगर्भित हैं। 'धर्म का प्रथम चरण' 'अहिंसा' आलेख 'अहिंसा परमो धर्म', की उक्ति को चरितार्थ करता है। 'जैन होने के 10 लक्षण' सनातन धर्म में महाराज मनु द्वारा वर्णित 10 लक्षणों के लगभग समानार्थक हैं।

अंग्रेजी में लिखित प्रो. एस. आर. भट्टाचार्य का शोध-आलेख समकालिक वैश्विक समस्याओं के कारण एवं निवारण में आचार्य हस्ती के विचारों को व्यापक रूप से प्रस्तुत करता है।

आधुनिक समय में जैनधर्म जो कि सनातन धर्म के सदृश भारतीय मूल का धर्म है एवं प्रकाश स्तम्भ के समान प्रासंगिक है। वस्तुत: जैन धर्म मानवतावादी युग धर्म है। जैनधर्म के विभिन्न सम्प्रदायों/वर्गों की विशेषताओं का भी विवेचन अगले अंकों में प्रदान करें।

-जोधपुर (राज.)

10 मई 2023
जिनवाणी 63
ISSN 2249-2011

काव्य

इस जीवन का विश्वास कहाँ

श्री तरुण बोहरा 'तीरथ'

इस जीवन का विश्वास कहाँ
चलते चलते गिर जाते हैं ..
रुक जाती है साँस जहाँ
इस जीवन का विश्वास कहाँ।

रिश्तों के पत्ते बिखर जाते हैं ..
पतझड़ का आवास यहाँ
इस जीवन का विश्वास कहाँ।

सुबह शाम की भागदौड़ में ..
रुकने का अवकाश कहाँ
इस जीवन का विश्वास कहाँ।

इच्छाओं के आगे देखो ..
छोटा है आकाश यहाँ
इस जीवन का विश्वास कहाँ।

छूटे पैसा गाड़ी बंगला ..
मालिक हो या दास यहाँ
इस जीवन का विश्वास कहाँ।

राजा रानी ठाकर नौकर ..
रही अधूरी आस यहाँ
इस जीवन का विश्वास कहाँ।

शमशानों में जाकर आते..
पर मृत्यु का आभास कहाँ
इस जीवन का विश्वास कहाँ।

कितनों को मरते देखा है ..
पर खुद को ये अहसास कहाँ
इस जीवन का विश्वास कहाँ।

अर्थी से उठने का सोचें.....
पर दिल में होगी साँस कहाँ
इस जीवन का विश्वास कहाँ।

नाम और जाति यहीं पे छूटे.....
अन्त समय बस लाश यहाँ
इस जीवन का विश्वास कहाँ।

चिता लगी बस राख बचेगी ..
कोई कितना ख़ास यहाँ
इस जीवन का विश्वास कहाँ।

इक्के हो या दुक्के सबकी..
बिखरेगी ये ताश यहाँ
इस जीवन का विश्वास कहाँ।

धर्म ध्यान ही साथ चलेगा ..
पर उसकी कितनी प्यास यहाँ
इस जीवन का विश्वास कहाँ।

मुक्ति देश की हो तैयारी ..
नहीं दुःख का है वनवास जहाँ
इस जीवन का विश्वास कहाँ।

भक्त बने भगवान बनेंगे ..
बस पक्का हो विश्वास यहाँ
इस जीवन का विश्वास कहाँ।

तीरथ बोले पावन हो ले ..
यही वीरों का इतिहास यहाँ
इस जीवन का विश्वास कहाँ।

-'जिनशासन', 14, अग्रहारम स्ट्रीट, चिन्तादरीपेट, चेन्नई-600002 (तमिलनाडु)

10 मई 2023
जिनवाणी 64
ISSN 2249-2011

तत्त्व-चर्चा

आओ मिलकर कर्मों को समझें (27)

(अप्रत्याख्यानावरण-कषाय चतुष्क)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा- अप्रत्याख्यानावरण कषाय किसे कहते हैं?

समाधान-अप्रत्याख्यानावरण शब्द अ + प्रत्याख्यान + आवरण इन तीनों से मिलकर बना है। अ का अर्थ है- अल्प, प्रत्याख्यान का अर्थ है- नहीं करने योग्य प्रतिज्ञा, आवरण का अर्थ है-ढँकने वाला। इन सब को मिलाने पर अर्थ बनता है-अल्प प्रत्याख्यान को भी ढँकने वाला कषाय। सामान्य शब्दों में यह कहा जा सकता है कि जो कषाय आंशिक त्याग रूप अल्प प्रत्याख्यान को भी न आने दे, उसे अप्रत्याख्यानावरण कषाय कहते हैं। यह कषाय देशविरति गुण अर्थात् श्रावक धर्म की प्राप्ति में बाधक बनता है।

जिज्ञासा- अप्रत्याख्यानावरण कषाय को आगम में किस नाम से बतलाया है?

समाधान-अप्रत्याख्यानावरण कषाय को प्रज्ञापना सूत्र के 23वें पद में अप्रत्याख्यानी कषाय के नाम से बतलाया है। यहाँ अप्रत्याख्यानी शब्द का अर्थ- जो प्रत्याख्यान नहीं आने दे अर्थात् छोटा-बड़ा किसी भी प्रकार का प्रत्याख्यान जिस कषाय के उदय के कारण ग्रहण-पालन नहीं किया जा सके। गहराई से देखने पर अप्रत्याख्यानावरण तथा अप्रत्याख्यानी दोनों शब्द के अर्थ एक समान ही निकल जाते हैं।

जिज्ञासा- अप्रत्याख्यानावरण कषाय चतुष्क को किन उपमाओं से समझाया गया है?

समाधान-अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ को निम्नांकित उपमाओं से समझाया गया है-

(1) **अप्रत्याख्यानावरण क्रोध-** सूखी मिट्टी में आई दरार जैसे पानी के संयोग से वापस भर जाती है, वैसे ही जो क्रोध कुछ परिश्रम तथा प्रयत्न से शान्त हो जाता है, वह अप्रत्याख्यानावरण क्रोध कहलाता है।

(2) **अप्रत्याख्यानावरण मान-**जैसे हड्डी को नमाने के लिए कठिन परिश्रम के साथ उपाय भी करना पड़ता है, वैसे ही जो मान अतिपरिश्रम और उपाय से दूर होता है, उसे अप्रत्याख्यानावरण मान कहते हैं।

(3) **अप्रत्याख्यानावरण माया-**जैसे भेड़ के सींग की वक्रता-टेढ़ापन कठोर परिश्रम एवं अनेक उपाय करने पर ही दूर हो पाता है, वैसे ही जो माया अत्यन्त परिश्रम एवं उपाय से दूर हो, उसे अप्रत्याख्यानावरण माया कहते हैं।

(4) **अप्रत्याख्यानावरण लोभ-** गाड़ी के पहिये के कीचड़ के समान जो लोभ अति कठिनाई से छूटता है, उसे अप्रत्याख्यानावरण लोभ कहते हैं।

जिज्ञासा- अप्रत्याख्यानावरण कषाय चतुष्क को अन्य अपेक्षा से किस रूप में समझ सकते हैं?

समाधान-(1) अप्रत्याख्यानावरण क्रोध- क्रोध से उत्पन्न होने वाले अशान्ति, खिन्नता, चिन्ता, तनाव, भय आदि दु:खों को जानते हुए भी सहन करते रहना, परन्तु क्रोध को त्यागने और घटाने का पुरुषार्थ नहीं कर पाना, अप्रत्याख्यानावरण क्रोध है।

(2) अप्रत्याख्यानावरण मान-मान या मद के कारण उत्पन्न दीनता, गर्व, जड़ता, पराधीनता, कठोरता आदि दु:खों की उपेक्षा करना, उन्हें दूर करने का प्रयत्न नहीं कर पाना, मान कषाय को रोकने, घटाने का पुरुषार्थ नहीं कर पाना, अप्रत्याख्यानावरण मान है।

(3) अप्रत्याख्यानावरण माया-माया के

कारण होने वाले अविश्वास, अप्रतिष्ठा, शक्ति का गोपन, अधःपतन आदि दुःखों को सहन करते रहना, इन दुःखों से छूटने का पुरुषार्थ नहीं कर पाना, अप्रत्याख्यानावरण माया है।

(4) अप्रत्याख्यानावरण लोभ–लोभ से, तृष्णा से होने वाले अभाव, अतृप्ति, असन्तोष आदि दुःखों से मुक्त होने का प्रयत्न नहीं कर पाना। अधिकाधिक संग्रह करने में प्रयत्नशील रहना, इच्छाओं को सीमित नहीं कर पाना अप्रत्याख्यानावरण लोभ है।

सार रूप में यह कहा जा सकता है कि विषय भोगों की ओर सन्मुख होना, उनकी वृद्धि के प्रयत्न में लगे रहना अप्रत्याख्यानावरण कषाय है। विषय-सुखों को समस्त दुःखों का मूल जानकर उनसे विमुख होना अर्थात् उनकी वृद्धि को रोककर उन्हें घटाने का प्रयत्न, पुरुषार्थ अथवा पराक्रम करना अप्रत्याख्यानावरण कषाय का उपशम तथा क्षय है।

जिज्ञासा– अप्रत्याख्यानावरण कषाय का बन्ध-उदय किन-किन जीवों के होता है?

समाधान–जो जीव किसी भी प्रकार के व्रत-नियमों का पालन नहीं कर पाते हैं। अविरति परिणाम वाले होते हैं, ऐसे पहले, दूसरे, तीसरे तथा चौथे गुणस्थानवर्ती चारों गति के जीवों के अप्रत्याख्यानावरण कषाय चतुष्क का बन्ध तथा उदय दोनों होते रहते हैं। इतना अवश्य है कि बन्ध तो प्रति समय क्रोध, मान, माया, लोभ इन चारों का होता है, जबकि उदय इन चारों में से एक बार में किसी एक ही कषाय का होता है।

पाँचवें गुणस्थानवर्ती देशविरति श्रावक-श्राविकाओं में अप्रत्याख्यानावरण कषाय का विपाक उदय नहीं होता है, प्रदेश उदय रहता है। विपाकोदय लेश मात्र भी नहीं होने से प्रदेशोदय को शुद्ध क्षयोपशम भी कहा जाता है। क्योंकि यह नियम है कि सर्वघाती प्रकृतियों का जब तक विपाकोदय रहता है तब तक उनका क्षयोपशम नहीं होता। जब उनका मात्र प्रदेशोदय होता है तभी उनका क्षयोपशम माना जाता है। पंचम गुणस्थानवर्ती श्रावक-श्राविकाओं में हास्यादि नव कषाय का भी क्षयोपशम माना जाता है।

जिज्ञासा– अप्रत्याख्यानावरण कषाय के विपाक उदय के कारण से अविरति के कौन-कौन से भेद होते हैं?

समाधान–अप्रत्याख्यानावरण कषाय का जिन जीवों के विपाक उदय होता है, वे जीव 'अविरत' कहलाते हैं। अविरत जीवों के सम्यक् ज्ञान, सम्यक् ग्रहण तथा सम्यक् पालन के आधार पर सात भेद कर्मग्रन्थ-पंचसंग्रह आदि में इस प्रकार से बतलाये हैं–

(1) जो व्रतों को न जानते हैं, न ग्रहण करते हैं और न पालन करते हैं, ऐसे सामान्य लोग।

(2) जो व्रतों को जानते नहीं, ग्रहण करते नहीं, किन्तु पालते हैं, ऐसे बाल तपस्वी।

(3) जो व्रतों को जानते नहीं, किन्तु ग्रहण करते हैं और पालन नहीं करते, ऐसे शिथिलाचारी-पासत्था साधु आदि।

(4) जिनको व्रतों का ज्ञान नहीं, किन्तु उनको ग्रहण करते हैं तथा पालन करते हैं, ऐसे अगीतार्थ मुनि।

(5) जिनको व्रतों का ज्ञान है, किन्तु उनको ग्रहण तथा पालन नहीं करते हैं, जैसे- श्रेणिक राजा, श्री कृष्ण आदि।

(6) जो व्रतों को जानते हैं, ग्रहण नहीं करते, किन्तु पालन करते हैं। जैसे- अनुत्तर विमानवासी देव।

(7) जो व्रतों को जानते हैं, ग्रहण करते हैं, किन्तु बाद में सही रूप से पालन नहीं करते हैं। जैसे-संविग्न पाक्षिक। संविग्न पाक्षिक से तात्पर्य ऐसे श्रावक अथवा साधु से है जो सम्यक् रूप से गृहीत व्रत-नियमों का बाद में पालन करने में असमर्थ होते हैं।

जिज्ञासा– देशविरति गुणस्थान में 9 नोकषाय का क्षयोपशम किस कारण से माना जाता है?

समाधान–देशविरति गुणस्थान में अप्रत्याख्यानावरण कषाय चतुष्क का मात्र प्रदेशोदय होने से श्रावक-श्राविकाओं में तरतमता के आधार पर असंख्य भेद नहीं

हो पाते। तरतमता के आधार पर भेद विपाकोदय से बनते हैं। देशविरति गुणस्थान के धारकों के असंख्य भेद बनने का कारण 9 नोकषाय का क्षयोपशम है। हास्यादि 9 नोकषाय देशघाती प्रकृतियाँ हैं। देशघाती प्रकृतियों में क्षयोपशम के साथ विपाकोदय भी रहता है। अत: देशविरति गुणस्थान की तरतमता (न्यूनाधिकता) स्पष्टतया ज्ञात कराने के लिए 9 नोकषाय का क्षयोपशम (उदय के साथ रहने वाला क्षयोपशम) माना जाता है।

जिज्ञासा– अप्रत्याख्यानावरण कषाय चतुष्क की सत्ता कहाँ तक मानी जाती है?

समाधान–जो जीव उपशम श्रेणि प्राप्त करते हैं, उनमें 11वें गुणस्थान तक अप्रत्याख्यानावरण कषाय चतुष्क की सत्ता रहती है तथा जो जीव क्षपक श्रेणि प्राप्त करते हैं, उनमें 9वें गुणस्थान के दूसरे भाग तक इनकी सत्ता रहती है। तीसरे भाग में इनका क्षय हो जाता है।

जिज्ञासा– अप्रत्याख्यानावरण कषाय चतुष्क बन्ध की अपेक्षा सर्वघाती है अथवा उदय की अपेक्षा?

समाधान– अप्रत्याख्यानावरण कषाय चतुष्क का बन्ध तथा उदय एक से चार गुणस्थानों में ही होता है। इसलिए इनका बन्ध तथा उदय दोनों ही सर्वघाती रूप में माना जाता है। सर्वघाती में भी प्रथम गुणस्थान में तो द्विस्थानिक, त्रिस्थानिक तथा चतु:स्थानिक तीनों प्रकार का बन्ध तथा उदय हो सकता है किन्तु सम्यक्त्व प्राप्ति के अन्तर्मुहूर्त्त पहले से लेकर जब तक सम्यक्त्व अवस्था में रहते हैं तब तक बन्ध तथा उदय द्विस्थानिक ही होता है।

जिज्ञासा– अप्रत्याख्यानावरण कषाय की स्थिति कितनी होती है?

समाधान–अप्रत्याख्यानावरण कषाय चतुष्क की स्थिति यदि बन्ध की अपेक्षा से विचार करें तो जघन्य स्थिति एक सागरोपम के 4/7 भाग में से पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम की तथा उत्कृष्ट स्थिति 40 कोटाकोटी सागरोपम की होती है। उदय की अपेक्षा विचार करें तो जब तक कोई जीव एक से चार गुणस्थान में रहता है तब तक अप्रत्याख्यानावरण कषाय चतुष्क का उदय बना रहता है। इतना अवश्य है कि क्रोधादि चार कषायों में से किसी भी एक कषाय का उदय लगातार अन्तर्मुहूर्त्त से अधिक नहीं रहता है।

कर्मग्रन्थादि में अप्रत्याख्यानावरण कषाय चतुष्क की स्थिति उत्कृष्ट एक वर्ष की बतलाई है। यह एक वर्ष स्थिति स्थूल दृष्टि से, व्यवहार नय की अपेक्षा से बतलाई है, जिसे उदयगत संस्कारों के प्रभाव की अपेक्षा से समझा जा सकता है।

दूसरे शब्दों में अप्रत्याख्यानावरण कषाय चतुष्क के विपाकोदय का संस्कारगत प्रभाव जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त से लेकर उत्कृष्ट एक वर्ष तक माना जा सकता है। यदि एक वर्ष से भी अधिक काल तक प्रभाव रहता है तो उसके देशविरति के परिणाम सुरक्षित रहने में बाधा आ सकती है।

-रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राजस्थान)

नवकार प्रार्थना

श्री लक्ष्य जैन

नवकार मन्त्र है सबसे न्यारा, इसने है लाखों को तारा।
अरिहंत भगवान का पहला पद, देते प्रेरणा छोड़ो मद।
दूसरे पद पर हैं सिद्ध भगवान,
जिन्होंने त्यागा शरीर, हैं वे महान्।
तीसरा पद है आचार्य महान्,
जो रखते हैं छत्तीस गुणों का मान।
चौथा पद उपाध्याय का,
उपदेश देते सत्य और न्याय का।
पंचम पद पर साधु-साध्वी महान्,
जो कहते हैं कि मत करो कभी अभिमान।
ये करता सभी पापों को नष्ट, मन्त्रों में है यह सर्वश्रेष्ठ।
हर हाल में संकट हारा, नवकार मन्त्र है सबसे न्यारा।

-116/170, अग्रवाल फार्म, जयपुर (राजस्थान)

10 मई 2023
जिनवाणी 67
ISSN 2249-2011

संस्मरण

गुरुदेव की कृपापूर्ण मांगलिक

श्रीमती विजया राजेन्द्र मल्हारा

बचपन से ही गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के प्रति मेरी अटूट श्रद्धा रही, क्योंकि मेरे मम्मी-पापा से वैसे ही संस्कार मुझे मिले थे। मेरी शादी जलगाँव में हुई और मेरे एक लड़का हुआ। जब वह 2 साल का था तब मैं रक्षाबन्धन पर उसे लेकर जयपुर मायके गई। वहाँ पर वह खेलते-खेलते दूसरी मञ्ज़िल के झरोखे से नीचे गिर गया और बेहोश हो गया। लोग उठाकर ऊपर लाये और कहने लगे कि आपका बच्चा गिर गया, ध्यान नहीं रखते। वह जहाँ गिरा, वहाँ टाइलें लगी हुई थीं। मेरा भाई डॉक्टर था। उसने उसे उठाया और हम सब अस्पताल भागे। उसे शारीरिक चोट तो अधिक नहीं आई थी, पर वह पेरेलाईज जैसा हो गया था। बहुत डॉक्टरों ने उसे देखा, जयपुर के डॉक्टर सेठी ने भी सारे शरीर की जाँच की। कोई हड्डी वगैरह नहीं टूटी थी। आखिर सब डॉक्टरों ने कहा यह शारीरिक रूप से ठीक है, पर मानसिक रूप से दहशत में है। कहा नहीं जा सकता कि कब ठीक हो। महीना, 6 महीने, साल भी लग सकता है ठीक होने में। मैं तो बुरी तरह रोने लगी, मेरे मम्मी-पापा भी चिन्तित थे। इधर मेरे ससुराल वालों के फोन पर फोन आये कि लेने कब भेजें? मेरे पापा ने सहज ही कह दिया कि 8-10 दिन में भेजना, क्योंकि हम गुरुदेव के दर्शन को जा रहे हैं। पापा ने मेरे ससुराल वालों को सारी बात बताई। मम्मी ने कहा-''सच में अब तो इसे गुरुदेव के पास ही ले जाते हैं, उनकी मांगलिक (मन्त्र) से हो सकता है ठीक हो जाय। मैं चार भाइयों की अकेली छोटी बहिन थी। मेरे भाइयों ने तुरन्त बालोतरा के आरक्षण टिकिट करवाये, क्योंकि तब गुरुदेव (आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.) चातुर्मास में वहीं बिराज रहे थे। मैं, मेरा बेटा आशीष, मम्मी-पापा, मेरी नानीजी और डॉक्टर भैया चन्द्रसेन गलुंडिया बालोतरा पहुँचे। तब स्टेशन से गाँव थोड़ा दूर था। कहीं पर कोई साधन नहीं मिलने के कारण हमने एक हाथगाड़ी में सामान डाला और छोटी गद्दी डालकर आशीष को भी सुला दिया और जहाँ गुरुदेव थे वहाँ जाने को निकले। रास्ते में एक दो जनों ने पूछा कि इस बच्चे को ऐसे क्यों लिटा रखा है तब हमने कहा-यह बीमार है, गुरुदेव के दर्शन को लाये हैं।

अपराह्न 3-3.30 बजे हम बालोतरा के जैन स्थानक में पहुँचे, जहाँ एक कमरे में गुरुदेव विराज रहे थे। जाते ही आशीष को उनके पाटे के पास सुलाकर मेरे पापा एवं भैया ने चरण स्पर्श किए तथा मम्मी, नानीजी और मैंने दूर से वन्दना की। तत्पश्चात् मैं रो पड़ी। तुरन्त गुरुदेव ने कहा-''अरे भोली! क्यों रोती हो, सब ठीक हो जायेगा।'' हमने तो कुछ बताया ही नहीं और जैसे गुरुदेव को सब पता चल गया। गुरुदेव ने कहा-''कई हुयो इने?'' जब पापा ने सारी बात बताई तब गुरुदेव बोले-''अठे क्यों लाया, जयपुर में डॉक्टर सेठी ने बताया?'' मेरे पापा बोले-''सबने बता दिया अन्नदाता, अब तो धर्म एवं गुरु को ही आसरो है। आप इने बड़ी मांगलिक फरमा दिराओ।'' पापा ने आशीष को गोदी में लिया और गुरुदेव के बिल्कुल पास में लेकर खड़े हो गये। गुरुदेव ने मांगलिक सुनाई। हम सब वहाँ से पास में ही जहाँ मंगल कार्यालय था वहीं पर ठहर गये। रात को मम्मी ने मेरे डॉक्टर भाई से कहा-''देखना, यह गुरुदेव की तीन मांगलिक में ही ठीक हो जायेगा।'' अगले दिन सुबह आशीष रोया और जैसे ही मैंने उसे गोद में लिया, वह मुझे देखकर हँसा, जबकि गिरने के बाद से वह न रोता था, न हँसता था, न बैठता था, न चलता था। बस आँखें खोले पड़ा रहता था। उसे बैठाते तो वह गुड़क जाता था। मेरी मम्मी ने पापा से कहा-''इसकी सारी

दवा बन्द कर देते हैं और आप एक काम करो, गुरुदेव जब बाहर निकलें तो उनके पाँव के नीचे की मिट्टी ले आना।'' पापा एवं भैया ने ध्यान रखा और जब गुरुदेव जंगल के लिए निकले तब मौका देखकर उनका जहाँ पाँव पड़ता वहाँ की मिट्टी लाकर मम्मी को दी। मम्मी ने उस मिट्टी से आशीष के सारे शरीर पर मालिश की और दूसरे दिन भी गुरुदेव से मांगलिक सुनवाई और चमत्कार हुआ शाम को तो वह बैठने लगा। तीसरे दिन जब गुरुदेव के पास ले गये तब पापा ने उसे गुरुदेव के पास बैठा दिया। गुरुदेव ने मांगलिक सुनाई और अपने हाथ की पेन्सिल दिखाई। एकदम चमत्कार हुआ, आशीष उठा और उनके हाथ से पेन्सिल ले ली और भागने लगा। अन्य शिष्यजन भी चकित हो गये। धन्य है गुरुदेव की साधना और उस साधना के प्रभाव से होने वाले परोपकार। हम सबकी खुशी का ठिकाना न था।

-प्लॉट नं. 4 ए, चर्च के सामने,
बसन्तरी अपार्टमेण्ट, कलक्टर बंगला रोड़,
जलगाँव-425001 (महाराष्ट्र)

पञ्चमहाव्रत

श्रीमती सुशीला भण्डारी

महावीर स्वामी तुम्हें, सौ-सौ बार प्रणाम।
तुमने ही इस जग को, सुपथ मार्ग दिखाया।।
धर्म छोड़कर भटक गये थे, जब भारत के लोग
चारों ओर हिंसा बढ़ गई, दु:खी हुए नर-नार।
तब शान्ति का बिगुल बजाया, बारम्बार आभार।।
नाम महावीर काम सभी थे, उनके बहुत महान्।
पञ्चमहाव्रतों की जग को, दी अनुपम सौगात।
अहिंसा का बड़ा अर्थ है,
मन, वचन, कर्म से किसी को मत सताओ।
सत्य वचन व सत्य आचरण रख,
जीवन सफल बनाओ।।
अस्तेय के पालन से, चोरी के पाप से बच जाओगे।
अपरिग्रह का पालन कर,
कम इच्छा व कम वस्तु रख
जीवन आनन्दमय एवं सफल बनाओगे।।
ब्रह्मचर्य के पालन से, दुष्वृत्तियों का होगा नाश।
ये व्रत हैं सद्गुणों की खान,
मिटे इनसे विषय विकार।
चरित्र बने उज्ज्वल, जीवन ज्योतिर्मय बने।
अनेक समस्याओं के निराकरण का,
इसमें है उचित समाधान।।
महावीर स्वामी तुम्हें सौ-सौ बार प्रणाम।।

-1-क-9, आवासन मण्डल, भगत की कोठी,
जोधपुर-342005 (राज.)

महामन्दिर रा जाया जनमिया

श्री हस्तीमल गोलेच्छा

महामन्दिर रा जाया जनमिया, महामन्दिर में आया हो,
हीरा गुरु रा पट्टधर, गणिवर महेन्द्र मन में भाया हो।

सुदी नम सावन मास री, ग्यारह ऊपर दो हजार रो,
सोहनी पारस मात तात, लोढ़ा रे कुल आया ओ।।

कुशलचन्द्र सा जीवन जिनका, गुमान जैसी प्रज्ञा ओ,
रतनचन्द्र जैसी निस्पृहता, हमीर जैसी सेवा ओ।।

कजोड़ी जैसी चर्या इनकी, वत्सलता विनय जैसी ओ,
शोभा जैसे शिल्पी ऐं तो, हस्ती गुरु रा चेला ओ।।

पावन धरा पीपाड़ शहर में, सम्वत्सरी अठवर आई ओ,
हीरा गुरु रा श्रीमुख सुँ, ऐने भावी आचार्य बनाया हो।

वैयावच्य में रह्या अग्रणी, धाय मात ज्यूँ ऐवा ओं,
छोटा-छोटा संतारी ऐ तो, मायड़ जैसी सेवा ओ।

श्रद्धावान, सत्यवादी, मेधावी, बहुश्रुत गुण के धाम ओं,
शक्तिमान, अल्पाधिकरण, गणधारण गुण के ठाम ओ।।

नौ ऊपर छह दशक री, जन्म जयती आई ओ।
गुरु हीरा रा चरण भायें, 'हस्ती' जाने बलिहारी ओ।

-4, शिवविलास, नयाबास, ढाबागली, ब्यावर-
305901 (राज)

10 मई 2023
जिनवाणी 69
ISSN 2249-2011

विशेषांक

जिनवाणी विशेषांक हेतु रचना आमन्त्रित

डॉ. धर्मचन्द जैन

जिनवाणी पत्रिका के विशेषांक लोकप्रिय रहे हैं। अब तक 20 विशेषांक प्रकाशित हो चुके हैं। उसी शृंखला में जिनशासन गौरव आगम मर्मज्ञ परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 60वें दीक्षा वर्ष एवं भावी आर्चायप्रवर श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के 49वें दीक्षा वर्ष के उपलक्ष्य में 'दान के विविध आयाम' विषय पर विशेषांक प्रकाशित करने की योजना है। विद्वान् एवं विचारशील लेखकों से इस विशेषांक में प्रकाशन हेतु अग्रलिखित किसी एक विषय पर मौलिक रचना आमन्त्रित है। आप अपना निबन्ध अथवा दान से सम्बन्धित प्रेरक प्रसंग, कथा, कविता अथवा विचार भी प्रेषित कर सकते हैं। हमारा उद्देश्य है कि यह विशेषांक मानव समाज एवं व्यक्तिगत उत्थान में दान के महत्त्व का परिचायक हो। आपकी रचनाएँ Email:-editorjinwani@gmail.com अथवा जिनवाणी, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) के पते पर 31 मई, 2023 तक मिल जानी चाहिए।

विशेषांक के इस विषय पर सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के द्वारा पूज्य आचार्यप्रवर के पाली चातुर्मास में 1-2 अक्टूबर, 2019 को विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन हुआ था, उसके कुछ आलेख हमारे पास सुरक्षित हैं। अत: उन विषयों के अतिरिक्त विषयों की सूची यहाँ दी जा रही है।

विषय-

1. दान में करुणा की भूमिका
2. साधर्मि-वात्सल्य के लिए तत्पर संस्थाओं का परिचय
3. विभिन्न गोशालाओं एवं पक्षी चिकित्सालयों में जैन समाज की भूमिका
4. राज्य-संरक्षण के लिए प्राचीनकाल में जैन मन्त्रियों एवं श्रेष्ठिजनों के द्वारा कृत योगदान
5. अहिंसा और दान
6. दान के सम्बन्ध में उठने वाले प्रश्न एवं उनका समाधान
7. आधुनिक युग में दाता की भावना का दुरुपयोग
8. दान के प्रोत्साहन हेतु संस्थाओं का उचित प्रबन्धन
9. दान से पुण्य का सञ्चय
10. तीर्थंकर का वर्षीदान
11. साधु-साध्वियों द्वारा दान
12. समयदान का महत्त्व
13. अभयदान की महिमा
14. सेवा और दान
15. देने का मन क्यों नहीं होता?
16. देने का सुख
17. अनन्त दान का स्वरूप
18. दान कोई अहसान नहीं
19. दान की निष्काम प्रवृत्ति
20. दान को धर्म क्यों कहा गया है?
21. दबाव की अपेक्षा स्वेच्छा से देना अधिक हितकर
22. दानवीरों के कथानक
23. हर व्यक्ति कुछ-न-कुछ दे सकता है
24. इस युग के आधुनिक विशिष्ट दानदाता
25. दान से व्यक्तित्व-विकास
26. ज्ञानदान क्यों एवं कैसे?
27. नेत्रदान एवं रक्तदान

नोट-आप दान से सम्बद्ध किसी भी विषय पर अपने विचार लिखकर या टाइप करवाकर अपने पूर्ण पते सहित प्रेषित कर सकते हैं।

10 मई 2023
जिनवाणी 70
ISSN 2249-2011

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

प्रोफेसर (डॉ.) धर्मचन्द जैन

वसुदेवहिण्डी (प्रथमखण्ड), अनुवादक-गौत्तमचन्द जैन, **प्रकाशक**-प्राकृत भारती अकादमी, 13-ए, गुरुनानक पथ, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.), फोन 0141-2520230, Email : prabharti@gmail.com, ISBN No. 978-9392317-45-3, **पृष्ठ**-76 + 522, **मूल्य**-1200 रुपये, **संस्करण**-प्रथम 2023

प्राकृत भाषा के प्राचीन कथा-साहित्य में वसुदेवहिण्डी का नाम प्रसिद्ध है। वाचक संघदासगणि द्वारा रचित यह प्राचीन भारतीय संस्कृति का चित्रण करने वाला प्रमुख कथा ग्रन्थ है। इसका दूसरा नाम 'वसुदेवचरित' भी है, क्योंकि इसमें श्रीकृष्ण के पिता वसुदेव का चरित वर्णित है। 'हिण्डी' का अर्थ है भ्रमण। वसुदेव का यात्रावृत्तान्त इसमें उनके मुख से प्रस्तुत किया गया है। वे अपने भ्राता से रुष्ट होकर विभिन्न ग्राम-नगरों में भ्रमण करते हैं तथा उनके द्वारा सौ विवाह करने का उल्लेख प्राप्त होता है। उनका अन्तिम विवाह देवकी से होता है।

एक कथा में ही अनेक अवान्तर कथाओं का समावेश हुआ है। इसमें उनके पराक्रम आदि गुणों का उद्घाटन हुआ है तथा साथ ही सुख-दुःख की अनेक घटनाओं का वर्णन है। प्रसङ्गवश तीर्थंकर ऋषभदेव, शान्तिनाथ, महावीर के नामों का भी निरूपण हुआ है। महाभारत की भाँति इस ग्रन्थ में अनेक विषय समाहित हैं। कथा बृहत् होने पर भी अत्यन्त रोचक है। इसमें पिप्पलाद ऋषि एवं अथर्ववेद की उत्पत्ति का भी कथन हुआ है। यह कथा ग्रन्थ धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों को अपने में समेटे हुए है। संसार की सच्चाई भी इसमें उजागर हुई है तो लोगों की रुचि और प्रवृत्ति का भी इसमें पर्याप्त प्रदर्शन हुआ है। प्राचीन भारतीय संस्कृति को गहराई से समझने के लिए यह कथा ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी है। उपलब्ध प्राचीन कथा ग्रन्थों में इसे सर्वाधिक प्राचीन स्वीकार किया गया है। इसके पूर्व गुणाढ्य की बृहत्कथा तथा पादलिप्त सूरि की तरंगवती कथा का उल्लेख मिलता है। गुणाढ्य की बृहत्कथा पैशाची प्राकृत में रचित है तथा उसकी शैली में ही 'वसुदेवहिण्डी' ग्रन्थ रचित है।

प्राकृत भाषा में कथाओं की उपलब्धि आगम-साहित्य और उसके टीका-साहित्य में भी होती है, किन्तु दीर्घ कथाग्रन्थों में वसुदेवहिण्डी का नाम अग्रगण्य है।

जैन आचार्यों ने प्राकृत भाषा में विपुल कथा-साहित्य की रचना की है, जिसमें आचार्य हरिभद्र द्वारा रचित समराइच्चकहा एवं धुतक्खाण, उद्योतन सूरि द्वारा रचित नाणपंचमीकहा, देवेन्द्रगणि रचित आख्यानमणि कोश, गुणचन्द्र गणि कृत कहारयणकोस, महेन्द्रसूरि द्वारा रचित नम्मयासुन्दरीकहा आदि अनेक रचनाएँ प्रसिद्ध हैं। उवएसमालाकहा, उवएसपद आदि उपदेशपरक कथाएँ भी उपलब्ध होती हैं।

'वसुदेवहिण्डी' में दो खण्ड हैं। उपलब्ध प्रथम खण्ड में 28 लम्भक और 11,000 श्लोक परिमाण कथा भाग है। कहीं-कहीं इसके 29 लम्भकों का उल्लेख मिलता है। द्वितीय खण्ड में 71 लम्भक और 17,000 श्लोक परिणाम विस्तार का कथन मिलता है। प्रथम खण्ड के रचयिता संघदास गणि हैं तथा द्वितीय खण्ड के रचयिता धर्मसेनगणि महत्तर है। द्वितीय खण्ड का दूसरा नाम मध्यम खण्ड या मज्झिम खण्ड है जिसे धर्मसेनगणि ने वसुदेवहिण्डी के अट्ठारहवें लम्भक की कथा प्रियंगुसुन्दरी के साथ नियोजित किया है।

वसुदेवहिण्डी कुल छह विभागों में रचित है-1. कथोत्पत्ति, 2. पीठिका, 3. मुख, 4. प्रतिमुख, 5. शरीर और 6. उपसंहार। कथा की उत्पत्ति में जम्बू स्वामी और प्रभव का संवाद है तथा संसार में आसक्ति को मधुबिन्दु दृष्टान्त से स्पष्ट किया गया है। वसुदेव चरित की उत्पत्ति के पूर्व ही धम्मिल चरित्र का निरूपण कर दिया गया है। पीठिका में प्रद्युम्न और शाम्ब कुमार की कथा वर्णित है तथा गणिकाओं की उत्पत्ति को स्पष्ट किया गया है। मुख विभाग में शाम्ब कुमार का सहज ही 108 कन्याओं से विवाह बताया गया है।

प्रतिमुख में अन्धकवृष्णि कुल में समुद्र विजय के भ्राता वसुदेव के पूर्व भव का कथन हुआ है। शरीर प्रकरण में वसुदेव के यात्रा वृत्तान्त का बड़ा रोचक वर्णन किया गया है। इसका उपसंहार भाग विलुप्त हो गया है तथा 19-20 लम्भक भी उपलब्ध नहीं हैं।

इस ग्रन्थ की प्रमुख विशेषताएँ हैं-1. इसमें प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति के वास्तविक दर्शन होते हैं। 2. पुनर्जन्म, कर्म फल एवं जन्मान्तर की भी चर्चा प्राप्त होती है। 3. अर्थ एवं काम पुरुषार्थ का पर्याप्त विवेचन हुआ है। 4. धर्म का प्रतिपादन रोचक शैली में हुआ है। 5. यह कथा सरस शैली में रचित है। 6. अंतकृद्दशासूत्र में वर्णित अरिष्टनेमि के समय के 10 राजकुमारों के नामों में साम्य है। 7. पापकारी आजीविका को छोड़ने की प्रेरणा की गई है। 8. राम, रावण, लक्ष्मण, श्रीकृष्ण आदि का भी परिचय प्राप्त होता है। 9. यह समस्त भारतीय संस्कृति को एक सूत्र में पिरोता है। 10. मनोरञ्जन के समस्त तत्त्व उपलब्ध है।

मेरे परम मित्र एवं सहपाठी श्री गौत्तमचन्दजी जैन ने इस महान् ग्रन्थ का अपनी मेधा का प्रयोग कर अत्यल्प समय में ही उत्साहपूर्वक हिन्दी अनुवाद सम्पन्न कर दिया। मैंने सरसरी तौर पर अनुवाद देखा है, इसमें कथा का प्रवाह सरल भाषा में अभिव्यक्त हुआ है। मात्र अनुवाद को पढ़कर वसुदेवहिण्डी के हार्द को समझा जा सकता है। प्राकृत भाषा एवं साहित्य के लिए सदैव सन्नद्ध प्राकृत भारती अकादमी का यह क़दम सराहनीय है। इस ग्रन्थ को पढ़ने में रुचि उत्पन्न करने के लिए 'प्ररोचना' लेखन का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है। इस हिन्दी अनुवाद के पूर्व गुजराती भाषा में अनुवाद कर्ता भोगीलाल संडेसरा का महत्त्वपूर्ण उपोद्घात भी दिया गया है।

Aṣṭapāhuḍa-Kundakunda, **English Translation & Preface**-Dr. (Colonel) D. S. Baya 'Śreyas', **Editor**-Dr. Dileep Dhing, **Publisher :** Abusha Foundation, 27, Mylai Ranganathan Street, T. Nagar, Chennai-600017 (Tamilnadu), Phone 044-42984141 Email-abhaya@abushaims.com, **Pages :** 158 + 180 + 70 = 408, **Price :** Rs. 500/-, **First edition :** 2022.

Aṣṭapāhuḍa is a famous work of Acārya Kundakunda. It comsists of eight short treatises in Śauraśenī Prakrit as follows (I) Daṃsaṇapāhuḍa, (II) Suttapāhuḍa, (III) Cārittaphuḍa, (IV) Bohapāhuḍa, (V) Bhāvapāhuḍa, (VI) Mokkhapāhuḍa, (VII) Liṅgapāhuḍa and (VIII) Sīlapāhuḍa.

Dr. Baya has not only translated the book in English, he also has given translitaretion of all Prakrit verses. He has also written an exaustive, eleborative and critical preface about the book. He has also made comparision of the verses of Aṣṭapāhuḍa with the equivalent verses from other Jain works. He did English translation on the basis of Hindi translation by Pt. Pannalal Jain. Prof. Presuman Jain wrote a foreword on this book. This valoume has three valuable appendices namely (i) Alphabetical order of veres, (ii) Glossry of Jaina terms and (iii) Bibliography. Dr. Dileep Dhing, Chennai is the editor of this book. He has also written a note about the book. I think this volume will be well received by the English readers and scholars.

-एस 1, 28 आयुवानसिंह नगर, महारानी फार्म, दुर्गापुरा, जयपुर-302019 (राजस्थान)

क्या हमें आत्मविश्वास है?

श्री श्रेयांस कर्णावट

किसी भी व्यक्ति से पूछा जाए कि क्या आपमें आत्मविश्वास है, तो अक्सर जवाब मिलता है-जी बिल्कुल है। लेकिन साथ में पूछा जाए कि क्या आप आत्मा में विश्वास करते हो, तो प्राय: जवाब मिलता है-नहीं। हमें समझना चाहिए कि क्या हममें आत्मविश्वास है? आत्मविश्वास का मतलब होता है आत्म पर विश्वास।

10 मई 2023
जिनवाणी 72
ISSN 2249-2011

समाचार विविधा

जोधपुर में पूज्य आचार्य भगवन्त एवं भावी आचार्यश्री की सन्निधि में आयम्बिल ओली, महावीर जन्मकल्याणक एवं अक्षय-तृतीया के अवसर पर तपाराधना एवं साधना-आराधना का ठाट

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, प्रवचन प्रभाकर, आगमज्ञ, जिनशासन गौरव, **आचार्य भगवन्त श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** आदि ठाणा सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा जोधपुर में सुखे-समाधौ विराजित हैं।

पावटा स्थानक में विराजित परमाराध्य आचार्य भगवन्त, भावी आचार्यप्रवर आदि चारित्रात्माओं की चरण-सन्निधि में निरन्तर तप-त्याग, धर्म-ध्यान, प्रतिक्रमण, सामायिक-स्वाध्याय, दया, संवर, पौषध, प्रवचन, शास्त्र-वाचना आदि से ठाट लगा हुआ है। प्रार्थना, प्रवचन एवं वाचनी में भरपूर उपस्थिति रहती है। भावी आचार्यप्रवर आवश्यकसूत्र पर वाचनी फरमा रहे हैं।

आयम्बिल ओली-चैत्र शुक्ला अष्टमी से चैत्र शुक्ला पूर्णिमा तक नवपद आयम्बिल ओली की आराधना पावटा सहित सभी उपनगरों में की गई। निरन्तर पूर्व से चली आ रही दस आयम्बिल की लड़ी भी अक्षुण्ण चल रही है। नीवी तप से 12 श्रावक-श्राविकाओं ने सिद्धितप की आराधना की है। इसके अलावा नीवी, एकाशन, उपवास आदि विविध तपाराधनाएँ भी नियमित चल रही हैं।

महावीर जयन्ती-चैत्र शुक्ला त्रयोदशी, सोमवार 3 अप्रेल को भगवान महावीर जन्म-कल्याणक के पावन प्रसंग पर युवक परिषद्, जोधपुर के महावीर कॉम्पलेक्स में सामूहिक सामायिक का आह्वान किया गया। प्रवचन सभा में **भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा., महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.** ने पधारकर भगवान महावीर के जीवन तथा सन्देशों पर विविध पहलुओं से प्रकाश डाला एवं प्रेरणा देते हुए फरमाया कि भगवान महावीर के जीवन एवं उनके सिद्धान्तों से सभीजन एक-एक गुण अथवा सिद्धान्त को जीवन में अंगीकार करेंगे तो **मानवभव सार्थक हो सकता है।** धर्मसभा में रत्नसंघ सहित सभी जिन धर्मावलम्बियों ने जिनवाणी श्रवण का लाभ लिया। साथ ही लगभग 1500-2000 सामायिक की साधना हुई।

अक्षय तृतीया पारणक महोत्सव एवं चातुर्मासों की घोषणा-23 अप्रेल, 2023 को परमाराध्य पूज्य आचार्य भगवन्त ने **व्याख्यात्री महासती श्री दर्शनलताजी म.सा.** आदि ठाणा-3 का चातुर्मास **मेड़ता सिटी** एवं **व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा.** आदि ठाणा का चातुर्मास **नदबई** (राज.) साधु मर्यादाओं के आगारों के साथ स्वीकृत फरमाया है।

वैशाख शुक्ला तृतीया रविवार 23 अप्रेल, 2023 को अक्षय तृतीया के पावन प्रसङ्ग पर वर्षीतप पारणक कार्यक्रम माहेश्वरी भवन, जोधपुर में सम्पन्न हुआ तथा आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का 94वाँ आचार्य पद दिवस एवं पूज्य आचार्य श्री कजोड़ीमलजी म.सा. का 144वाँ स्मृति दिवस मनाया गया। इस पावन प्रसङ्ग पर कुल 57 श्रावक-श्राविकाओं ने वर्षीतप के पारणे किये एवं कइयों ने पारणा उपरान्त पुनः वर्षीतप के नियम परमाराध्य आचार्य भगवन्त एवं परम श्रद्धेय भावी आचार्य श्री के पावन मुखारविन्द से ग्रहण किये।

तप के स्वरूप एवं दान के महत्त्व, दूषण, भूषण, प्रकार और वर्षीतप के महत्त्व तथा इसकी परम्परा आदि विविध पहलुओं पर **श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.** एवं **महासती श्री मधुश्रीजी म.सा.** ने प्रेरक प्रसङ्गों के माध्यम से धर्मसभा को उद्‌बोधित किया। **भावी आचार्यश्री** ने फरमाया कि तप से भव-भव के कर्मों को काटा जा सकता है, तप से कर्मों की निर्जरा होती है। तप के दूषण, तप के भूषण, भगवान के तप की विशेषताएँ, तपस्या के प्रकार, श्रेयांस की भावना, द्रव्यशुद्धि भावशुद्धि, भगवान की भावना आदि का विवेचन किया। संघ-समाज में आई विसङ्गति को दूर कर समरसता प्रवर्धमान हो, ऐसी प्रेरणा की। गौरवशाली इतिहास एवं महापुरुषों का वृत्तान्त बताते हुए प्रतिपल स्मरणीय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के संयम-जीवन, व्यक्तित्व, कृतित्व, नेतृत्त्व आदि विविध पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए, आचार्यप्रवर पूज्य श्री कजोड़ीमलजी म.सा. के जीवन एवं चारित्र से जुड़े प्रसङ्ग प्रवचन सभा में फरमाये।

अक्षय तृतीया पारणक व्यवस्था में श्रावक संघ, श्राविका मण्डल, युवक परिषद् की पूरी टीम की सक्रिय सेवा एवं सहभागिता आवास, निवास, पारणे, भोजन आदि में सराहनीय रही। अखिल भारतीय श्रावक संघ पदाधिकारियों की देख-रेख में 57 वर्षीतप पारणक सानन्द सम्पन्न हुए। अनेक पारणे घरों में भी किये गये हैं।

श्रद्धेय श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा. के सांसारिक परिवारजन उनकी वयोवृद्ध वीरमातुश्री को आचार्य भगवन्त आदि चारित्रात्माओं के दर्शनार्थ लेकर आये। अशक्य शारीरिक स्थिति होते हुए भी वयोवृद्ध मातुश्री ने सहारा लेकर खड़े होकर वन्दना की एवं दर्शन, वन्दन, मांगलिक श्रवण कर पुलकित भाव से भर उठी।

38 वर्ष की युवावय में सुश्रावक श्री माणकजी गादिया, श्रीकालाहस्ती ने सदार आजीवन ब्रह्मचर्य पालन के नियम पूज्य आचार्य भगवन्त के पावन मुखारविन्द से ग्रहण किये।

वर्षीतप की साधना करने वाले श्रावक-श्राविकाओं के नाम-श्रीमती कुसुमलताजी जैन-सोजत रोड़, श्री प्रकाशचन्दजी रांका-अजमेर, श्रीमती उर्मिलादेवीजी रांका-अजमेर, श्री राजेन्द्रजी दुधेड़िया-बैंगलोर, श्रीमती सुनीताजी दुधेड़िया-बैंगलोर, श्रीमती सन्तोषजी भण्डारी-ब्यावर, श्री गौतमजी बाघमार-ब्यावर, श्रीमती लक्ष्मीजी बाघमार-ब्यावर, श्री भंवरलालजी कोठारी-कोयम्बटूर, श्री त्रिलोकचन्दजी जैन-गंगापुर सिटी, श्रीमती हेमलताजी जैन-कोटा, श्रीमती सरिताजी जैन-उनियारा, श्रीमती मञ्जुजी जैन-सवाई माधोपुर, श्रीमती रजनीजी गोटेवाला-सवाई माधोपुर, श्रीमती मञ्जुजी जैन-कुश्तला, श्रीमती विद्याजी जैन-चोरू, श्रीमती सुनीताजी जैन-जलगाँव, श्रीमती मायाजी जैन-खेरली, श्रीमती प्रसन्नदेवीजी चोरड़िया-इन्दौर, श्रीमती चन्द्रकलाजी मेहता-जयपुर, श्री चंचलजी खिंवसरा-जयपुर, श्रीमती लाडकँवरजी लोढ़ा-कानपुर, श्रीमती शान्तिदेवीजी सुराणा-नागौर, श्रीमती मुक्ताजी जैन-मेड़ता सिटी, श्री महावीर प्रसादजी जैन-बाणावर, श्रीमती शोभाजी नाहर-सिकन्दराबाद, श्रीमती सन्तोषजी चौधरी-मैसूर, श्रीमती मीनाजी कवाड़-चेन्नई, श्री सुमतिचन्दजी मेहता-पीपाड़ सिटी, श्रीमती सुशीलाजी मुथा-पीपाड़ सिटी, श्रीमती राजुलाजी गाँधी-पीपाड़ सिटी, श्रीमती पायलजी मुथा-पीपाड़-सूरत, श्रीमती मन्जुजी ओस्तवाल-विजयवाड़ा, श्रीमती गंगादेवीजी कर्णावट-चेन्नई, श्रीमती शोभाजी लोढ़ा-नाडसर-जोधपुर, श्रीमती मञ्जुजी बाफना-जोधपुर, श्री लोकेशजी कुम्भट-जोधपुर, श्री नवरतनजी बाफना-जोधपुर, श्री राजेशजी चौपड़ा-जोधपुर, श्रीमती लवीनाजी चौपड़ा-जोधपुर, श्रीमती अकलकंवरजी सिंघवी-जोधपुर, श्रीमती रेखाजी लोढ़ा-जोधपुर, श्रीमती गंगादेवीजी ओस्तवाल-जोधपुर, श्रीमती मधुजी सिंघवी-जोधपुर, श्रीमती प्रेमलताजी बरड़िया-जोधपुर, श्रीमती सन्तोषजी सेठिया-जोधपुर, श्रीमती कमलादेवीजी मोहनोत-जोधपुर, श्रीमती सुशीलाजी कोठारी-जोधपुर, श्रीमती शान्ताजी गुन्देचा-जोधपुर, श्रीमती शोभाजी सिंघवी-जोधपुर, श्रीमती ममताजी चौपड़ा-जोधपुर। इनके अतिरिक्त श्रीमती प्रतिभाजी सिंघवी-मंगलदीप, जोधपुर, श्रीमती संध्याजी सिंघवी-चौपासनी हाउसिंग बोर्ड,

जोधपुर, श्रीमती मधुजी सूर्या-चौपासनी हाउसिंग बोर्ड-जोधपुर ने घर पर पारणा किया। अन्य भी कइयों के पारणे घर पर हुए हैं। एक गुप्त पारणा भी हुआ है।

शासनसेवा समिति को मार्गदर्शन-17-18 अप्रेल, 2023 को शासन सेवा समिति के पदाधिकारीगण श्री गौतमजी हुण्डीवाल, श्री गौतमजी सुराणा, श्री सुभाषजी धोका, श्री नौरतनमलजी मेहता, श्रीमती मंजुलाजी बम्ब एवं श्री सुमेरसिंहजी बोथरा, जोधपुर गुरुचरण सन्निधि में पधारे। दर्शन-वन्दन-सेवा लाभ लेकर मार्गदर्शन पाकर, तदनुरूप आपस में विचार-विमर्श किया तथा किये जाने योग्य कार्यों का लक्ष्य निर्धारित किया। 27 अप्रेल को पावटा में श्राविका मण्डल की संगोष्ठी हुई, जिसमें वर्षभर में आयोजित श्राविका मण्डल की गतिविधियों की जानकारी दी गई।

आचार्य हस्ती पुण्यस्मृति दिवस-28 अप्रेल, 2023 को आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. का 32वाँ पुण्यस्मृति दिवस एकाशन, आयम्बिल, नीवी, उपवास आदि विविध तपाराधनाओं के साथ मनाया गया। प्रवचन सभा में श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा., परम श्रद्धेय भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने अपने-अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते हुए गुरु हस्ती के जीवन पर प्रकाश डाला। **श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.** ने फरमाया कि-ममता मूल है शोक का, समता मूल है अशोक का, भीतर की शान्ति के लिए ममता को छोड़ना पड़ेगा। जब तक बाहर के प्रपञ्च को कम नहीं करोगे, तब तक शान्ति नहीं मिलेगी। हम गुरु हस्ती का पुण्य-स्मरण दिवस मना रहे हैं। उन्होंने भी साधारण बच्चे की तरह जन्म लिया, लेकिन गुरु हस्ती अपने कर्मों से महान बनें। उन्होंने करोड़ों नहीं कमाये, इसके विपरीत उन्होंने तो घर को छोड़ा। उन्होंने एकत्व भाव अर्थात् अपनी आत्मा के भाव को जीया। इसलिये ही उन्होंने फरमाया कि 'मेरे अन्तर भया प्रकाश, नहीं अब मुझे किसी की आस।' गुरु को मानना, गुरु की भी मानना। भगवान को भी मानना, भगवान की भी मानना। गुरु आज्ञा ही नहीं देते, आज्ञापालन की शक्ति भी देते हैं। जो मोह की दीवारों को भी भेद देता है, वह 'भिक्षु' है।

महान् अध्यवसायी परम श्रद्धेय **भावी आचार्य श्री** ने फरमाया कि उपवन में खिलने वाले फूल ऐसे होते हैं जो डाली पर तो महकते हैं, लेकिन डाली से अलग होने पर धूल-धूसरित हो जाते हैं। कुछ फूल ऐसे होते हैं, जो सूखने पर औषधि के रूप में उपकारक होते हैं।

श्रेष्ठ फूल वह होता है, जो डाली पर भी महकता है और डाली से हटने पर उसकी सुगन्ध चौगुनी हो जाती है। श्रेष्ठ साधक भी ऐसा ही जीवन जीता है। ऐसे साधकों का जीवन प्रेरणादायी बन जाता है और मरणोपरान्त भी उन्हें याद किया जाता है। मैं आपसे कहता हूँ-गुरु को इस भव तो क्या, भव-भव के अन्दर भी भुलाया नहीं जा सकता है। उनके उपकारों का स्मरण हमारे रोम-रोम में बसा हुआ है। भक्ति के भी कई रूप हैं। मौन रहकर भी भक्ति की जा सकती है, अन्य भी कई प्रकार हैं। श्रेष्ठ भक्ति है-जो गुरु कहता है, वह वैसा करता है। **गुरु हस्ती, गुरु हीरा जैसी गुरु भक्ति होनी चाहिए।** गुरु शोभा की भक्ति (आज्ञापालन) गुरु हस्ती में समायी एवं गुरु हस्ती की भक्ति गुरु हीरा में समायी हुई है। गुरु हस्ती की स्तुति करते हुए भजन प्रस्तुत किया-गुरु हस्ती भगवान बड़े उपकारी हैं। समवेत स्वर में भजन की कड़ियाँ पूरी धर्मसभा में गुंजायमान हो उठीं।

गुरुदेव की अनेक विशेषताओं में एक मौलिक विशेषता है-उनकी सरलता और सहजता। उनकी साधना में सहजता और अन्तर में सरलता थी। जीवन में कोई दोष नहीं लगा। क्षमायाचना करने वाला बड़ा होता है। निमाज में 13 दिन के संथारे के समय उन्होंने सहजता, सरलतापूर्वक सभी साधकों से खड़े होकर क्षमायाचना की। **साधक वह**

होता है, जो जैसा अन्तर में होता है, वैसा ही बाहर में होता है। गुरु हस्ती ने आचारांग के इस सूत्र को आत्मसात् कर लिया था। वे उत्तम साधक, उत्तम आराधक एवं ज्ञाताद्रष्टा ही नहीं थे, संघ-समाज के सृष्टा भी थे। ज्ञाताद्रष्टा अपना स्वयं का कल्याण कर लेता है, **लेकिन श्रेष्ठ साधक वह होता है जो स्वयं के साथ समाज एवं संघ के उत्थान के लिए उनमें आयी विकृतियों को दूर करे।** ऐसा गुरु हस्ती ने किया।

स्थानीय एवं मारवाड़ अञ्चल सहित ओसवाल, पोरवाल, पल्लीवाल, दक्षिण भारत, देश-विदेश से आगत श्रद्धालु श्रावक-श्राविका धर्मलाभ एवं दर्शन, वन्दन, माँगलिक, चरण-सन्निधि का लाभ ले रहे हैं। चहुँओर से दर्शनार्थियों का आवागमन अनवरत बना हुआ है। आवास, भोजन आदि सभी व्यवस्थाएँ पूर्ववत् सुन्दर सुव्यवस्थित चल रही हैं। राष्ट्रीय पदाधिकारीगण, स्थानीय पदाधिकारीगण, श्रावक संघ, श्राविका मण्डल, युवक परिषद् सभी सतत सजग हैं।

-गिरराज जैन

बालोतरा में भगवान महावीर जन्मकल्याणक पर दुःखरहित होने की प्रेरणा

मधुर व्याख्यानी **श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म. सा.** आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में 3 अप्रेल, 2023 को महावीर जयन्ती तप-त्याग के साथ उत्साहपूर्वक मनाई गई। इस दिन प्रवचन का दृश्य अनूठा था। अधिकांश लोग सामायिक और संवर में थे। चाहे किसी भी सम्प्रदाय का व्यक्ति हो, सभी इस धार्मिक गरिमामय भव्य वातावरण में स्वयं को धन्य अनुभव कर रहा था। प्रवचन में ज्ञानगच्छीय सन्त श्री मनीषमुनिजी म.सा., साध्वी श्री पुष्पकँवरजी म. सा. पधारे और प्रवचन भी फरमाए। श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने भगवान महावीर के प्ररूपित समत्व, अपरिग्रह, अनेकान्त सिद्धान्तों का जिक्र करते हुए फरमाया कि आज भी भगवान महावीर की शिक्षाएँ प्रासंगिक हैं। यदि व्यक्ति स्वयं एवं समाज इन शिक्षाओं का प्रयोग करें तो निश्चित रूप से समाधान में जी सकता है। भगवान महावीर ने जब संयम स्वीकार किया तब तीन संकल्प लिए-दुःख से घबराना नहीं, किसी को दुःख देना नहीं और दुःख के बीज बोना नहीं। यदि हम इन तीन संकल्पों को जीवन में साकार कर लें तो हमारे जीवन में शान्ति एवं प्रसन्नता खिलेगी, साथ ही समाज में बढ़ती विकृतियों पर भी विराम लगेगा। सन्तत्रय यहाँ से विहार कर समदड़ी, जेठन्तरी, अजित, धुँधाड़ा, लूनी आदि मध्यवर्ती गाँवों को फरसते हुए 16 अप्रेल को पलासनी गाँव पधारे। यह श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. की जन्मभूमि भी है। यहाँ सन्तों के आगमन के साथ ही गाँव के हर जातिवर्ग का व्यक्ति महाराज साहब के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण के लिए उत्सुक नज़र आया। म. सा. ने भक्ति, सत्संग आदि विषयों पर प्रवचन फरमाये, साथ ही गाँव में पनपने वाले व्यसनों में अफीम, धूम्रपान आदि के घातक दुष्परिणामों से अवगत कराते हुए व्यसन छोड़ने के लिए प्रेरित किया। अनेक लोगों ने अपने जीवन को सच्चा और अच्छा बनाने के लिए निर्व्यसनता का संकल्प भी लिया। यहाँ जैनों की संख्या सीमित होते हुए भी दर्शनार्थियों का लगातार आवागमन बना हुआ है और संघ का आतिथ्य सत्कार भी भावनापूर्ण है। अक्षय तृतीया के दिन भगवान ऋषभदेव के जीवन से जुड़े तप और दान की विशद चर्चा गई की और आगामी गुरु हस्ती के स्मृति दिवस को लेकर मुनिराज ने धार्मिक प्रवृत्तियाँ विशेष हों, इसके लिए आह्वान किया।

-प्रकाशचन्द जैन

जयपुर में भगवान महावीर जन्मकल्याणक एवं आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 85वें जन्मदिवस पर सामायिक-साधना एवं तप-त्याग

(1) तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का 2622वाँ जन्म कल्याणक महोत्सव चैत्र शुक्ला त्रयोदशी, सोमवार, 3 अप्रेल, 2023 को टोंक रोड़, स्थित महावीर नगर स्थानक जयपुर में **साध्वी प्रमुखा विदुषी महासती श्री**

तेजकँवरजी म.सा. आदि ठाणा-10 के पावन सान्निध्य में अहिंसा दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर महासती श्री दक्षिताजी म.सा. ने भगवान महावीर स्वामी के तीन सिद्धान्त अहिंसा, अनेकान्त एवं अपरिग्रह के बारे में विवेचना की। महासती श्री चैतन्यप्रभा जी म.सा. ने बताया कि जन्म, जरा, रोग और मरण ये चार दु:ख हैं। प्रभु के जन्म के गुणगान इसलिए करते हैं क्योंकि वे अजन्मा हो गए हैं। कोई भी काम एक दिन में नहीं होता है, लेकिन एक दिन जरूर हो जाता है। गुरु भगवन्त कहते हैं कि सभी में स्नेह दर्शन करना, शक्ति मिली है तो मदद करना और सहने में मजा और सामना करने में सजा मानना समझना चाहिए।

महासती श्री निरंजनाश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि भगवान महावीर स्वामी की जयन्ती मनाने के पीछे उनके द्वारा जिया गया जयवन्त जीवन था। सबसे पहले उन्होंने सहनशीलता का पाठ पढ़ाया। कष्ट हमारे इष्ट हैं, क्योंकि यही हमें परमेष्ठी बनाने वाले हैं। राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री मनीषजी मेहता ने बताया कि कितने लोग हैं जो भगवान महावीर के बारे में 50 पंक्तियाँ बोल सकते हैं, हम सबसे पहले भगवान महावीर के चरित्र को पढ़ें, उनके 27 भवों को जानें। आपने भगवान महावीर के बारे में विस्तृत चर्चा की और भगवान महावीर की जीवनी पढ़ने का निवेदन किया। युवती मण्डल जयपुर द्वारा भगवान महावीर के जीवन पर नाटिका एवं मेघकुमार के पूर्व भव के जीवन पर बच्चों द्वारा नाटिका प्रस्तुत की गई। सिद्धान्तशाला के छात्र श्री गौरवजी जैन द्वारा भजन प्रस्तुत किया गया।

(2) 15 मार्च, 2023 को आचार्य भगवन्त 1008 पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा का 85वाँ जन्म दिवस सामायिक स्वाध्याय भवन, महावीर नगर, जयपुर में **साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा.** आदि ठाणा-10 के सान्निध्य में तप-त्याग, एकाशन, दया, संवर, पौषध एवं सामायिक की नवरंगी के रूप में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। महासती दक्षिताजी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. रत्न संघ के अष्टम पट्टधर हैं। आप दीर्घायु हों, चिरायु हों और आपका वरदहस्त हमेशा हम पर बना रहे। महासती श्री मैत्रीप्रभाजी म.सा. ने बताया कि अमृत शक्तिदायक होता है, अमृत सभी रोगों का नाश करने वाला होता है। ऐसे ही गुरु भगवन्त भी आत्मा के पोषण का काम करते हैं। आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. भी हमेशा आगम का स्वाध्याय करने की प्रेरणा देते रहते हैं। महासती श्री उदितप्रभाजी म.सा. ने बताया कि आचार्यश्री सरलता-सहजता की प्रतिमूर्ति हैं आपकी कथनी और करनी एक है। श्री प्रकाशजी जैन-प्राचार्य, श्री पदमचन्दजी गाँधी, श्री विमलचन्दजी डागा ने गुरुदेव के प्रभावी प्रसङ्गों को प्रस्तुत किया।

महासतीश्री स्नेहलता जी म.सा. ने फरमाया कि मेरे लिए तो आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ही आदिनाथ हैं। जैसे सूर्य अन्धकार को नष्ट करता है वैसे ही आप डूबते को किनारे देने वाले महापुरुष हैं। आपकी सम्पदा सबको आकर्षित करती है। आपके दर्शनों को भक्तगण सदैव लालायित रहते हैं। आपका हमारे ऊपर हाथ है, इसलिए हम अनाथ नहीं हैं, वे गुणों के गुलदस्ता हैं। इस अवसर पर प्रवचन में श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही। आचार्यश्री के जन्म दिवस को सामायिक दिवस के रूप में मनाया गया। इस दिन लगभग 100 से अधिक एकाशन हुए।

-संजीव कोठारी, मन्त्री

जलगाँव- व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में होली चातुर्मासिक पर्व तप-त्याग एवं धर्म-आराधना के साथ मनाया गया। धुलीवन्दन के दिन सामूहिक दया का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 150 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। आचार्य भगवन्त के 85वें जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में सामूहिक तेले के तप की आराधना का लक्ष्य रखा गया, जिसमें लगभग 60 से 70 तेले, चोला, अठाई एवं 10 की तपस्या के प्रत्याख्यान हुए। महासतीजी के पदार्पण से यहाँ चातुर्मास सरीखा माहौल बन गया।

-महावीर बोथरा

आचार्यश्री हस्ती का 32वाँ पुण्यस्मृति दिवस मनाया गया

अजमेर-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ अजमेर द्वारा पूज्य आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. का 32वाँ पुण्यस्मृति दिवस 28 अप्रेल, 2023 वैशाख को विदुषी महासती श्री सुशीलाकँवरजी, श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 8 के पावन निश्रा में स्वाध्याय भवन अजमेर में सुबह 9 से 10.30 बजे तक प्रवचन, दोपहर 2.30 से 3.30 बजे जाप, गुरुभक्ति के कार्यक्रम के माध्यम से मनाया गया। प्रवचन के दौरान महासती श्री रक्षिताजी म.सा. ने 1 वर्ष में 32 आगमों के हिन्दी अर्थ पढ़ने की प्रेरणा की। महासतीजी ने स्वयं 32 आगम मूल भाषा में पढ़ने का संकल्प लिया। कुछ श्रावक एवं श्राविकाओं ने 1 वर्ष में 5 आगम, 3 आगम, 2 आगम पढ़ने का संकल्प लिया। तत्पश्चात् एकाशन, आयंबिल, उपवास के प्रत्याख्यान लिए गए। सभी आगन्तुकों का धन्यवाद श्री राजेन्द्रजी रांका ने दिया।

-हेमन्त नाहर, मन्त्री

मदनगंज किशनगढ़- आचार्यप्रवर 1008 श्री हस्तीमलजी म. सा. का पुण्यस्मृति दिवस किशनगढ़ उपखंड का एक साथ तप-त्याग सहित बृज मधुकर स्मृति भवन (शिवाजी नगर स्थानक) में महासती श्री शिक्षाश्रीजी म.सा. के सान्निध्य में मनाया गया। प्रवचन में उपस्थिति एवं प्रत्याख्यान अत्यन्त अनुमोदनीय है। महासतीजी का आचार्यश्री के जीवन-चरित्र एवं शिक्षाओं पर बहुत ही प्रभावी उद्बोधन रहा। पूरे किशनगढ़ क्षेत्र में 7 दिन के प्रवास के बाद 28 अप्रेल शाम को जयपुर की ओर विहार हुआ है। *-प्रमोद कुमार मोदी*

बालोतरा- आचार्यश्री हस्ती का 32वँ पुण्यस्मृति दिवस मनाया गया। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के निर्देशानुसार राष्ट्रीय स्तर पर श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं द्वारा अपने परिवारजनों के साथ सामूहिक प्रार्थना, सामायिक स्वाध्याय एवं तप, त्याग-प्रत्याख्यान किए गए। *-ओमप्रकाश बाँठिया*

ग्रीष्मकालीन धार्मिक शिक्षण एवं नैतिक संस्कार शिविरों का आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद द्वारा आगामी ग्रीष्मकालीन अवकाश में धार्मिक शिक्षण एवं नैतिक संस्कार शिविरों का आयोजन 21 मई से 5 जून, 2023 तक किया जा रहा है। आप सभी से निवेदन है कि अपने यहाँ आयोजित होने वाले शिविर में अधिक से अधिक शिविरार्थियों को भेजने का श्रम करावें। शिविरों के विषय में अधिक जानकारी हेतु श्री नमनजी, निपुणजी डागा -उपाध्यक्ष (धार्मिक शिक्षण एवं नैतिक संस्कार शिविर)- 73037-44889 एवं श्री धीरजजी डोसी - 94625-43360 (संघ कार्यालय) पर **सम्पर्क करें**- विकासराज जैन, महासचिव।

महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में प्रचार-प्रसार यात्रा सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर एवं श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगाँव के संयुक्त तत्त्वावधान में 24 से 27 मार्च, 2023 तक महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में चांदुररेलवे, अमरावती, धामणगाँव, नेर, यवतमाल, कलंब, रालेगाँव, पांढरकवडा, हिंगनघाट, वर्धा, सदर नागपुर, कांग्रेसनगर नागपुर, वर्धमाननगर नागपुर, कामठी, पारसिवनी, खापरखेड़ा आदि क्षेत्रों में प्रचार-प्रसार कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस प्रवास कार्यक्रम में अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, विदर्भ शाखा के क्षेत्रीय प्रधान श्री मनोजजी बोहरा, नागपुर, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के कार्यालय प्रभारी श्री सुरेशजी हिंगड़, जोधपुर,

महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ के प्रचारक श्री शुभमजी बोहरा, जलगाँव की महनीय सेवाएँ प्राप्त हुईं। कार्यक्रम के अन्तर्गत 14 नए स्वाध्यायी बने, पर्युषण पर्व में स्वाध्यायी आमन्त्रित करने हेतु दो क्षेत्रों की माँग आई एवं शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा हेतु 135 फॉर्म प्राप्त हुए, संस्कार केन्द्र एवं पाठशाला का निरीक्षण भी किया गया। सभी श्रावक-श्राविकाओं को स्थानक भवन में पधार कर सामायिक एवं प्रार्थना करने की प्रभावी प्रेरणा भी की गई।

-सुनील संकलेचा, सचिव

स्वाध्याय संघ द्वारा पोरवाल क्षेत्र में प्रचार-प्रसार यात्रा सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा 14 से 17 अप्रेल 2023 तक पोरवाल क्षेत्र में आध्यात्मिक प्रचार-प्रसार कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री सुभाषजी हुण्डीवाल-जोधपुर, पोरवाल शाखा के संयोजक श्री महावीर प्रसादजी जैन-बजरिया, वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री धर्मचन्दजी जैन-कुश्तला, स्वाध्याय संघ के सह-प्रभारी श्री धीरजजी डोसी-जोधपुर, प्रचारक श्री आनन्दजी जैन-सवाईमाधोपुर की महनीय सेवाएँ प्राप्त हुईं। कार्यक्रम के अन्तर्गत पोरवाल क्षेत्र के आलनपुर, आवासनमण्डल, महावीरनगर, श्योपुरकलाँ, बाराँ, विज्ञाननगर कोटा, केशवपुरा कोटा, रामपुरा कोटा, बूंदी, दूणी, अलीगढ़, चौथ का बरवाड़ा, बजरिया, शहर सवाईमाधोपुर सहित 14 क्षेत्रों में प्रवास हुआ।

कार्यक्रम के अन्तर्गत नौ नए स्वाध्यायी बने, पर्युषण पर्व में स्वाध्यायी आमन्त्रित करने हेतु 13 क्षेत्रों की माँग प्राप्त हुई तथा 22 स्वाध्यायी भाई-बहिनों की पर्युषण पर्व में बाहर गाँव पधारने की स्वीकृति भी प्राप्त हुई। शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा की जानकारी देते हुए परीक्षा के 13 फॉर्म प्राप्त हुए एवं सभी क्षेत्रों में फॉर्म वितरण कर वहाँ के केन्द्र अधीक्षक एवं निरीक्षक को शीघ्र ही फॉर्म भरकर कार्यालय में भिजवाने का निवेदन किया गया। संस्कार केन्द्र के बच्चों एवं अध्यापकों से भी संवाद कर बच्चों की धार्मिक जानकारी भी प्राप्त की गई तथा पाठशाला का निरीक्षण भी किया गया। सभी श्रावक-श्राविकाओं को स्थानक भवन में पधारकर सामायिक एवं प्रार्थना करने की प्रभावी प्रेरणा की गई।

-सुनील संकलेचा, सचिव

स्वाध्यायियों के लिए पर्युषण सेवा हेतु निवेदन

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के समस्त स्वाध्यायी बन्धुओं से निवेदन है कि प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी आत्मगुणों के सञ्चयन, संवर्धन एवं संरक्षण के महापर्व पर्वाधिराज पर्युषण पर्व 14 से 21 अगस्त, 2023 के पुनीत अवसर पर आपकी सेवाओं की महती आवश्यकता है। आप पर्युषण पर्व में अवश्य पधार कर अपनी अमूल्य सेवाएँ संघ को प्रदान करावें। पर्युषण में बाहर क्षेत्र में जाकर सेवा देने से आपकी धर्माराधना तो सुचारु रूप से होगी ही, अन्य भाई-बहिनों की साधना में भी आप निमित्त बन सकेंगे। अत: आपसे आग्रह है कि आप अपनी पर्युषण पर्व में पधारने की स्वीकृति स्वाध्याय संघ कार्यालय जोधपुर के पते पर अवश्य भिजवाने का श्रम करावें। साथ ही आप अपनी नवीनतम जानकारी जैसे अपने मोबाईल नम्बर, ईमेल तथा व्हाट्सअप नम्बर भी इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करें, ताकि आपसे सम्पर्क करने में आसानी रहे।

विशेष निवेदन-हम सभी स्वाध्यायी बन्धुओं की पारिवारिक, सामाजिक एवं व्यावसायिक जान-पहचान अपने क्षेत्र में ही नहीं, पूरे भारतवर्ष एवं विदेशों में भी है। इस सन्दर्भ में निवेदन है कि हम अपने जान-पहचान वालों से व्यावहारिक वार्तालाप करने के साथ ही आध्यात्मिकता से जुड़ी बातें भी करें। हमारे सम्पर्क में आया बन्धु जिस क्षेत्र से जुड़ा है, उस क्षेत्र में चातुर्मास है या नहीं, इसकी जानकारी लें। अगर नहीं है तो क्षेत्र के अध्यक्ष/मन्त्री से बात करके स्वाध्यायी बुलाने की प्रेरणा करें। अगर आपकी प्रेरणा से उस क्षेत्र में स्वाध्यायी जाते हैं तो आपको धर्मदलाली का

लाभ स्वत: ही मिल जाएगा, साथ ही सम्पर्क में आने वाले बन्धुओं की धार्मिक जानकारी एवं योग्यता की परख करें तथा उन्हें स्वाध्यायी बनने एवं बनाने हेतु प्रेरणा करें। ऐसे बन्धु जिनमें स्वाध्यायी बनने की योग्यता हो, उनके नाम, पता एवं मोबाइल नम्बर इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करावें, ताकि उनसे सम्पर्क किया जा सकें।

संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर, सामायिक स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2, नेहरु पार्क, सरदारपुरा, जोधपुर, फोन 0291-2624891, मो. 9414126279, 9460551096, 9413844592, 9444852330, 9462543360

-सुभाष हुण्डीवाल, संयोजक

रायचूर में संघीय गतिविधियाँ गतिशील

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघीय संस्थाओं के मुख्य पदाधिकारियों का दक्षिण क्षेत्र में प्रवास कार्यक्रम हुआ, जिसमें रायचूर क्षेत्र में चल रही गतिविधियों पर सभी ने प्रमोद व्यक्त किया। गतिविधियों की संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है-

1. वर्ष 1981 के आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. के चातुर्मास के पश्चात् से प्रतिदिन प्रात:काल आगम स्वाध्याय निरन्तर गतिमान है, जिसमें 15-20 श्रावकों की उपस्थिति रहती है।
2. प्रत्येक रविवार दोपहर को बच्चों के लिए 'लिटिल बर्ड्स' धार्मिक पाठशाला सञ्चालित हो रही है, जिसमें लगभग 150 बच्चे अध्ययनरत हैं। विशेष उपलब्धि है कि इस वर्ष 40 बच्चों ने प्रतिक्रमण पूर्ण किया है।
3. प्रत्येक रविवार को सामूहिक सामायिक का आयोजन गतिमान है, जिसमें 100-150 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रहती है।
4. 'श्री संघ सेवा समिति' का गठन हुआ, जिसमें 10-15 श्राविकाएँ अपना योगदान स्थानक सम्बन्धी सेवाओं जैसे- उपकरणों की प्रतिलेखना, धार्मिक पुस्तकों की सार-सम्भाल आदि में दे रही हैं।
5. प्रत्येक शुक्रवार श्राविका मण्डल द्वारा आगम का वाचन एवं विवेचन किया जा रहा है, जिसमें लगभग 50 श्राविकाएँ भाग ले रही हैं।
6. रायचूर क्षेत्र में पधारने वाले सन्त-सती मण्डल की विहार सेवा में भी रायचूर संघ सक्रिय है। हैदराबाद की ओर 70 किमी. तथा बैंगलोर की ओर 50 किलोमीटर तक सभी परम्पराओं के सन्त-सती मण्डल की वैयावच्च में संघ सेवारत है।
7. आयंबिल खाते का सञ्चालन विगत कई वर्षों से किया जा रहा है।

15 मार्च 2023 को आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 85वाँ जन्म-दिवस व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. के पावन सान्निध्य में मनाया गया। इस अवसर पर लगभग 350 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। बैंगलुरु से अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की परामर्शदाता श्रीमती मंजूजी भण्डारी, उपाध्यक्ष श्रीमती वैजयन्तीजी मेहता सहित कई श्राविकाएँ पधारी। चेन्नई से वीर परिवार, शोरापुर, सैदापुर, गंगावती, सिन्धनूर आदि से भी कई श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित हुए। 17 तेले, 12 उपवास, 120 एकाशन की तपस्या के साथ 25 संवर-पौषध हुए। दोपहर में प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया।

-माधवी विकास सुखानी, क्षेत्रीय प्रधान-श्राविका मण्डल

जोधपुर में तीन दिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा शिविर का आयोजन

गोसंवर्धन गोशाला मोकलावास, जोधपुर में स्थित नव-निर्मित आचार्य हस्ती अहिंसात्मक चिकित्सा शोध संस्थान एवं होलिस्टिक हेल्थ केयर सेंटर के संयुक्त तत्त्वावधान में तीन दिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा शिविर 10 से 12 अप्रेल, 2023 तक सम्पन्न हुआ। इस शिविर में दिल्ली, उत्तरप्रदेश, पश्चिम बंगाल, राजस्थान एवं जोधपुर के

कई स्थानीय साधकों ने भाग लिया तथा अपने शरीर, मन एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का समाधान प्राप्त किया। वरिष्ठ स्वाध्यायी एवं स्वावलम्बी अहिंसक चिकित्सा पद्धतियों के प्रेरणास्रोत डॉ. चंचलमलजी चोरड़िया ने बिना दवा के स्वावलम्बी अहिंसक चिकित्सा पद्धति द्वारा व्यक्ति कैसे स्वस्थ एवं तन्दुरुस्त रह सकता है, इस विषय पर प्रशिक्षण दिया। डॉ. राकेश निहाल ने विभिन्न जड़ी-बूटियों की जानकारी दी। सेवानिवृत्त अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री आर.एस. गोगावत ने योगाभ्यास, योगनिद्रा, सूर्य नमस्कार, सूक्ष्म व्यायाम, जायण्ट रोटेशन एवं मेडिटेशन का अभ्यास करवाया। भूतपूर्व न्यायाधीश राष्ट्रीय संघाध्यक्ष श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया ने शिविर में भाग लेने वाले शिविरार्थियों को प्रमाण-पत्र वितरित किये। *-डॉ. राकेश निहाल*

केन्द्रीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर 16 जून से जोधपुर में

स्वाध्यायियों के ज्ञान एवं आचरण में उत्तरोत्तर विकास करने हेतु श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ द्वारा समय-समय पर स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जाते हैं। इसी कड़ी में स्वाध्यायियों को सूचित करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा एवं महासती मण्डल आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में 16 से 20 जून, 2023 तक पंचदिवसीय शिविर का आयोजन जोधपुर में किया जा रहा है। इस शिविर में निम्नांकित योग्यता वाले स्वाध्यायी भाग ले सकेंगे-

1. श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर का स्वाध्यायी हो एवं पर्युषण पर्व में सेवा दे रहा हो।
2. नये स्वाध्यायी जिन्होंने वर्ष 2022-23 में स्वाध्याय संघ की सदस्यता ग्रहण की हो और पर्युषण पर्व में सेवा देने की भावना रखते हो।
3. सामायिक, प्रतिक्रमण कण्ठस्थ हों।

उक्त शिविर में कुशल प्रशिक्षकों द्वारा वक्तृत्व कला आदि का प्रभावी प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। शिविर में आने वाले स्वाध्यायी अपने आगमन की सूचना 5 जून, 2023 तक कार्यालय को अवश्य भिजवा देवें, जिससे उन्हें शिविर में आने की स्वीकृति कार्यालय द्वारा प्रदान की जा सके। शिविर में भाग लेने हेतु स्वाध्याय संघ, जोधपुर की स्वीकृति प्राप्त करना अनिवार्य है।

शिविर सम्बन्धी जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र-1. स्वाध्याय संघ कार्यालय 9414126279, 2. सुरेश हींगड़-प्रभारी 9444852330, 3. धीरज डोसी-प्रभारी 9462543360, 4. धर्मचन्द जैन-शिविर संयोजक 9351589694, 5. सुभाष हुण्डीवाल-संयोजक 9460551096, 6. सुनील संकलेचा-सचिव 9413844592

जलगाँव में ग्रीष्मकालीन जैन धार्मिक एवं स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगाँव द्वारा 13 से 16 अप्रेल तक जलगाँव में ग्रीष्मकालीन जैन धार्मिक एवं स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर का आयोजन अहिंसा तीर्थ आर. सी. बाफना गौशाला कुसुंबा में किया गया। इसमें वरिष्ठ अध्यापक श्री प्रकाशचन्दजी जैन, श्री त्रिलोकचन्दजी जैन-जयपुर, सौ. मंगलाजी चौरड़िया, सौ. किरणबाईजी बोहरा, सौ. अनिताजी लूंकड़, श्री मनोजजी संचेती, श्री शुभमजी बोहरा जलगाँव, सौ. किरणबाईजी कोठारी बोदवड़ ने 25 बोल, 67 बोल, सामायिक, प्रतिक्रमण-अर्थ, प्रश्नोत्तर सहित, तत्त्वार्थसूत्र, भक्तामर, दशवैकालिकसूत्र , उत्तराध्ययनसूत्र, वक्तृत्व कला एवं अन्य थोकड़ों को चार कक्षाओं के माध्यम से अध्यापन कराया। इसमें भड़गाँव, जामनेर, मुकटी, धूलिया, धरनगाँव, वरनगाँव, पलासखेड़ा, नाशिक, सिल्लोड, बोदवड़,

शिरपुर, जलगाँव आदि स्थानों से 184 शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर में स्वाध्यायी के रूप में 20 नए सदस्यता फॉर्म और आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा हेतु 70 आवेदन पत्र प्राप्त हुए। शिविर में आवास, भोजन, पुरस्कार, यात्रा खर्च श्रीमती नयनतारा बाफना परिवार द्वारा किया गया। *-मनोज संचेती*

शिक्षण बोर्ड की कार्यशाला जलगाँव में सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की महाराष्ट्र क्षेत्र के केन्द्राधीक्षकों-निरीक्षकों की कार्यशाला 16 अप्रेल 2023, रविवार को अहिंसा तीर्थ रतनलाल सी. बाफना-गोशाला-जलगाँव में आयोजित की गई। इस कार्यशाला में 45 केन्द्राधीक्षकों एवं निरीक्षकों ने भाग लिया। कार्यशाला में शिक्षण बोर्ड के संयोजक श्री अशोकजी बाफना-चेन्नई, सह-संयोजक श्री प्रशान्तजी पारख-जलगाँव, रत्नसंघ जलगाँव के अध्यक्ष श्री महावीरजी बोथरा, स्वाध्याय संघ की सह-संयोजक सौ. मंगलाजी चोरड़िया, महाराष्ट्र स्वाध्याय संघ की संयोजक श्रीमती नयनताराजी बाफना, वरिष्ठ श्रावकरत्न श्री कस्तूरचन्दजी बाफना, श्री सुशीलजी बाफना, शिक्षण बोर्ड के सह-सचिव श्री महेन्द्रजी बाफना, रत्न युवक परिषद् जलगाँव के सचिव श्री जिनेश्वरजी डोसी, श्री रविन्द्रजी चेन्नई, वरिष्ठ प्रशिक्षक श्री प्रकाशचन्दजी जैन-जयपुर आदि महानुभावों का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

कार्यशाला का उद्देश्य एवं शिक्षण बोर्ड की गतिविधियों की जानकारी शिक्षण बोर्ड के संयोजक द्वारा प्रस्तुत की गई। आगत सभी पदाधिकारियों, केन्द्राधीक्षकों तथा निरीक्षकों का परिचय कराने के साथ ही शिक्षण बोर्ड की परीक्षा सम्बन्धी गतिविधियों में सक्रियता लाने हेतु कार्यशाला के विभिन्न सत्रों में विचार-विमर्श किया गया।

शिक्षण बोर्ड की गतिविधियों के उन्नयन में महत्त्वपूर्ण सेवाएँ प्रदान करने के उपलक्ष्य में श्री मनोजजी संचेती-जलगाँव तथा श्री शुभमजी बोहरा-जलगाँव को शिक्षण बोर्ड की ओर से विशेष रूप से सम्मानित किया गया। कार्यशाला के विभिन्न सत्रों का सञ्चालन श्री मनोजजी संचेती एवं श्री शुभमजी बोहरा द्वारा किया गया। कार्यशाला में पधारे हुए सभी महानुभावों को बाफना परिवार की ओर से श्रीमती नयनताराजी बाफना ने स्मृतिचिह्न देकर सम्मानित किया।

शिक्षण बोर्ड की 23 जुलाई की परीक्षा में भाग लेकर ज्ञान-वृद्धि कीजिए

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कक्षा 1 से 12 तक की आगामी परीक्षा 23 जुलाई 2023, रविवार को दोपहर 12:30 से 3:30 बजे तक आयोजित की जाएगी।

1. परीक्षा ज्ञानवृद्धि का प्रमुख साधन है। क्रमबद्ध एवं सही ज्ञान ही व्यक्ति को हित-अहित की जानकारी कराता है। अत: ज्ञान बढ़ाने एवं सुसंस्कार पाने हेतु आप स्वयं भी परीक्षा दें तथा अन्य भाई-बहनों को भी परीक्षा में भाग लेने की प्रभावी प्रेरणा कर धर्मदलाली का लाभ प्राप्त करें।
2. कम से कम 10 परीक्षार्थी होने पर नया परीक्षा केन्द्र प्रारम्भ किया जा सकता है।
3. परीक्षा से सम्बन्धित आवेदन-पत्र, पुस्तकें शिक्षण बोर्ड कार्यालय से प्राप्त की जा सकती हैं।
4. सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार एवं मेरिट में आने वालों को विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।
5. परीक्षा में भाग लेने हेतु आवेदन-पत्र भरकर जमा कराने की अन्तिम दिनाङ्क 23 जून, 2023 है। नियत समय में आवेदन-पत्र जमा कराना अनिवार्य है।

परीक्षा सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें-अशोक बाफना, संयोजक- 94442-70145, आकाश चौपड़ा, सचिव- 94130-33718, धर्मचन्दजैन, रजिस्ट्रार- 93515-89694, शिक्षण बोर्ड कार्यालय-

सामायिक स्वाध्याय भवन, 2, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003(राज) फोन 0291-2630490, What's App: 7610953735 Website : jainratnaboard.com, E-mail: shikshanboardjodhpur@gmail.com

जयपुर में उच्च अध्ययन हेतु छात्रों को सुनहरा अवसर

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (सिद्धान्त-शाला) में वर्ष 2023 के प्रवेश हेतु रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ

नैतिक-आध्यात्मिक संस्कारों के साथ जयपुर में रहकर उच्च शैक्षणिक अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों हेतु संस्थान में प्रवेश के लिए रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ है। कक्षा 8वीं से ऊपर के छात्र संस्थान में प्रवेश हेतु आवेदन कर सकते हैं। संस्थान में विद्यार्थियों के लिए उचित आवास-भोजन व्यवस्था के साथ, कम्प्यूटर शिक्षण, इंग्लिश स्पीकिंग क्लासेज, सेमिनार एवं मोटिवेशनल कक्षाएँ आयोजित होती रहती हैं। शैक्षणिक अध्ययन के साथ संस्थान द्वारा निर्धारित धार्मिक पाठ्यक्रम का अध्ययन भी संस्थान में करवाया जाता है। जो छात्र संस्कारित एवं अनुशासित रहकर अध्ययन करना चाहते हैं, वें रजिस्ट्रेशन के लिए सम्पर्क करें।

नोट-रजिस्ट्रेशन फॉर्म रत्नसंघ की वेबसाइट ratansangh.com पर जाकर About us option पर Click कर आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान के पेज से डाउनलोड किया जा सकता है अथवा हमारे फेसबुक पेज https://www.facebook.com/profile.php?id=100011420126008 से भी जुड़कर अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। **अधिक जानकारी एवं रजिस्ट्रेशन हेतु सम्पर्क करें**-ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 फोन नं. 141-2710946, 79762-46596 Email:-ahassansthan@gmail.com

जयपुर में उच्च अध्ययन हेतु छात्राओं को सुनहरा अवसर

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर द्वारा सञ्चालित श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान बालिका छात्रावास में प्रवेश हेतु सत्र 2023-24 के लिए आवेदन पत्र आमन्त्रित हैं। कक्षा 9वीं से 12वीं तक अध्ययन की इच्छुक छात्राओं को प्राथमिकता दी जाएगी एवं उच्च शैक्षणिक अध्ययन करने वाली छात्राएँ भी आवेदन कर सकती हैं। बालिकाओं के लिए छात्रावास में निःशुल्क आवास, भोजन एवं सुरक्षा की उत्तम व्यवस्था है। शैक्षणिक अध्ययन हेतु प्रवेश लेने वाली छात्राओं को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा देना अनिवार्य है। छात्रावास में बालिकाओं के सर्वांगीण विकास का ध्यान रखते हुए समय-समय पर मोटिवेशनल क्लासेज, सेमिनार, विभिन्न गृह-कौशल, पर्सनैलिटी डवलपमेंट एवं इंग्लिश स्पीकिंग जैसी विशेष कक्षाएँ लगाई जाती हैं। प्राप्त आवेदनों में वरीयता क्रम के अनुसार चयनित छात्राओं का साक्षात्कार लिया जाएगा, प्रवेश पाने वाली छात्राओं को संस्थान द्वारा निर्धारित नियमों का पूर्ण पालन करना अनिवार्य है। इच्छुक छात्राएँ 15 जून, 2023 तक अपना आवेदन पत्र भरकर संस्थान में जमा करा सकती हैं। आवेदन प्राप्त करने एवं जमा कराने हेतु **सम्पर्क सूत्र**- अधिष्ठाता श्रीमती मंजूजी जैन, श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, 12/251 के सामने, कावेरी पथ, मानसरोवर, जयपुर -302020, मो. 9413019982

विद्यार्थियों के जीवन-निर्माण में बनें सहयोगी

छात्र-छात्रा संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण योजना

(प्रतिवर्ष एक छात्र के लिए रुपये 24,000 सहयोग की अपील)

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, (सिद्धान्त शाला) जयपुर, संघ एवं समाज के प्रतिभाशाली छात्रों

के सर्वांगीण विकास के लिए वर्ष 1973 से सञ्चालित संस्था है। इस संस्था से अब तक सैकड़ों विद्यार्थी अध्ययन कर प्रशासकीय, राजकीय एवं प्रोफेशनल क्षेत्र में कार्यरत हैं। अनेक छात्र व्यावसायिक क्षेत्रों में सेवारत हैं। समय-समय पर ये संघ-समाजसेवी कार्यों में निरन्तर अपनी सेवाएँ भी प्रदान कर रहे हैं। वर्तमान में भी यहाँ अध्ययनरत विद्यार्थियों को धार्मिक-नैतिक संस्कारों सहित उच्च अध्ययन के लिए उचित आवास-भोजन की नि:शुल्क व्यवस्थाएँ प्रदान की जाती हैं। व्यावहारिक अध्ययन के साथ ही छात्रों के लिए धार्मिक अध्ययन की व्यवस्था भी संस्था द्वारा की जाती है। वर्तमान में संस्थान में 71 विद्यार्थियों के लिए अध्ययनानुकूल व्यवस्थाएँ हैं। संस्था को सुचारुरूप से चलाने एवं इन बालकों के लिए समुचित अध्ययनानुकूल व्यवस्था में आप-सबका सहयोग अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि छात्रों के जीवन-निर्माण के इस पुनीत कार्य में बालकों के संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण में सहयोगी बनें।

इसमें सहयोगी बनने वाले महानुभावों के नाम जिनवाणी में क्रमिक रूप से प्रकाशित किये जा रहे हैं। संस्थान के लिए पूर्व छात्रों का एवं निम्नलिखित महानुभावों का सहयोग प्राप्त हुआ है-

58. श्री गौत्तमचन्दजी, आदित्यजी, मिहिरजी जैन, महारानी फार्म, जयपुर (राजस्थान)	1,01,000/-
59. श्री सिद्धार्थजी सिंघवी, निर्माण नगर, जयपुर (राजस्थान)	24,000/-
60. मैसर्स सुराणा एण्ड सुराणा, चेन्नई (तमिलनाडु)	35,000/-
61. श्रीमती शीलाजी धर्मपत्नी श्री प्रकाशजी कोठारी, जयपुर (राजस्थान)	30,000/-
62. श्री विमलचन्दजी ललवाणी, भवानीसिंह रोड़, जयपुर	24,000/-
63. श्रीमती बीनाजी ललवाणी, भवानीसिंह रोड़, जयपुर	24,000/-

आप द्वारा दिया गया आर्थिक सहयोग 80जी धारा के तहत कर मुक्त होगा। आप यदि सीधे बैंक खाते में सहयोग कर रहे हैं तो चेक की कॉपी, ट्रांजेक्शनस्लिप एवं सम्बद्ध जानकारी हमें अवश्य भेजें।

खाते का विवरण:-Name : ***GAJENDRA CHARITABLE TRUST***, Account Type : *Saving*, Account Number : ***10332191006750***, Bank Name : *Punjab National Bank*, Branch : Khadi Board, Bajaj Nagar, Jaipur, Ifsc Code : PUNB0103310, Micr Code : 302022011, Custumer ID : 35288297 **निवेदक :** डॉ. प्रेमसिंह लोढ़ा (व्यवस्थापक), सुमन कोठारी (संयोजक), अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें-दिलीप जैन 'प्राचार्य' 9461456489, 7976246596

(प्रतिवर्ष एक छात्रा के लिए रुपये 24,000 सहयोग की अपील)

श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (बालिका), मानसरोवर-जयपुर, संघ और समाज की प्रतिभाशाली छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए वर्ष 2017 से सञ्चालित संस्था है। यहाँ इस संस्था में वर्तमान में 40 अध्ययनरत छात्राओं को धार्मिक-नैतिक संस्कारों सहित उच्च अध्ययन के लिए उचित आवास-भोजन की नि:शुल्क व्यवस्थाएँ प्रदान की जा रही हैं। व्यावहारिक अध्ययन के साथ छात्राओं को धार्मिक अध्ययन की व्यवस्था भी संस्था द्वारा की जाती है। संस्था को सुचारूरूप से चलाने एवं इन बालिकाओं के लिए समुचित अध्ययनानुकूल व्यवस्था में आप-सबका सहयोग अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि छात्राओं के जीवन-निर्माण के इस पुनीत कार्य में तथा उनके संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण में सहयोगी बनें।

इसमें सहयोगी बनने वाले महानुभावों के नाम जिनवाणी में क्रमिक रूप से प्रकाशित किये जा रहे हैं। संस्थान के लिए पूर्व छात्रों का एवं निम्नलिखित महानुभावों का सहयोग प्राप्त हुआ है-

18. अमेजिंग ज्वैलर्स, जौहरी बाजार, जयपुर (राजस्थान)	48,000/-

आप द्वारा दिया गया आर्थिक सहयोग 80जी धारा के तहत कर मुक्त होगा। आप यदि सीधे बैंक खाते में सहयोग कर रहे हैं तो चेक की कॉपी, ट्रॉंजेक्शनस्लिप तथा सम्बद्ध जानकारी हमें अवश्य भेंजे।

खाते का विवरण:-Name : ***SAMYAGGYAN PRACHARAK MANDAL***, Account Type : *Saving,* Account Number : ***51026632997***, Bank Name : *SBI*, Branch : Bapu Bazar, Jaipur, Ifsc Code : SBIN0031843 **निवेदक :** अशोक कुमार सेठ, मन्त्री। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क फोन नं. अनिल जैन 9314635755

स्वाध्याय शिक्षा द्विमासिक पत्रिका के सदस्य बनें

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर की ओर से स्वाध्यायियों के ज्ञान में विशेष अभिवृद्धि तथा भाषा ज्ञान को पुष्ट करने के लक्ष्य से गत 38 वर्षों से संस्कृत, प्राकृत एवं हिन्दी भाषा की द्विमात्रिक पत्रिका 'स्वाध्याय शिक्षा' का निरन्तर प्रकाशन किया जा रहा है। अभी इस पत्रिका की पाठ्य सामग्री एक-एक विषय पर आधारित रहती है। अब तक पंच परमेष्ठी, रत्नत्रय, आगम आदि पर सारगर्भित सामग्री के साथ प्रकाशन हो चुका है, जिसकी पाठकों ने खूब सराहना की है। अगले अंक के विषय की सूचना वर्तमान अंक में दे दी जाती है। आपसे अनुरोध है कि आप अपने श्रुतज्ञान की वृद्धि हेतु इस पत्रिका के सदस्य बनें। सदस्यता शुल्क 20 वर्ष के लिए रुपये 1,000/- मात्र है। सदस्य बनने हेतु आप श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्लॉट नं. 2, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003 (राजस्थान) 0291-2624891, 9462543360 पर सम्पर्क कर सकते हैं। **लेखकों से अनुरोध**-चिन्तनशील, प्रबुद्ध, विद्वान् लेखकों से अनुरोध है कि वे अपनी मौलिक रचनाएँ भेजकर स्वाध्यायियों की ज्ञानवृद्धि में सहयोगी बनें। आप अपने लेख सम्पादकीय कार्यालय-आध्यात्मिक शिक्षा समिति, ए 9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राजस्थान) assjaipur108@gmail.com पर भिजवा सकते हैं।

देश-विदेश में जैनविद्या के वर्तमान परिदृश्य एवं सम्भावनाओं पर हुआ अन्तरराष्ट्रीय वेबिनार

सोमैया विद्याविहार विश्वविद्यालय, मुम्बई के जैनविद्या अध्ययन केन्द्र के 21वें स्थापना दिवस के अवसर पर के.जे. सोमैया इंस्टीट्यूट ऑफ धर्म स्टडीज ने 21 अप्रेल 2023 को Jain Studies - Present Scenario, Opportunities and Future Prospect विषय पर अन्तरराष्ट्रीय वेबिनार का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इस अवसर पर देश-विदेश के जाने-माने जैन शिक्षाविदों ने वक्ता के रूप में भाग लिया।

वेबिनार की शुरुआत सोमैया विद्याविहार विश्वविद्यालय के संस्कृत कुलगीत से हुई, जिसे डॉ. प्राची पाठक (सहायक प्रोफेसर, KJSIDS) ने मधुरता से प्रस्तुत किया। एम.ए. जैनोलॉजी एवं प्राकृत (भाग प्रथम) के छात्र विवेक जैन ने प्राकृत मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत की। वेबिनार के संयोजक एवं सहायक प्रोफेसर डॉ. अरिहंत कुमार जैन ने कहा कि इस वेबिनार का उद्देश्य जैनविद्या के वर्तमान परिदृश्य एवं इसके अध्ययन के प्रति लोगों की बढ़ती जागरूकता को देखते हुए भविष्य के लिए नए लक्ष्य निर्धारित करना है। के.जे. सोमैया इंस्टीट्यूट ऑफ धर्म स्टडीज की निदेशक डॉ. सुप्रिया राय ने सभी प्रतिष्ठित वक्ताओं का स्वागत करते हुए जैन अध्ययन को बढ़ावा देने के लिए संस्थान के मजबूत उद्देश्यों को प्रस्तुत किया। सेंटर फॉर स्टडीज इन जैनिज़्म, और इसकी गतिविधियों और सफलतापूर्वक चल रहे पाठ्यक्रमों (एम.ए./पी.एच.डी./सर्टिफिकेट/डिप्लोमा) का परिचय देते हुए, केंद्र के अध्यक्ष डॉ. एस.पी. जैन ने बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ कि प्रेरणा से स्व. श्री शांतिलालजी सोमैया ने 2003 में इस केंद्र की स्थापना की थी। तब से केन्द्र ने जैन अध्ययन के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए कई पहल और अभियान भी शुरू किए हैं।

प्रथम वक्ता डॉ. सुलेख जैन ने जैनधर्म में शिक्षण और शोध और उत्तरी अमेरिका में जैन अध्ययन की यात्रा के बारे में बताया। उन्होंने जैन अध्ययन को बढ़ावा देने के लिए की जा रही विभिन्न पहलों, परियोजनाओं और

जैनविद्या की बेहतर समझ के लिए ऐसे प्रयासों के महत्त्व पर चर्चा की। द्वितीय वक्ता **डॉ शुगनचंद जैन** (निदेशक, ISJS) ने जैनधर्म की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, इसकी वर्तमान स्थिति और आने वाले वर्षों में इसके विकसित होने की सम्भावना का व्यापक अवलोकन प्रदान किया, उन्होंने विश्व स्तर पर जैनधर्म और प्राकृत अध्ययन को बढ़ावा देने के लिए इण्टरनेशनल स्कूल फॉर जैन स्टडीज (ISJS) के माध्यम से किए जा रहे कार्यों को भी रेखांकित किया।

प्रो. धर्मचन्द जैन (निदेशक, जैन केन्द्र, T.M.U.) ने बताया कि शिक्षा जगत् में जैन अध्ययन का वर्तमान परिदृश्य अत्यन्त उत्साहजनक है। यह सुनिश्चित करने की भी आवश्यकता है कि युवा पीढ़ी जैन परम्परा और इसकी शिक्षाओं से पर्याप्त रूप से परिचित हो। कुछ प्रसिद्ध संस्थानों के नामों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि ये संस्थान शैक्षिक कार्यक्रमों सहित अन्वेषण के लिए एक महत्त्वपूर्ण मञ्च प्रदान करते हैं और यह सुनिश्चित करने में मदद करते हैं कि भविष्य में जैनविद्या की अकादमिक रूप से श्रीवृद्धि होती रहेगी। उन्होंने सुझाव दिया कि आम जनता को जैन पुस्तकों के बारे में अधिक जानकारी देने के लिए केंद्रीय जैन प्रकाशन गृह स्थापित करना एक अच्छा विचार होगा।

पाण्डुलिपि विज्ञान के महत्त्व की जानकारी देते हुए **प्रो. जितेन्द्र बी. शाह** (निदेशक, श्रुत रत्नाकर, अहमदाबाद) ने बताया कि जैन पाण्डुलिपियों का अध्ययन अकादमिक दृष्टिकोण से भी महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह भारतीय धर्म और संस्कृति के विकास पर प्रकाश डालने में मदद करता है। **प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी** (निदेशक, डिस्टेन्स एजुकेशन, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ) ने कहा कि जैनविद्या अनुसन्धान के नवीन अवसर प्रदान करती है। जैनधर्म के पारम्परिक शिक्षण केंद्रों और उनकी उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए, **प्रो. अनेकांत कुमार जैन** (आचार्य, जैनदर्शन विभाग, श्री लालबहादुर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली) ने कहा कि जैनधर्म के पारम्परिक शिक्षण केन्द्रों में प्राचीन और आधुनिक शिक्षा के बीच एक सेतु के रूप में काम करने की क्षमता है, जिससे पारम्परिक ज्ञान के महत्त्व की सराहना की जा सकती है। चर्चा के बीच समणी डॉ. शशिप्रज्ञा ने अखिल भारतीय महिला मण्डल की एक बड़ी पहल के बारे में भी जानकारी दी, जिसमें अनेक महिलाओं को जैन शिक्षा में पारंगत बनाने का महत्त्वपूर्ण कार्य चल रहा है। प्रतिभागियों ने खुलकर सवाल पूछे, कुछ ने लाइव चैट के जरिए और कुछ ने चैट बॉक्स के जरिए।

-डॉ. अरिहन्त जैन

भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद् द्वारा भगवान महावीर पर व्याख्यान का आयोजन

भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद्, नई दिल्ली के लखनऊ परिसर द्वारा भगवान महावीर जन्म कल्याण के अवसर पर 5 अप्रेल, 2023 को ऑन लाइन व्याख्यान का आयोजन किया गया। इसमें जैन विद्या के विद्वान् जिनवाणी हिन्दी मासिक पत्रिका के प्रधान सम्पादक प्रो. धर्मचन्द जैन को प्रमुख वक्ता के रूप में आमन्त्रित किया गया। प्रो. जैन ने **'वर्तमान विश्व और भगवान महावीर की अहिंसा के पाँच लक्ष्य'** विषय पर व्याख्यान देते हुए वर्तमान विश्व की समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए उनके समाधान में प्रभु महावीर की अहिंसा के पाँच लक्ष्य प्रतिपादित किए। उन्होंने बताया कि महावीर ने हिंसा को मात्र कर्मबन्ध का कारण प्रतिपादित नहीं किया, उन्होंने अन्य प्राणियों के जीने की अभिलाषा, उनके प्रति अपनत्व आदि का प्रतिपादन करके भी हिंसा को त्याज्य बताया। उन्होंने हिंसा को हनन करने, शोषण करने, गुलाम बनाने, परिताप देने एवं अशान्त बनाने के रूप में भी निरूपित किया। प्रभु महावीर ने कहा-सभी जीव जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता। सबको आयुष्य प्रिय है, इसलिये भी

उनकी हिंसा नहीं करनी चाहिए। प्रभु महावीर की अहिंसा के पाँच लक्ष्य हैं-1. आत्मविशुद्धि, 2. प्राणिरक्षण, 3. पर्यावरण-संरक्षण, 4. उन्नत समाज एवं 5. विश्व शान्ति। हिंसा जहाँ जीव को मलिन बनाती है, कर्म का आस्रव करती है, वहाँ अहिंसा जीव को पावन बनाती है तथा कर्मास्रव को रोककर संवर एवं निर्जरा में सहायक होती है। अहिंसा का पालन कर जीवों को अभयदान प्रदान कर उनकी रक्षा की जा सकती है। अनुकम्पा एवं दया के द्वारा प्राणियों की रक्षा की जा सकती है। हिंसा जहाँ पर्यावरण को प्रदूषित करती है वहाँ अहिंसा से उनका संरक्षण होता है। पर्यावरण में जीव एवं अजीव दोनों का समावेश होता है। जीवों में पृथ्वी, जल, वायु एवं वनस्पति का भी ग्रहण होता है, जिनके शुद्ध रहने पर पर्यावरण शुद्ध रहता है, अत: पर्यावरण को बचाने के लिए भी हिंसा का त्याग अनिवार्य है। सबको जीने का अधिकार है, संवेदनशीलता के साथ पर्यावरण की रक्षा करणीय है। हिंसक समाज अनार्य की कोटि में आता है, अहिंसक समाज अनेक गुणों का आधान कर उन्नत समाज बनता है। अहिंसा से विश्व शान्ति भी सम्भव है। युद्धों पर विराम, पारस्परिक तनाव एवं संघर्षों का परिहार 'अहिंसा' के पालन से सम्भव है, जिसका सुफल है-विश्व शान्ति।

व्याख्यान के अन्त में प्रश्नोत्तर भी हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता भारतीय दार्शनिक परिषद् के सदस्य सचिव एवं विश्रुत दार्शनिक प्रो. सच्चिदानन्द मिश्र ने की। उन्होंने भगवान महावीर के अहिंसा सिद्धान्त को मानवजाति की शान्ति एवं समृद्धि के लिए आवश्यक बताया। व्याख्यान कार्यक्रम में भारतवर्ष के अनेक विश्वविद्यालयों के दर्शनशास्त्र विभागों के प्रोफेसर एवं शोधार्थी उपस्थित थे। *-डॉ. जयशंकरसिंह, लखनऊ*

संक्षिप्त समाचार

चेन्नई-शासुन जैन कॉलेज में जैनविद्या विभाग के शोध-प्रमुख डॉ. दिलीप धींग ने मद्रास विश्वविद्यालय में अपने वक्तव्य में 31 मार्च, 2023 को कहा कि चातुर्याम व्यवस्था में ब्रह्मचर्य को जोड़कर भगवान महावीर ने नारी स्वतन्त्रता और नारी समानता की दिशा में ऐतिहासिक कार्य किया। मद्रास विश्वविद्यालय के जैनविद्या विभाग की 'धनराज बैद जैन व्याख्यानमाला' में उन्होंने कहा कि भगवान महावीर ने चंदनबाला के हाथों पारणा करके 2600 वर्ष पूर्व ही दास प्रथा के विरुद्ध बिगुल बजा दिया था। जैनधर्म और नारी विषय पर बोलते हुए मुख्य वक्ता डॉ. धींग ने कहा कि जैन संघ की चार तीर्थ व्यवस्था में महिला को पुरुष के समान ही स्थान प्राप्त है।

कन्नकम्माछत्रम-कन्नकम्माछत्रम में शंकर नेत्रालय का आई कैंप श्री बुधमलजी कोठारी द्वारा रखा गया। जिसमें 100 रोगियों चेक अप हुआ और 70 रोगी नेत्र बिंदु ऑपरेशन के लिए नि:शुल्क चयनित हुए। आचार्यश्री की पुण्य तिथि पर यह आयोजन रखा गया। सभी रोगियों और डॉक्टर टीम की भोजन व्यवस्था श्री बुधमलजी कोठारी की ओर से रखी गई। यह प्रवृत्ति श्री बुधमलजी कोठारी हर माह कैंप लगवाकर कर रहे हैं।

बधाई

जयपुर- श्री अशोक कुमार जैन (हरसाना वाले) की प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं मुख्य वन्य जीव प्रतिपालक, जयपुर-राजस्थान के निजी सचिव से वरिष्ठ निजी सचिव के पद पर पदोन्नति हुई है। आप निजी सचिव संवर्ग संघ, राजस्थान वन-विभाग के अध्यक्ष हैं तथा आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (सिद्धान्त शाला) के पूर्व छात्र भी हैं। *-विमल कुमार जैन, जयपुर*

श्री हर्ष जैन

श्री अखिल जैन

श्री दिलीप जैन

जयपुर- श्री हर्ष जैन सुपौत्र श्री राजमलजी जैन सुपुत्र श्री विजेन्द्रजी -श्रीमती बीनाजी जैन (कुम्हारिया वाले) चौथ का बरवाड़ा अपने प्रथम प्रयास में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया में प्रोबेशनरी ऑफिसर चुने गए हैं।

जयपुर- श्री अखिल जैन सुपुत्र श्री राकेशकुमारजी सुपौत्र श्री भैरुलालजी जैन (कुस्तला वाले) ने हाल ही में कम्पनी सेक्रेटरी (CS) के पश्चात् कॉस्ट एण्ड मैनेजमेण्ट अकाउण्ट (CMA) की परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान के पूर्व छात्र हैं। *-अंकित जैन*

सवाईमाधोपुर- अखिल भारतीय पद्मावती युवा संघ के चुनाव में श्री दिलीपजी जैन (सिंगोर वाले) सवाईमाधोपुर अध्यक्ष पद पर, श्री अनिलजी जैन (करेला वाले) सवाईमाधोपुर महामन्त्री पद पर, श्री शैलेन्द्रजी जैन, कोटा कोषाध्यक्ष एवं श्री अंकितजी जैन इन्दौर संगठन मन्त्री के पद पर नियुक्त हुए। *-अनिल जैन*

श्रद्धाञ्जलि

जयपुर-अनन्य गुरुभक्त, धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री भागचन्दजी सेठ का 23 अप्रेल, 2023 को 80 वर्ष की वय में

देवलोकगमन हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। आप देव-गुरु-धर्म के प्रति पूर्ण समर्पित एवं सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी थे। आप श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ के विशिष्ट स्वाध्यायी रहे एवं कोविड पूर्व तक स्वाध्यायी बन पर्युषण सेवाएँ देते रहे। आपके परिवार से रत्नवंश में पूर्व में पूज्य श्री सुजानमलजी म.सा. दीक्षित हुए, वर्तमान में साध्वीप्रमुखा पूज्या महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. एवं सांसारिक भानेज तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. जिनशासन की अनमोल निधि हैं। लगभग 50 वर्षों से आप नियमित अष्टमी-चतुर्दशी को संवर-पौषध करते आ रहे थे एवं प्रतिदिन 5-7 सामायिक, स्वाध्याय, प्रतिक्रमण आदि करते रहे। आपने छोटी-बड़ी कई तपस्याएँ सम्पन्न की। आपका परिवार रत्नसंघ के समर्पित परिवारों में से एक है। आपकी धर्मसहायिका श्रीमती राजदुलारीजी सेठ ने स्थानीय श्राविका मण्डल के अध्यक्ष पद को गौरवान्वित किया है। आपके सुपुत्र श्री हेमेशजी हाँगकाँग में रहते हुए भी पूर्णतः धर्मध्यान से जुड़े हुए हैं और समय-समय पर संघ को अपनी सेवाएँ प्रदान करते रहते हैं। आपके सुपुत्र श्री अनंतजी सेठ ने स्थानीय युवक परिषद् के अध्यक्ष के रूप में अपनी महनीय सेवाओं से समाज को लाभान्वित किया एवं सतत सेवा सन्नद्ध हैं। श्री उपनीषजी सेठ सामाजिक एवं धार्मिक गतिविधियों में अग्रणी रहते हैं। आप अपने पीछे धर्मसहायिका, तीन पुत्र-पुत्रवधुओं, तीन पौत्र और तीन पौत्रियों सहित धर्म से संस्कारित परिवार छोड़कर गए हैं। *-विनयचन्द डागा, कार्याध्यक्ष*

बेंगलूरु-अनन्य गुरुभक्त, धर्मनिष्ठ सुश्रावक वीरपिता श्री पारसमलजी बोहरा का 26 मार्च, 2023 को सागारी

संथारापूर्वक देवलोकगमन हो गया। आपकी सभी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। स्वास्थ्य में प्रतिकूलता होने के बावजूद भी आपने आर्त्तध्यान न करते हुए जीवन के अन्तिम समय तक परिवारजनों को भी आर्त्तध्यान नहीं करने का निवेदन किया। आपकी धर्मसहायिका श्रीमती सरलादेवीजी, सुपुत्रियाँ मायाजी एवं जयवन्दनाजी का सहयोग आपको सदैव प्राप्त होता रहता था।

आपकी सांसारिक सुपुत्री व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म. सा. के रूप में जिनशासन की महती प्रभावना कर रही हैं। संघ द्वारा सञ्चालित गतिविधियों एवं प्रवृत्तियों में सम्पूर्ण बोहरा परिवार निष्ठापूर्वक जुड़ा हुआ है।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

बेंगलूरू-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती मधुजी मेहता का 26 मार्च, 2023 को देहावसान हो गया। आपकी सभी संत-सतियों के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म. सा. आदि ठाणा के बेंगलोर चातुर्मास तथा रत्नवंशीय सन्त-सतियों के बेंगलोर शेखेकाल विराजने पर आप सहित परिवारजनों ने दर्शन-वन्दन, प्रवचन श्रवण के साथ धर्मध्यान का अपूर्व लाभ प्राप्त किया। श्रीमती बीनाजी मेहता ने अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल में महासचिव एवं कार्याध्यक्ष दोनों पदों का दायित्व बखूबी निर्वहन किया। सन्त-सतीवृन्द की सेवा तथा स्वधर्मी भाई-बहनों के आतिथ्य सत्कार में सम्पूर्ण मेहता परिवार सदैव तत्पर रहता है।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

बेंगलूरू-अनन्य गुरुभक्त, धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती कांताबाई जी धर्मसहायिका श्री शांतिलाल जी डूँगरवाल का 16 अप्रेल, 2023 को सागारी संथारापूर्वक देवलोकगमन हो गया। आप संत-सतीवृंद की सेवा-भक्ति में सदैव तत्पर रहने के साथ त्याग-प्रत्याख्यान, तपस्या आदि करने में अग्रणी रहती थीं। आप एवं आपका परिवार संघ-सेवा और समाज-सेवा में अग्रणी रहा है। आपके धर्मसहायक एक अच्छे कवि, लेखक एवं वरिष्ठ स्वाध्यायी होने के साथ विरक्त भाई-बहनों एवं सन्त-सतियों के अध्यापन में तथा धार्मिक शिविरों में शिक्षक के रूप में अपनी महनीय सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। आदरणीय श्री चेतनप्रकाशजी डूँगरवाल ने सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष पद का दायित्व बखूबी निर्वहन किया तथा वर्तमान में गजेन्द्र निधि के ट्रस्टी के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। बेंगलोर चातुर्मास में आपके परिवार की महनीय सेवाएँ प्राप्त हुई हैं। *-धनपत सेठिया, महामन्त्री*

जबलपुर- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री देवराजजी सुपुत्र स्वर्गीय श्री किशनलाल जी टाटिया का 1 अप्रेल, 2023 को 100 वर्ष की वय में सागारी संथारापूर्वक देवलोकगमन हो गया। चारित्रनिष्ठ संत-सतियों पर आपकी अटूट श्रद्धा-भक्ति थीं। आप कई वर्षों से श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी श्रावक संघ, जबलपुर के अध्यक्ष रहे। 9 वर्ष की आयु में आपने पूज्य गुरुदेव श्री रतनचन्दजी म. सा. की प्रेरणा से प्रतिक्रमण कण्ठस्थ किया। आप 12 व्रतों के पोषक और रात्रिभोजन, जमीकंद, कुशील के त्यागी थे। प्रतिदिन प्रतिक्रमण, पौरुषी, 5-7 सामायिक करना दैनिक क्रिया में शामिल था । आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

सूरत- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री पारसमलजी मंडोत का 17 मार्च, 2023 को देहावसान हो गया। आप सभी सन्त-सतियों की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। आप सरल स्वभावी, सेवाभावी एवं उदारमना श्रावक थे।

इंदौर- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती सुगनीदेवीजी धर्मसहायिका स्व. श्री रामचन्द्रजी जैन का 28 मार्च, 2023 को 94 वर्ष की वय में संथारा पूर्वक देवलोकगमन हो गया। आपकी देव-गुरु-धर्म पर असीम आस्था थीं। आप सभी सन्त-सतियों की सेवा में अग्रणी रहती थीं। सामायिक-स्वाध्याय आपका नित्य क्रम था। आप धर्मपरायण, कर्त्तव्यनिष्ठ एवं उदारता आदि सद्गुणों से सम्पन्न थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं। *-पीयूष जैन, इन्दौर*

जोधपुर- धर्मनिष्ठ, संघसेवी सुश्रावक श्री जौहरीलालजी सुपुत्र स्व. श्री सोनराजजी डोसी (ब्यावर वाले), जोधपुर का 28 फरवरी, 2023 को देहावसान हो गया। आपकी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के चातुर्मास में आप भाइयों सहित परिवारजनों ने दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण के साथ धर्मध्यान का

अपूर्व लाभ प्राप्त किया। आप स्वयं ने संस्कारी जीवन व्यतीत करते हुए अपने पारिवारिकजनों को भी धार्मिक संस्कार देने का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाया, जिसके फलस्वरूप डोसी परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा, स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में सदैव अग्रणी है। आप नियमित पावटा स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में पधारकर सन्त-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन, प्रवचन श्रवण एवं पर्व पर विशेष धर्म-ध्यान करते थे तथा सेवा-धर्म की साधना में समर्पित भाव से सन्नद्ध रहते थे।

उपर्युक्त दिवगंत आत्माओं को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं सभी सम्बद्ध संस्थाओं के सदस्यों की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

रत्नसंघीय घोषित चातुर्मास

विक्रम सम्वत् 2080 सन् 2023 हेतु साधु-मर्यादा के समस्त आगारों के साथ वर्तमान की देश-प्रदेश की परिस्थिति के कारण कोई परिवर्तना करना पड़े, उस आगार के साथ कतिपय चातुर्मास स्वीकृत किए हैं, जिनका विवरण इस प्रकार है-

1. जिनशासन गौरव परम श्रद्धेय आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा
   जोधपुर (क्षेत्र का निर्णय बाद में, स्वास्थ्य सम्बन्धी आगार के साथ)
2. मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा — बिजयनगर-अजमेर (राजस्थान)
3. सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा — खेरली-अलवर (राजस्थान)
4. तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा — शिरपुर (महाराष्ट्र)
5. श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा — नागौर (राजस्थान)
6. साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. आदि ठाणा — प्रतापनगर-जयपुर (राजस्थान) सुखेसमाधे
7. विदुषी महासती श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. आदि ठाणा — अजमेर (राजस्थान) सकारण
8. व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकँवरजी म.सा. आदि ठाणा — जामोला-अजमेर (राजस्थान)
9. विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा — जंगमपुरा-इन्दौर (मध्यप्रदेश)
10. व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकँवरजी म.सा. आदि ठाणा — पुराना किशनगढ़-अजमेर
11. व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा — जोधपुर (राजस्थान) स्थान की घोषणा बाद में
12. व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा — काचीगुड़ा-हैदराबाद (तेलंगाना)
13. व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा — जोधपुर (राजस्थान) स्थान की घोषणा बाद में
14. व्याख्यात्री महासती श्री दर्शनलताजी म.सा. आदि ठाणा — मेड़तासिटी (राजस्थान)
15. व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा — शिरपुर (महाराष्ट्र)
16. व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा — भद्रावती (कर्नाटक)
17. व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा — थाँवला-अजमेर (राजस्थान)
18. व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा — नदबई (राजस्थान)
19. व्याख्यात्री महासती श्री पदमप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा — रामपुरा-कोटा (राजस्थान)
20. व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा — रालेगाँव-यवतमाल (महाराष्ट्र)
21. व्याख्यात्री महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा — पाली (राजस्थान)
22. व्याख्यात्री महासती श्री शिक्षाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा — बजरिया-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
    नगरपालिका क्षेत्र खुला रखकर रत्न हितैषी श्रावक संघ शाखा बजरिया को स्वीकृत
23. व्याख्यात्री महासती श्री सरोजश्रीजी म.सा. आदि ठाणा — प्रतापगढ़ (राजस्थान)

10 मई 2023
जिनवाणी 90
ISSN 2249-2011

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

16400 श्री अभिषेकजी छाजेड़, जयपुर (राजस्थान)
16401 श्री गौतमजी मुणोत, बुलढ़ाणा (महाराष्ट्र)
16402 श्रीमती अन्तिमाजी जैन, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
16403 श्री आर. प्रेमचन्दजी कोठारी, चेन्नई (तमिलनाडु)

जिनवाणी प्रकाशन योजना हेतु साभार

100000/-मैसर्स कल्पतरु ग्लोबल एलोय प्राइवेट लिमिटेड द्वारा : श्री जी. गणपतराजजी, हेमन्तजी, उपेन्द्र कुमारजी बाघमार, चेन्नई-कोयम्बटूर

जिनवाणी मासिक पत्रिका हेतु साभार

108000/- श्री सुगनचन्दजी छाजेड़, जोधपुर, सहयोगार्थ।
50000/-जी.आई. ई. गोल्ड क्रिएशन प्राइवेट लिमिटेड़, जयपुर।
5100/- श्री धनरूपमलजी, श्रीमती पारसदेवीजी हीरावत, जयपुर, सुपौत्र चि. यशजी सुपुत्र श्री दिनेशजी-श्रीमती हेमलताजी हीरावत का 12 फरवरी 2023 को शुभविवाह सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।
2100/- सौ. प्रेमलताजी-श्री सोहनलालजी बोथरा, भोपालगढ़-जलगाँव, सौ. प्रियंकाजी धर्मपत्नी श्री अर्पितजी बोथरा की अठाई की तपस्या सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।
2100/- श्री मन्जूजी जैन धर्मसहायिका श्री मोहनलालजी जैन सर्राफ, सवाईमाधोपुर, सहयोगार्थ।
1101/- श्री सुशीलकुमारजी जैन, मालपुरा, टोंक, धर्मसहायिका श्रीमती सूरजकुमारीजी गोखरू के वर्षीतप सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।
1100/- श्री विमलकुमारजी, रिषभकुमारजी, विनोदकुमारजी, हेमन्तकुमारजी जैन, उनियारा-कोटा, श्रीमती सन्तरादेवीजी जैन के वर्षीतप सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।
1100/- श्री राजेन्द्रजी कविताजी चोरड़िया, बेंगलोर, गुरुचरण सन्निधि में सपरिवार साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने पर।
1100/- श्री प्रकाशकुमारजी प्रेमलताजी मेहता (भोपालगढ़ वाले) उमरगाँव रोड़, गुरुचरण सन्निधि में सपरिवार साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने पर।
1100/- श्री अमोलकचन्दजी जैन, सवाईमाधोपुर, सुपुत्र चि. रजतजी का शुभविवाह सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।
1100/- श्री महेन्द्रजी, ललितजी गांग, सूरत, चि. विहानजी एवं आरहुजी सुपुत्र श्री अभिषेकजी गांग के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में।
1100/- श्री जगदीशप्रसादजी, नरेन्द्रकुमारजी जैन, सिंगोर वाले, इन्दौर, चि. आनन्दजी का शुभविवाह सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।
1100/- श्री विजयकुमारजी जैन, नवसारी, चि. रजतजी का शुभविवाह सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।
1100/- श्री पुरुषोत्तमजी हुकमचन्दजी जैन, आदर्शनगर, सवाईमाधोपुर, चि. गौरवजी का 30 मार्च को शुभविवाह सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।
1100/- श्री रमेशजी, सुरेशजी, नरेन्द्रजी, हेमराजजी, निर्मलजी जैन, इन्दौर, पूज्या मातुश्री श्रीमती सुगनीदेवीजी जैन का 28 मार्च 2023 को देवलोकगमन हो जाने की पुण्यस्मृति में।

जिनवाणी पर अभिमत

श्री महावीर प्रसाद जैन

मार्च, 2023 की जिनवाणी को पढ़ा तो मन को परमहर्ष एवं प्रशंसा हुई। सन्त-भगवन्तों के लेख तो अत्यन्त उमयोगी होते ही हैं, साथ में प्रबुद्ध लेखकों द्वारा लिखित मन को अत्यन्त प्रसन्नचित्त करने वाले होते हैं। इस अंक में डॉ. दिलीप धींग, श्री त्रिलोक चन्द जैन, अभय कुमार जैन, प्रोफेसर रतन जैन आदि लेखकों के लेख मन की गहराइयों को छूने वाले तथा हृदय स्पर्शी लगे। सभी लेखकों का बहुत आभार एवं धन्यवाद। रोग के क्षणों में समाधि कैसे रखें? यह लेख मुझे बहुत पसन्द आया। *-कुण्डेरा, सवाईमाधोपुर*

10 मई 2023
जिनवाणी 91
ISSN 2249-2011

बाल-जिनवाणी

प्रतिमाह बाल-जिनवाणी के अंक पर आधारित प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले अधिकतम 20 वर्ष की आयु के श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को सुगनचन्द प्रेमकँवर रांका चेरिटेबल ट्रस्ट-अजमेर द्वारा श्री माणकचन्दजी, राजेन्द्र कुमारजी, सुनीलकुमारजी, नीरजकुमारजी, पंकजकुमारजी, रौनककुमारजी, नमनजी, सम्यक्जी, क्षितिजजी रांका, अजमेर की ओर से पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-600 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-400 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 300 रुपये तथा 200 रुपये के तीन सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है। उत्तर प्रदाता अपने नाम, पते, आयु तथा मोबाइल नम्बर के साथ बैंक विवरण-बैंक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड आदि का भी उल्लेख करें।

मानव भव की दुर्लभता

संकलित

किसी गाँव में एक बहुत गरीब युवक रहता था। गरीबी दूर कैसे हो, इस बारे में वह प्रतिदिन विचार करता रहता था। एक बार उसने परदेश जाकर पैसा कमाने की सोची। जिस समय वह बाहर जा रहा था उसी समय एक संन्यासी उसके घर के द्वार के सामने आ गया।

पैसा कमाने हेतु जाने से पहले संन्यासी का आशीर्वाद मिल जाये, इसके लिए उसने संन्यासी से कहा-''मेरी झोंपड़ी सोने की बन जाये, ऐसा आशीर्वाद आप मुझे प्रदान करें।''

संन्यासी बोला-''युवक! मेरे पास ऐसा कोई आशीर्वाद नहीं है, लेकिन यह पत्थर अपने पास रख। इससे तेरा दु:ख मिट जायेगा।''

युवक ने उस पत्थर को अपनी जेब में डाल लिया और कमाने के लिए परदेश निकल गया।

शहर जाकर उसने धन कमाने का बहुत प्रयत्न किया, लेकिन उसे सफलता बिल्कुल नहीं मिली। वह पत्थर तो उसके साथ था, लेकिन उसका नसीब उससे सौ क़दम दूर रहता था। बहुत मेहनत करने पर भी उसके पुण्य कम होने के कारण वह शहर में पैसा नहीं कमा सका।

बारह वर्ष तक असफलता मिलने के बाद वह वापस घर आ गया। उस युवक का पुत्र अपने पिता के पास आया और बोला-''आप शहर से मेरे लिए क्या लाये हैं?''

कमाने के लिए गया युवक अब प्रौढ़ हो चुका था। उसने अपनी जेब में से पत्थर निकालकर लोहे की टेबल पर रखा और अपने पुत्र से बोला-''पत्थर लेकर गया था और वापस पत्थर लेकर आया हूँ।'' लेकिन इतना कहने के साथ ही वहाँ तो एक चमत्कार हो गया। पूरी टेबल सोने की बन गयी। युवक जो पत्थर लेकर घूम रहा था वह वास्तव में पारसमणि थी। लेकिन उसको इस बात का ज्ञान ही नहीं था। बारह वर्ष तक पैसों के लिए दु:ख सहन करता रहा, लेकिन सुख तो उसकी जेब में ही था, यह बात उसको मालूम ही नहीं पड़ी।

वह पेट भरकर खाता नहीं था, पीता नहीं था, शहर में मारा-मारा फिरता था। पूरी तरह परेशान रहता था, लेकिन कभी भी जेब में पड़े पारसमणि को ध्यान से नहीं देखा। मैं कितना मूर्ख था ऐसा सोच-सोचकर वह अफ़सोस करने लगा।

यह मानव भव पारसमणि के समान ही है। यदि जीवन में धर्म है तो उसमें मोक्ष का सुख देने की ताकत है।

सुख तो हमारे पास ही है, लेकिन हम उसकी जानकारी के अभाव में चार गति में सुख ढूँढ़ने के लिए निकल पड़े हैं। युवक तो जंगल में और शहर में भटकता रहा, लेकिन हम तो जन्म-मरण करके चार गति रूपी जंगल में भटक रहे हैं।

-'आओ जैनिज्म सीखें-2' से साभार

पुराने जमाने के सीसीटीवी

श्रीमती निधि दिनेश लोढ़ा

लिपि ने अपनी मम्मी से कहा-''माँ, कितना अच्छा है कि हमारे घर में सीसीटीवी कैमरा है। हम बाहर जाते हैं तो भी पता चल जाता है कि घर में कौन आया था? कितने बजे आया था? किसने अपना काम समय पर किया है?''

लिपि की मम्मी प्रिया कहने लगी-''इस जमाने में तो मशीनी सीसीटीवी है। बिजली चली जाय तो ये काम नहीं करते। हमारे जमाने में तो चलते-फिरते सीसीटीवी कैमरे होते थे, जो न केवल क्या चल रहा है, की जानकारी देते थे, बल्कि सही शिक्षा भी देते थे।''

लिपि-''कैसे?''

प्रिया-''हम कलकत्ता की एक सोसायटी में रहते थे। रोज स्कूल से घर आते समय कभी कुल्फी तो कभी गुड़िया के बाल ले आते थे, लेकिन घर पहुँचने से पहले ही खा पीकर खत्म कर देते थे। हम ऊपर चौथी मञ्ज़िल पर रहते थे और पहली मञ्ज़िल पर एक बंगाली बुजुर्ग दम्पत्ती रहते थे। उन्होंने हमें दो-तीन बार गुड़िया के बाल (Candy floss) खाते देख लिया, फिर हमें रोककर कहा कि ये अच्छी चीज नहीं होती है। इसे मत खाया करो और हमसे उन्हें कचरे के डिब्बे में डलवा दिया। उन्होंने अपने घर पर दूध रड़ाकर कुल्फी जमा रखी थी, वही हम बच्चों को खाने को दी।''

वह न सिर्फ हमारे, बल्कि पूरी बिल्डिंग के दादा-दादी बन गये। बालकनी में बैठे रहते। नीचे खेलते वक्त किसी को चोट लग जाती तो ऊपर से तुरन्त हल्दी लाकर लगा देते। पहले न मोबाइल फोन थे और न ही सीसीटीवी कैमरे, फिर भी बड़े बुजुर्गों की पारखी आँखों से कुछ नहीं छुपता था और समय पर अच्छी शिक्षा तथा उनका ढेर सारा प्यार भी मिल जाता था। तकनीकी ज्ञान से जीवन आसान जरूर हुआ है, लेकिन संवेदनाएँ शायद कम हुईं हैं। अब लोग दूसरों को रोकते-टोकते नहीं हैं, वे सोचते हैं कि उनकी ज़िन्दगी है, वे जानें, लेकिन बुजुर्गों को उनका सम्मान फिर मिलेगा तो आज भी वे सुरक्षा कवच बन कर खड़े रहेंगे।

-बी 2402, इण्डियाबुल्स ब्लू, डॉ. ई मोस रोड़, वर्ली नाका, मुम्बई-400018 (महाराष्ट्र)

स्मार्ट फोन या मीठा ज़हर

श्री शुभम बोहरा

आजकल बहुत छोटी उम्र में ही बच्चों के हाथ में स्मार्टफोन देखने को मिल जाते हैं। माता-पिता इस पर गर्व भी करते हैं कि उनके बच्चे स्मार्टफोन पर बहुत कुछ सीख गए हैं, मगर विशेषज्ञ कहते हैं कि बच्चों को बहुत छोटी उम्र में स्मार्टफोन नहीं दिया जाना चाहिए। यह उनके सीखने की क्षमता पर बहुत ही बुरा असर डाल सकता है।

बच्चे स्मार्टफोन पर अनेक फंक्शन चलाकर बताते हैं तो माता-पिता गर्व करते हैं, लेकिन उन्हें सावधान रहने की भी जरूरत है। जानिए क्यों?

बच्चों के लिए असल दुनिया से सम्पर्क बहुत ज़रूरी है, क्योंकि वे सीखते उसी से हैं। उनमें भाषा-विवेक और लोगों से व्यवहार निभाने की कला असल दोस्तों के बीच खेलने से ही आती है, न कि स्मार्टफोन से। बच्चों को चाहें तो यह सिखा सकते हैं कि वे तितली के फोटो लेकर उसके बारे में स्मार्टफोन की मदद से अधिक जानकारी प्राप्त करें। हालाँकि बच्चे कितना समय स्मार्टफोन पर बिताएँ, इसे लेकर सावधानी भी जरूरी है।

स्कूली बच्चों के लिए स्मार्टफोन या टैबलेट सीखने का एक अच्छा जरिया भी बन सकते हैं। स्मार्टफोन उसे किताबों से आगे बढ़ना भी सिखा सकते हैं और अपने ज्ञान का विस्तार करना भी। टेक्नोलॉजी की मदद से वे जो सीख रहे हैं, उसमें नये दौर की चीजें

भी जोड़ सकते हैं। मगर टेक्नोलॉजी बच्चों पर हावी न हो, इसका ध्यान रखना होगा।

जब बच्चे स्मार्टफोन या टैबलेट का उपयोग करें तो माता-पिता को गाइड की भूमिका निभाना चाहिए। उन्हें ध्यान रखना चाहिए कि बच्चे ऑनलाइन अधिक समय मोबाइल पर न बितायें। उन्हें इस तरह के नियम लागू करना चाहिए कि स्मार्टफोन रात को सोते समय देखने की आदत हरगिज न हो। स्मार्टफोन पर बच्चे जो भी कर रहे हों उसे माता-पिता के साथ साझा करने को भी कहना चाहिए। बच्चे जब गेम्स खेल रहे हैं या नए एप डाउनलोड कर रहे हैं तो उन्हें यह बात समझानी चाहिए की गेम और स्मार्ट फोन का उपयोग अधिक करने से बच्चों का आई क्यू लेवल कम होता है, इसलिए इसका उपयोग कम से कम करें।

स्मार्टफोन या टैबलेट का उपयोग कितना करना है यह बच्चे माता-पिता से भी सीखते हैं तो उन्हें बच्चों के सामने मिसाल भी पेश करना चाहिए कि कितनी देर इनका उपयोग करना है।

-नयनतारा गेस्ट हाउस, जलगाँव-425001 (महाराष्ट्र)

प्रतिक्रमण-प्रश्नोत्तर

प्र. 1- आगम किसे कहते हैं?

उत्तर- जो आप्त अर्थात् सर्वज्ञों की वाणी हो, उसे आगम कहते हैं। आगम आप्त पुरुषों द्वारा कथित, गणधरों द्वारा ग्रथित तथा मुनियों द्वारा आचरित होते हैं।

प्र. 2- आगम कितने प्रकार के तथा कौन-कौन से हैं?

उत्तर- आगम तीन प्रकार के हैं-(1) सुत्तागमे (सूत्रागम), 2. अत्थागमे (अर्थागम) और 3. तदुभयागमे (तदुभयागम)।

-'श्रावक सामायिक प्रतिक्रमणसूत्र' पुस्तक से

Question Answer

Shri Dulichand Jain

Q 1. How does Jaina religion protect the environment?

Ans. Yes, Jainism has given utmost importance to the protection of our environment. The principle of *parasparopagraho jivānāma*, a Jaina aphorism from the *Tattvārtha Sūtra*, translates as, "All life is bound together by mutual support and interdependence." It means that all life-bearing agencies of nature like earth, water, fire and air, as well as vegetation, animals and humans are interdependent creatures.

Worms, insects and animals help to keep the ecological balance. We cannot survive unless we offer protection to all of them.

Hence, Jainism teaches us to use minimum water, keep the air clean, not cut trees, and not harm the smaller creatures. By following these rules, we can continue to protect our environment.

-Chennai (Tamilnadu)

The real meaning of peace

Shri Shrikant Gupta

Once there was a king, who offered a prize to the artist who would paint the best picture of peace. Many artists tried. The king looked at all the pictures. But there were only two he really liked, and he had to choose between them.

Once Picture was of a calm lake. The lake was a perfect mirror for peaceful towering mountains all around it. Overhead was a blue sky with fluffy white clouds.

All who saw this picture thought that it was a perfect picture of peace.

The other picture had mountains, too. But these were rugged and bare. Above was an angry sky, from which rain fell and in which lightning played. Down the side of the mountain tumbled a foaming waterfall. This did not look peaceful at all.

But when the king looked closely, he saw behind the waterfall a tiny bush growing in a crack in the rock. In the bush a mother bird had built her nest. There, in the midst of the

rush of angry water, sat the mother bird on her nest-in perfect peace.

Which picture do you think won the prize? The king chose the second picture. Do you know why?

"Because", explained the king, "peace does not mean to be in a place where there is no noise, trouble, or hard work. Peace means to be in ths midst of all those things and still be calm in your heart. That is the real meaning of peace."

-Jodhpur (Rajasthan)

समय बड़ा बलवान

श्री दिलीप गाँधी

अहं कभी न कीजिए, समय बड़ा बलवान।
हुए रंक राजा कई, निर्धन हुए धनवान।।
समय की हो क़द्र सदा, समय के चलो साथ।
कुदरत चले समय संग, अपनी क्या औक़ात।।
समय अनुसार जीत मिले, समय से मिले हार।
खूबी खामी पर सदा, समय का ही अधिकार।।
न्याय करता समय सदा, करें ना कभी माफ़।
जितनी उसकी क़दर करें, उतना मिला इंसाफ़।।
मनुष्य जीवन दुर्लभ यहाँ, समय करें ना व्यर्थ।
सुखी-समृद्ध सफल जीवन, समय का सही अर्थ।।
समय भला गूँगा नहीं, रहता है बस मौन।
वक्त पर ही बोलता, किसका कब है कौन?
समय हो पक्ष में अगर, नहीं चाहे कोई गवाह।
समय अगर न साथ दे, सब हो जाता तबाह।।

-117, कैलाशपुरी, निम्बाहेड़ा रोड़, चित्तौड़गढ़-312001 (राजस्थान)

Just Think

Rajul Chopra

Before you Speak : Listen
Before you Write : Think
Before you Spend : Earn
Before you Invest : Investigate
Before you Criticize : Wait
Before you Quit : Try
Before you Retire : Save

-D/o. Sh. Sunil Chopra, Shiv Shakti Nagar, Jodhpur (Rajasthan)

दु:खियों की सेवा करके तुम

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

(तर्ज :: दुनिया में देव अनेकों हैं.....)

दु:खियों की सेवा करके तुम, अपने जीवन को धन्य करो,
तुम्हें मिला पुण्य से वैभव है, उसका सच्चा उपयोग करो।।

सञ्चित शुभ कर्मों से ही तो, जीवन का बाग महकता है,
सन्तान मिले आज्ञाकारी, घर आँगन भी खूब चहकता है।
साधर्मी को भी सम्भालो तुम, शुभ कारज में मत देर करो,
दु:खियों की सेवा करके तुम....।। 1 ।।

माता-पिता बूढ़े होंगे, उनकी भी सेवा करना है,
पाल-पोष कर बड़ा किया, तुम्हें अपना फ़र्ज निभाना है।
उनके दिल को न दु:खाना तुम, चरणों में उनके शीश धरो,
दु:खियों की सेवा करके तुम....।। 2 ।।

न छत है, न रोटी, कपड़ा, फुटपाथों पर ही डेरा है,
नहीं खुशियों की है कोई किरण, जीवन में सिर्फ अन्धेरा है।
समझो उनके हालातों को, उनकी पीड़ा को दूर करो,
दु:खियों की सेवा करके तुम....।। 3 ।।

पशु-पक्षी भी हैं डरे हुए, तुम्हें उनकी जान बचानी है,
जो घात लगाए बैठे हैं, वे उनके ही तो शिकारी हैं।
जो जीव-भक्षी हैं बने हुए, उनके मन करुणा भाव भरो,
दु:खियों की सेवा करके तुम....।। 4 ।।

मत व्यर्थ उड़ाओ पैसों को, आडम्बर और दिखावे में,
क्यों धन का अपव्यय करते हो, झूठी शौहरत को पाने में।
पुण्यवानी इससे घटती है, कुछ सोचो और विचार करो,
दु:खियों की सेवा करके तुम....।। 5 ।।

क्या लेकर आए थे यहाँ पर, क्या साथ में लेकर जाएँगे,
कोठी, बंगला, सब ठाट-बाट, सब यहीं पड़े रह जाएँगे।
पुण्य-पाप ही साथ में जाएगा, तुम पुण्य का भाता तैयार करो,
दु:खियों की सेवा करके तुम....।। 6 ।।

-जनता साड़ी सेण्टर, फरिश्ता कॉम्पलेक्स, दुर्ग

10 मई 2023
जिनवाणी 95
ISSN 2249-2011

बाल-स्तम्भ

सीख

श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराणा

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 जून, 2023 तक जिनवाणी सम्पादकीय कार्यालय, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपना नाम, आयु, मोबाइल नम्बर तथा पूर्ण पते के साथ बैंक विवरण-बैंक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड इत्यादि का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार-200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

सुखी (पत्नी)-''मैं सामने वाली स्कूल में चतुर्थ श्रेणि कर्मचारी की नौकरी कर लूँ ताकि घर का खर्चा आसानी से चल जाये।''

राजूराम (पति)-''सुखी! स्कूल में काम अधिक रहता है, समय भी अधिक देना पड़ता है। सुनील और नानू की देखभाल ठीक से नहीं हो पाएगी।''

सुखी-''तीन-चार घरों में झाड़ू-पोंछा-बर्तन माँजने का काम कर लूँ।''

राजूराम-''मेरी पत्नी बर्तन साफ़ करने का काम नहीं करेगी, यह काम हल्का है।''

सुखी-''काम हल्का-भारी नहीं होता है। परिश्रम करके आय लेना अच्छा काम होता है, पेट भर खाना तो आराम से खाएँगे।''

राजूराम-''ठीक है।''

राजूराम सब्जी बेचने का काम करता था। ठेले पर बची सब्जी घर लाकर देता था। लेकिन कमाई का एक पैसा भी घर लाकर नहीं देता था। सुखी बड़ी कठिनाई से घर चलाती थी। हर महीने कहीं से पैसे उधार लाती और अगले महीने में चुका देती थी। व्यवहार कुशल थी, वचन की पक्की थी। फरवरी माह में दोनों बच्चों का स्कूल की पढ़ाई का शुल्क जमा करवाना था। उसने अपने पति से कहा-''दोनों बच्चों का परीक्षा शुल्क जमा करवाना है, मुझे रुपये दीजिए।''

राजूराम-''घर का खर्च तू ही चला। मैं तुझे कमाई नहीं दूँगा। मैं तो अपनी आय जमा करता हूँ ताकि आवश्यकता पड़ने पर जमा राशि काम आए।''

सुखी को अपने पति के मदिरा-पान की भनक तो हो गई थी, पर क्या करे। प्राय: पैसों के बारे में कहासुनी हुआ करती थी।

उसका लड़का सुनील दसवीं कक्षा में पढ़ता था। वह अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होता था। उसे माता-पिता की खटपट अच्छी नहीं लगती थी। उसकी कक्षा में सूचना मिली कि जिन-जिन बच्चों ने परीक्षा शुल्क जमा नहीं करवाया है उन्हें परीक्षा प्रवेश-पत्र नहीं मिलेगा। सुनील ने घर आकर अपनी माता को यह सूचना बता दी। सुखी के पास इतनी जमा राशि नहीं थी कि शुल्क जमा करवा दें। वह अपनी पड़ोसन सौमी से परीक्षा शुल्क के रुपये ले आई। सौमी ने सुखी से कहा था कि होली के पहले रुपये लौटा देना। मुझे अपनी बेटी के ससुराल मिठाई, नमकीन, फल आदि भेजने हैं। सुखी ने उसी दिन दो घर का काम और ले लिया और पैसे गुल्लक में जमा करती गई तथा गुल्लक छिपा कर रख दिया। क्योंकि उसे पैसे इकट्ठे होते ही सौमी को देने थे।

होली के पहले राजूराम ने सुखी से कहा-''तूने

जो पैसे इकट्ठे किये हैं मुझे दे दो। मैं बच्चों के कपड़े, मिठाई आदि लाऊँगा।''

सुखी–''कपड़े, मिठाई जहाँ मैं काम करती हूँ, वहाँ से मिल जाएँगे। ये रुपये सौमी को देने हैं। मैं बच्चों का शुल्क जमा करवाने के लिए लायी थी। आज ही रुपये लौटाने हैं, वह पार्वती की ससुराल भेंट भेजेगी।''

राजूराम–''पैसे तो तुझे देने ही होंगे।''

सुखी–''मैंने दो घर का काम अधिक करके रुपये इकट्ठे किये। क्योंकि सौमी को रुपये लौटाने का वादा किया हुआ है। सौमी कितनी अच्छी है कि समय पड़ने पर हमारे काम आती है।''

राजूराम–''ये बहाने रहने दे। मैंने रुपये गुल्लक में डालते देखे हैं। तू खुशी-खुशी दे दे अन्यथा मैं स्वयं उसे फोड़ कर ले लूँगा। मिट्टी का गुल्लक एक सैकेण्ड में फूट जाएगा।''

सुखी–''सुनील के पापा मैं हाथ जोड़ती हूँ ये रुपये न लो, मेरे मान-सम्मान का प्रश्न है। मेरा वादा झूठा हो जाएगा।''

राजूराम–''तेरा मान-सम्मान भाड़ में जाए, मुझे मधुशाला जाने और जुआँ खेलने के लिए पैसे चाहिए।'' राजूराम ढूँढ़-ढाँढ़ कर गुल्लक ले आया और फोड़ने वाला ही था कि सुनील ने पिता का हाथ पकड़ लिया और कहने लगा-''माँ की खून-पसीने की कमाई है, इसे मत लो।''

राजूराम–''तू बीच में बोलने वाला कौन होता है?'' अपना हाथ छुड़ाना चाहा, पर छुड़ा नहीं सका। उसने दूसरे हाथ से बच्चे को जोर से धक्का दिया। सुनील दीवार से टक्कर खाकर गिर गया। सिर में चोट आ गई और खून बहने लगा।

सुखी ने सुनील को उठाया। मसालदानी से हल्दी-पाउडर लाकर सुनील के घाव पर लगा दिया। रक्त बहना बन्द हो गया।

सुखी अन्दर से सूख गई। हाथ मलने लगी। सौमी को पैसे देने हैं कहाँ से लाऊँ। मैं उसे मुँह दिखाने के लायक ही नहीं रही। उसे क्या उत्तर दूँगी। हे ईश्वर! मैं क्या करूँ यह सोचकर जोर-जोर से रोने लगी।

सुनील–''माँ रो मत, कुछ उपाय निकालेंगे।''

सुखी–''ऐसे समय में हमारी सहायता कौन करेगा? होली पर्व पर सभी को पैसों की आवश्यकता रहती है। मैं स्वामिनी से अग्रिम पारिश्रमिक लेकर आऊँगी।''

सुनील बहुत चिन्तित था, क्या किया जाय। उसे कुछ समझ नहीं आया। बेटे को बेचैन देख सुखी ने बच्चे के गाल पर हाथ फेर कर प्यार किया। आगे जब तू बड़ा हो जाएगा, कमाने लग जाएगा तब घर की परिस्थिति बदल जाएगी।

राजूराम पत्नी से लड़-झगड़ कर पैसे लेकर अपने मित्रों सहित मधुशाला की ओर चला। रास्ते में माँगू नाम का एक बच्चा जूते के पॉलिश की डिबिया, ब्रश और कुछ पुराने कपड़े लेकर बैठा था। बच्चा मासूम और सलौना था। लम्बी नाक और बड़ी-बड़ी आँखों से चेहरा खिला हुआ था। वह राहगीरों को आवाज दे रहा था-''बाबूजी! सस्ती और चमाचम पॉलिश करवाइए।'' राहगीरों के सामने जाकर भी विनति करता था। वह राजूराम की मित्र-मण्डली के सामने जाकर मृदु भाषा में विनति करने लगा। मित्र मण्डली ने बच्चे की विनति पर ध्यान नहीं दिया। वह पुन: उनके सामने जाकर विनति करने लगा-''बाबूजी! पॉलिश करवा लीजिए। मुझे परीक्षा शुल्क जमा करवाना है।''

राजूराम ने बच्चे से कहा-''हम लोग तो मदिरा-पान करने जा रहे हैं। मदिरा पीकर, जुआ खेलकर पैसे कमाएँगे। हम शौक-मौज करेंगे।''

बच्चा–''बाबूजी! आप लोग जो काम करने जा रहे हैं, वहाँ तो पैसों का दुरुपयोग है। मेरे पिताजी भी खूब शराब पीते थे, इसलिये जल्दी चल बसे।''

राजूराम ने बच्चे को दूर किया और बोला-''तू कुछ नहीं समझता है, हमें तो मदिरालय में स्वर्गीय आनन्द मिलता है।'' राजूराम ने बच्चे को हाथ से दूर

किया तो बच्चा दूर नहीं हुआ। जबरदस्ती हटाना चाहा तो वह धड़ाम से नीचे गिर गया। उसके ललाट पर चोट आ गई और रक्त से मुँह भर गया। उससे उठा नहीं गया और वह रोने लगा। बच्चे को गिरा हुआ और मुँह खून से लथपथ हुआ देख भीड़ इकट्ठी हो गई। लोगों ने राजूराम को पकड़ कर कहा-''तुमने बच्चे को धक्का क्यों मारा? सच बता हम पुलिस केस कर देंगे।''

राजूराम-''मैं सच बोल रहा हूँ। मैंने धक्का नहीं दिया।''

इतने में भीड़ देखकर पुलिस आ गई और राजूराम को पकड़ लिया। पुलिस बोली-''सच बोल इस नन्हें बच्चे को धक्का क्यों मारा? तुझे थाने में ले जाकर पिटाई करवा कर जेल की हवा खिलाऊँगा।''

माँगू-''पुलिस साहबजी! इन्होंने मुझे नहीं गिराया। मैंने इनसे बार-बार आग्रह किया कि आप लोग पॉलिश करवा लीजिए। मुझे नवीं कक्षा का परीक्षा शुल्क जमा करवाना है। इन्होंने मुझे दूर किया; मैं पत्थर से ठोकर खाकर गिर गया। इन्हें छोड़ दीजिए इसमें इनका दोष नहीं है।''

माँगू की यह बात सुनकर राजूराम बहुत शर्मिन्दा हुआ, उसने माँगू से माफ़ी माँगी और कभी शराब न पीने का संकल्प किया। अब उसकी आँखें खुल गई थी, घर जाकर उसने पत्नी एवं बेटे से भी माफ़ी माँगकर अपनी करनी का पश्चात्ताप किया।

-ई-123, नेहरू पार्क, जोधपुर (राज.)

प्र. 1 राजूराम ने अपनी पत्नी को कहीं कार्य करने हेतु क्यों मना किया?

प्र. 2 सुखी किस चिन्ता से पैसे इकट्ठे कर रही थी?

प्र. 3 सुनील को अपने पिता पर गुस्सा क्यों आया?

प्र. 4 माँगू ने पुलिस को राजूराम के विषय में सच क्यों नहीं बताया?

प्र. 5 प्रस्तुत कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

प्र. 6 प्रस्तुत कहानी से कोई पाँच प्रत्यय युक्त शब्द छाँटकर उनसे मूल शब्द और प्रत्यय अलग कीजिए।

बाल-स्तम्भ [मार्च-2023] का परिणाम

जिनवाणी के मार्च-2023 के अंक में बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत 'निराशा' के प्रश्नों के उत्तर जिन बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, वे धन्यवाद के पात्र हैं। पूर्णांक 25 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	रूपमाला जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	24
द्वितीय पुरस्कार-300/-	अरिष्ट कोठारी, अजमेर (राजस्थान)	23
तृतीय पुरस्कार- 200/-	तेजस जैन, अलीगढ़-रामपुरा (राजस्थान)	22
सान्त्वना पुरस्कार (5) - 150/-	विशाल सिंघवी, जोधपुर (राजस्थान)	21
	नमन श्रेणिक छाजेड़, नाशिक (महाराष्ट्र)	21
	विदित जैन, जयपुर (राजस्थान)	21
	अमम जैन, जयपुर (राजस्थान)	21
	प्रेक्षा जैन, केकड़ी (राजस्थान)	21

बाल-जिनवाणी अप्रेल, 2023 के अंक से प्रश्न (अन्तिम तिथि 15 जून, 2023)

प्र. 1. भगवान महावीर ने ग्वाले को कोई जवाब क्यों नहीं दिया?
प्र. 2. भगवान महावीर ने इन्द्र से सहायता लेने हेतु क्यों मना कर दिया?
प्र. 3. राजा भोज किस चमत्कार से अत्यधिक प्रभावित हुए?
प्र. 4. जैन साधु चमत्कार क्यों नहीं दिखाते हैं?
प्र. 5. अकल्पनीय अकरणीय से किस तरह भिन्न है? स्पष्ट कीजिए।
प्र. 6. हमें समय का सदुपयोग क्यों करना चाहिए?
प्र. 7. 'ऊँचा है आदर्श' कविता में कवि ने भगवान महावीर की क्या विशेषताएँ बताई हैं?
प्र. 8. हम अपने नाम से स्वर्णिम इतिहास कैसे बना सकते हैं?
प्र. 9. What lesson do we get from story of Kamalsen?
प्र. 10. Make a sentence from the given words : Ahimsā, Inspires, Virtue and Wisdom.

बाल-जिनवाणी [फरवरी-2023] का परिणाम

जिनवाणी के फरवरी-2023 के अंक की बाल-जिनवाणी पर आधृत प्रश्नों के उत्तरदाता बालक-बालिकाओं का परिणाम इस प्रकार है। पूर्णांक 40 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-600/-	उषा पी. कोठारी, धुलिया (महाराष्ट्र)	39
द्वितीय पुरस्कार-400/-	राजुल जैन, जोधपुर (राजस्थान)	38
तृतीय पुरस्कार- 300/-	सुहानी सुराणा, अजमेर (राजस्थान)	37
सान्त्वना पुरस्कार (3)- 200/-	प्रणव भण्डारी, जोधपुर (राजस्थान)	36
	काजल जैन, जयपुर (राजस्थान)	36
	कविश जैन, चौथ का बरवाड़ा (राजस्थान)	36

बाल-जिनवाणी, बाल-स्तम्भ के पाठक ध्यान दें

बाल-जिनवाणी एवं बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रत्येक अंक में दिए जा रहे प्रश्नों के उत्तर प्रदाताओं से निवेदन है कि वे अपना नाम, पूर्ण पता, मोबाइल नम्बर, बैंक विवरण-(खाता संख्या, आई.एफ.एस.सी. कोड, बैंक का नाम इत्यादि) भी साथ में स्पष्ट एवं साफ अक्षरों में लिखकर भिजवाने का कष्ट करें ताकि आपका पुरस्कार उचित समय पर आपको प्रदान किया जा सके। जिन्हें अब तक पुरस्कार राशि प्राप्त नहीं हुई है, वे श्री अनिल कुमारजी जैन से (मो. 9314635755) सम्पर्क कर सकते हैं। *-सम्पादक*

अहंकार के वृक्ष पर
विनाश के फल लगते हैं।

ओसवाल मेट्रीमोनी बायोडाटा बैंक

जैन परिवारों के लिये एक शीर्ष वैवाहिक बायोडाटा बैंक

विवाहोत्सुक युवा/युवती
तथा पुनर्विवाह उत्सुक उम्मीदवारों की
एवं उनके परिवार की पूरी जानकारी
यहाँ उपलब्ध है।

ओसवाल मित्र मंडल मेट्रीमोनियल सेंटर

४७, रत्नज्योत इंडस्ट्रियल इस्टेट, पहला माला,
इरला गांवठण, इरला लेन, विलेपार्ले (प.), मुंबई - ४०० ०५६.

7506357533 ✆ : 9022786523, 022-26287187

ई-मेल : **oswalmatrimony@gmail.com**

सुबह १०.३० से सायं ४.०० बजे तक प्रतिदिन (बुधवार और बैंक छुट्टियों के दिन सेंटर बंद है)

गजेन्द्र निधि

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

Acharya Hasti Meghavi Chatravritti Yojna Has Successfully Completed 13 Years And Contributed Scholarship To Nearly 4500 Students. Many Of The Students Have Become Graduates, Doctors, Software-Professionals, Engineers And Businessmen. We Look Forward To Your Valuable Contribution Towards This Noble Cause And Continue In Our Endeavour To Provide Education And Spirituals Knowledge Towards A Better Future For The Students. Please Donate For This Noble Cause And Make This Scholarship Programme More Successful. We Have Launched Membership Plans For Donors.

We Have Launched Membership Plans For Donors

MEMBERSHIP PLAN (ONE YEAR)		
SILVER MEMBER RS.50000	GOLD MEMBER RS.75000	PLATINUM MEMBER RS.100000
DIAMOND MEMBER RS.200000		KOHINOOR MEMBER RS.500000

Note - Your Name Will Be Published In Jinwani Every Month For One Year.

The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)

The Bank A/c Details is as follows - Bank Name & Address - AXIS BANK Anna Salai, Chennai (TN)

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund IFSC Code - UTIB0000168

A/c No. 168010100120722 PAN No. - AAATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यों एवं अर्थ सहयोग एकत्रित करने करने वालों के नाम की सूची -

KOHINOOR MEMBER (RS.500000)

श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई।
श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्यूस्टन।
युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई।
श्रीमती इन्द्राबाई सूरजमल जी भण्डारी, चैन्नई (निमाज-राज.)।

DIAMOND MEMBER (RS.200000)

M/s Prithvi Exchange (India) Ltd., Chennai
श्रीमान् सुगनचन्द सा सरोजाबाई जी मुथा, डबल रोड, बैंगलोर

SILVER MEMBER (RS.50000)

श्रीमान् महावीर सोहनलाल जी बोथरा, जलगांव (भोपालगढ़)
श्रीमान् अमीरचन्द जी जैन (गंगापुरसिटी वाले), मानसरोवर, जयपुर
श्रीमान् प्रकाशचन्द शायरचन्द जी मुथा, औरंगाबाद (महा.)
श्रीमती लाडकंवर जी धर्मपत्नी श्रीमान् अमरचन्द जी सांड, पिजयनगर, राजस्थान
श्रीमान पारसमलजी सुशीलजी बोहरा, तिरूवन्नमलई (तमिलनाडु)
श्रीमान् सिद्धार्थजी भण्डारी, जागृति नगर, इन्दौर (मध्य प्रदेश)
श्रीमान् हेमन्त अरविन्द जी सिंघवी, चारनी रोड़, मुम्बई
श्रीमती लता विरेन्द्र जी सुराणा, मुम्बई (नागौर वाले)

GOLD MEMBER (RS. 75000)

श्रीमती पुष्पाबाई सुभाषचन्द जी बागरेचा, शिरपुर (महा.)
श्रीमान् सम्पतराज जी, सपनाजी, दिनेशजी राजेशजी सुराणा, जोधपुर-बैंगलोर
श्रीमान् संदीप मांगीलाल जी मुणोत, शिरपुर (महाराष्ट्र)
श्रीमान् सज्जनराज जी महेन्द्रजी राजेश जी बाफना, वडोदरा (गुजरात)

PLATINUM MEMBER (RS.100000)

श्रीमान् दूलीचन्द बाघमार एण्ड संस, चैन्नई।
श्रीमान् दलीचन्द जी सुरेश जी कवाड़, पून्नामल्लई।
श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई।
श्रीमान् अम्बालाल जी वसंतीवेवी जी कर्नावट, चैन्नई।
श्रीमान् सम्पतराज जी राजकवंर जी भंडारी, ट्रिपलीकेन-चैन्नई।
प्रो. डॉ. शैला विजयकुमार जी सांखला, चालीसगांव (महा.)।
श्रीमान् विजयकुमार जी मुकेश जी विनीत जी गोठी, मदनगंज-किशनगढ़।
श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, तमिलनाडु।
श्रीमान जी. गणपतराजजी, हेमन्तकुमारजी, उपेन्द्रकुमारजी, कोयम्बटूर (कोसाणा वाले)
श्रीमती कंचनजी बापना, श्री संजीव जी बापना, कलकत्ता (जोधपुर वाले)
श्रीमान पारसमलजी सुशीलजी बोहरा, तिरूवन्नमलई (तमिलनाडु)
श्रीमती शान्ता डॉ. उमरावसिंह जी लोढा, रावजी की हवेली, जोधपुर
स्व. श्रीमान् रिषभराज जी सज्जनकंवर जी भण्डारी, सरदारपुरा, जोधपुर

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें - M.Harish Kavad - No. 5, Car Street, Poonamallee, CHENNAI-56
छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें - मनीष जैन, चैन्नई (+91 95430 68382)

'छोटा सा चिंतन परिग्रह को हल्का करने का, लाभ बड़ा गुरु भाईयों को शिक्षा में सहयोग करने का'

जिनवाणी-प्रकाशन-योजना के लाभार्थी बनें

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा जिनवाणी पत्रिका के प्रकाशन हेतु एक योजना प्रारम्भ की गयी है। जिसके अन्तर्गत एक-एक लाख रुपये की राशि प्रदान करने वाले दो महानुभावों के द्वारा प्रेषित प्रकाश्य सामग्री एक-एक पृष्ठ में एक माह प्रकाशित की जाती है। इसके साथ ही वर्ष भर उनके नामों का उल्लेख भी जिनवाणी में किया जाता है। सन् 2020 की जुलाई से अनेक महानुभाव इस योजना में जुड़े हैं, उन सबके हम आभारी हैं।

अर्थसहयोगकर्ता जिनवाणी (JINWANI) के नाम से चैक प्रेषित कर सकते हैं अथवा जिनवाणी के निम्नाङ्कित बैंक खाते में राशि नेफ्ट/नेट बैंकिंग/चैक के माध्यम से सीधे जमा करा सकते हैं।

बैंक खाता नाम-JINWANI, बैंक-State Bank of India, बैंक खाता संख्या-51026632986, बैंक खाता-SAVING Account, आई.एफ.एस. कोड-SBIN0031843, ब्रॉच-Bapu Bazar, Jaipur

राशि जमा करने के पश्चात् राशि की स्लिप एवं जमाकर्ता का पेन नं., मण्डल कार्यालय को प्रेषित करने की कृपा करें, जिससे आपकी सेवा में रसीद प्रेषित की जा सके। 'जिनवाणी' के खाते में जमा करायी गई राशि पर आपको आयकर विभाग की धारा 80G के अन्तर्गत छूट प्राप्त होगी, जिसका उल्लेख रसीद पर किया हुआ है।

वित्तीय वर्ष 2022-23 हेतु लाभार्थी

(1) न्यायाधिपति श्री प्रकाशजी टाटिया, जोधपुर।
(2) श्री कनकराजजी कुम्भट, जोधपुर।
(3) श्री पूनमचन्दजी जामड़ (किशनगढ़ वाले), जयपुर।
(4) श्री सुशीलजी बाफना, जलगाँव।
(5) श्री सोहनलालजी, गौतमचन्दजी हुण्डीवाल, चेन्नई।
(6) मैसर्स अमरप्रकाश फाउण्डेशन प्रा. लि., चेन्नई।
(7) श्री सुबाहु कुमारजी, मनोजजी, मनीषजी (सी.ए.) जैन, बजरिया-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
(8) श्री श्रीपाल मलजी-श्रीमती मधुजी, श्री चिरागजी-श्रीमती लक्ष्याजी सुराणा (नागौर वाले), चेन्नई
(9) श्री कनकराजजी, महेन्द्रजी, देवांशजी कुम्भट, जोधपुर-मुम्बई
(10) सी. आर. कोठारी मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि), जयपुर-वडोदरा-मुम्बई
(11) नाहर परिवार मुम्बई, भोपाल, इन्दौर, बरेली।
(12) सौ. प्रेमलताजी श्री सोहनलालजी, सौ. रंजनाजी श्री महावीरजी बोथरा, जलगाँव (महाराष्ट्र)
(13) श्रीमती लाड़श्रीजी, राजीवजी, संजीवजी, सन्दीपजी नाहर, सूरत (गुजरात)
(14) मैसर्स कल्पतरु ग्लोबल एलोय प्राइवेट लिमिटेड द्वारा : श्री जी. गणपतराजजी, हेमन्तजी, उपेन्द्र कुमारजी बाघमार, चेन्नई-कोयम्बटूर

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 9314625596

उदारमना लाभार्थियों की अनुमोदना एवं स्वेच्छा से नये जुड़ने वाले लाभार्थियों का हार्दिक स्वागत।

NAVKAR CITY JODHPUR

NORTH INDIA'S FINEST TOWNSHIP

navkar

G+2 APARTMENTS (with lift)

₹44 Lacs Onwards

LUXURIOUS VILLA

₹1.14 Crores Onwards

RENDERED IMAGE

RENDERED IMAGE

DAY VIEW AT PRESENT

ACTUAL IMAGE

LATEST CONSTRUCTION PICTURES

CASTING BRICKWORK

DEVELOPMENT IN FULL SWING

NAVKAR CITY BROCHURE

PANORAMIC SITE VIEW

www.navkarcity.com

sales@navkarcity.com

8504 000 222

Near DPS Circle,
Pal-Gangana Road

WWW.RERA.RAJASTHAN.GOV.IN/RERA REG NO. RAJ/P/2019/1048

Disclaimer: Visual representations shown are only informative and indicative of the envisaged developments subject to variation and modification made by the company as approved by the competent authorities

JVS PURITY

JVS Foods Pvt. Ltd.

Manufacturer of :

NUTRITION FOODS
BREAKFAST CEREALS
FORTIFIED RICE KERNELS
WHOLE & BLENDED SPICES
VITAMIN AND MINERAL PREMIXES

Special Foods for undernourished Children
Supplementary Nutrition Food for Mass Feeding Programmes

With Best Wishes :

JVS Foods Pvt. Ltd.

G-220, Sitapura Ind. Area,
Tonk Road, Jaipur-302022 (Raj.)
Tel.: 0141-2770294
Email-jvsfoods@yahoo.com
Website-www.jvsfoods.com
FSSAI LIC. No. 10012013000138

CERTIFIED ISO 22000 CERTIFIED

Food Safety System Certification 22000

KALPA-TARU®

WELCOME TO A HOME THAT DOESN'T FORCE YOU TO CHOOSE.
BUT, GIVES YOU EVERYTHING INSTEAD.

Life is all about choices. So, at the end of your long day, your home should give you everything, instead of making you choose. Kalpataru welcomes you to a home that simply gives you everything under the sun.

022 3064 3065

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT
IMMENSA
THANE (W)
EVERYTHING UNDER THE SUN

TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065

Site Address: Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | **Head Office**:101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | Tel: +91 22 3064 5000 | Fax: +91 22 3064 3131 | **Email**: sales@kalpataru.com | **Website**: www.kalpataru.com

In association with HDFC PROPERTY FUND

This property is secured with Axis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. *Conditions apply.

If undelivered, Please return to

Samyaggyan Pracharak Mandal
Above Shop No. 182,
Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)
Tel. : 0141-2575997

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - अशोक कुमार सेठ द्वारा डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन